रक्तरंजित राजनीति

नारायण चंद्र मंडल

रक्तरंजित राजनीति

लेखक

नारायण चंद्र मंडल

उत्कर्ष बुक्स इंडिया

रांची

रक्तरंजित राजनीति
नारायण चंद्र मंडल

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2024

मुद्रक : आई. डी. पब्लिशिंग

प्रकाशक :
उत्कर्ष बुक्स इंडिया
कोकर, रांची- 834001 (झारखंड)
मोबाईल नं. - 9771177585, 8210924546
ई-मेल : ubindia21@gmail.com

मूल्य : 300/-

ISBN : 978-81-958957-6-2

Raktranjit Rajniti by Narayan Chandra Mandal

विषय सूची

भूमिका **5**

अपनी बात **7**

1 अलग झारखंड राज्य के दूसरे चरण की लड़ाई 11

2. किसान-मजदूरों की ऐसी एकता कहीं नहीं दिखी 16

3. बिनोद बाबू के निधन के बाद झारखंडी एकता..... 18

4. वाम और कांग्रेस से शुरू से ही निकटता रही झामुमो की 22

5. ....और झामुमो बिनोद गुट का उदय 24

6. आनंद महतो ने बिनोद बाबू के लिए जीती हुई सीट छोड़ी 25

खंड एक : प्रमुख घटनाएं

7. टुंडी के आदिवासियों ने महाजन का सिर काटा 26

8. तोपचांची के घटक दारोगा को जिंदा या मुर्दा नहीं 27

9. गुरुजी ने होड़-दिकू को एक साथ करने के लिए 28

10. मनियाडीह में आदिवासियों से लुटे गये किसान के पोते ... 30

11. ...और इंदिरा गांधी की जगह एके राय-बिनोद बाबू ने 33

12. 26 जनवरी 1988 : गणतंत्र दिवस पर सिंदरी में 34

13. बरवाअड्डा : मेरी लाश पर झारखंड बनने की बात कहने 36

खंड दो

14. 18 सितंबर 1969 : मधुबन में रामदेव सिंह की हत्या 38

15. माफिया के खिलाफ लड़ कर राम बहादुर कुर्मी व 40

16. 2 अप्रैल 1973 : ईस्ट बसुरिया में थामी मंडल, ... 41

17. 15 नवंबर 1973 : सिजुआ में मजदूरों ने जान देकर 43

18. 11 मार्च 1974 : गोमो में साजिश कर सदानंद झा..... 44

19. 28 जनवरी 1978 : चासनाला गांव में घुस कर माफियाओं... 49

20. 30 सितंबर 1978 : निरसा के दिग्गज मुखिया 52
21. 1 नवंबर 1978 : जयतारा में पुलिस से लड़ते हुए 54
22. अलग राज्य समर्थक दुकानदार यदुनंदन वर्णवाल की हत्या 55
23. एक हिम्मत वाले नेता की माफियाओं ने कर दी हत्या 56
24. 15 मई 1994 : मवेशी चोरों ने कलीमुद्दीन अंसारी 58
25. 17 अगस्त 1994 : सरायढेला कांड : दिग्गज समाजसेवी.... 60
26. 14 अप्रैल 2000 : तेज-तर्रार विधायक गुरुदास चटर्जी..... 72

खंड : तीन

27. परमेश्वर मांझी : 1971 : अपनी जान देकर पुलिस 84
28. महाजनों ने रामेश्वर मुर्मू व धरवाई हांसदा को 85
29. 23 मार्च 1972 : पलमा फायरिंग : शिबू सोरेन के 87
30. राजपुरा कोलियरी कांड 1974 : कोयला माफियाओं 88
31. 23 मई 1975 : मुनीडीह हत्याकांड : महाजनों ने क्रूर ... 90
32. 28 नवंबर 1977 : क्रांतिदूत शक्तिनाथ महतो ने 93
33. 11 जून 1979 : गोधर हत्याकांड : विस्थापितों का ... 104
34. 18 जनवरी 1982 : सियालजोड़ी कांड : जमींदारों ने 108
35. बरमसिया गोलीकांड: 25 अप्रैल 1991: युवा सामाजिक... 111
36. पुलिस ने विधायक आनंद महतो पर चलायी गोली, ... 112
37. 7 जुलाई 1991 : प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के...... 114
38. खानूडीह हत्याकांड : 26 जून 1993 : शनिचर महतो..... 115
39. एक गुमनाम शहीद : कृष्णा प्रसाद महतो 116
40. 26 मई 1994 : गुरुजी के पोखरिया आश्रम के 119
41. 10 जून 1997 : बलिहारी में मजदूर-किसानों के नेता.... 120

भूमिका

वरिष्ठ पत्रकार और मेरे छोटे भाई नारायण चंद्र मंडल ने रक्त रंजित राजनीति नामक यह किताब लिखी है. नारायण झारखंडी विचारधारा को आगे ले जानेवाले, मजबूत करनेवाले पत्रकार रहे हैं. धनबाद, गिरिडीह आदि जिला में घटित लगभग हर महत्वपूर्ण घटना की उन्हें गहरी जानकारी रही है. अनुभवी हैं, जमीन से जुड़े हैं, झारखंड की माटी से गहरा लगाव है, झारखंड खास कर कोयलांचल की पत्रकारिता-राजनीति की गहरी समझ है. यह सब उनकी किताब में झलकता है.

धनबाद और इसके आसपास का इलाका झारखंड आंदोलन का केंद्र रहा है. बिनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन और एके राय ने इसी धनबाद में सत्तर के दशक में झारखंड मुक्ति मोरचा की स्थापना की थी, जिसने अलग झारखंड राज्य के आंदोलन में बहुत बड़ी भूमिका अदा की. झारखंड आंदोलन के पहले से यह क्षेत्र आंदोलन का केंद्र रहा है. शिबू सोरेन महाजनों के खिलाफ धनकटनी आंदोलन चलाते थे, बिनोद बाबू कुड़मी समाज को जागरूक करने का प्रयास करते थे और एके राय मजदूरों को हक दिलाने के लिए लड़ाई लड़ रहे थे. अपने हक के लिए लड़ने पर मजदूरो और माफिया के बीच संघर्ष का दौर भी चला. इन सभी आंदोलन में अनेक लोग शहीद हुए. ऐसे आंदोलनकारियों की शहादत

पर ही झारखंड राज्य बना. इसलिए पत्रकारिता में रहने के कारण नारायण का यह दायित्व बनता था कि इन शहीदों और आंदोलन के दौरान हुई घटनाओं को किताब के जरिये इतिहास में दर्ज करें. नारायण ने अपने दायित्व को बखूबी निभाया है. हालांकि झारखंड आंदोलन पर कई किताबें बाजार में हैं, लेकिन उनमें बड़ी-बड़ी घटनाओं का ही जिक्र है. स्थानीय स्तर पर अनेक लोगों ने संघर्ष किया, शहादत दी लेकिन जानकारी के अभाव में किताबों में उन सभी पर बहुत कम लिखा गया है. नारायण चंद्र मंडल की पुस्तक इन कमियों को दूर करती हैं. उनकी पुस्तक में कई ऐसे आंदोलनों और शहीदों के बारे में विस्तार से चर्चा है, जिनके बारे में पहले शायद ही कभी लिखा गया है.

नारायण का प्रयास सराहनीय है. नयी पीढ़ी को अपने जिले-राज्य का इतिहास भी जानना चाहिए ताकि उन्हें पता चल सके कि उनके पूर्वजों का झारखंड निर्माण में क्या योगदान रहा है. इससे न सिर्फ नयी पीढ़ी लाभान्वित होगी बल्कि शहीदों और संघर्ष करनेवाले गुमनाम नायकों को उचित सम्मान दिलाने में मदद मिलेगी, जिसके वे असली हकदार हैं. झारखंड खास कर कोयलांचल में राजनीति करनेवालों के लिए भी यह पुस्तक बहुत ही लाभदायक होगी ताकि उन्हें भी पता चल सके कि कितने संघर्ष के बाद झारखंड राज्य बना, कोयलांचल में मजदूरों को हक-सम्मान मिला और इसमें किन-किन नायकों का योगदान रहा. इस पुस्तक को लिखने के लिए नारायण ने बहुत ही श्रम किया है. एक-एक घटना के बारे में जानकारी हासिल करना, उन्हें लिपिबद्ध करना कठिन कार्य है लेकिन नारायण ने बहुत ही धैर्य के साथ यह काम किया, ईमानदारी के साथ किया. यह प्रमाणिक पुस्तक है. नारायण को इस पुस्तक की सफलता के लिए शुभकामनाएं.

अनुज कुमार सिन्हा

◆◆◆◆◆

अपनी बात

आपके हाथ में इस किताब के आने से ही आपके मन में यह विचार आयेगा कि जब झारखंड आंदोलन पर दर्जनों नहीं, सैकड़ों पुस्तकें लिखी गयी है तो इसकी अलग से क्या जरूरत थी. दरअसल कोयलांचल धनबाद, जहां से अलग झारखंड राज्य की शिथिल हुई मांग पुनर्जीवित हुई, इसी धरती पर झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन हुआ. एके राय जैसे महान नेता ने अपनी कर्मभूमि बनायी. बिनोद बिहारी महतो की जन्मभूमि रही. गोला का शिवराम मांझी कोयलांचल आकर दिशोम गुरु में न केवल परिणत हुए, बल्कि एक आदिवासी नेता से राजनेता के रूप में बदले, उस कोयलांचल पर केंद्रित कर कोई अलग से किताब नहीं है, इसलिए अलग राज्य के गठन के बाद नयी पीढ़ी को जानकारी देने के लिए इसे लिखने का प्रयास किया. अभी जो छात्र या नौजवान हैं, उन्हें लगता है कि अलग राज्य यूं ही मिल गया है.

धनबाद जिसे आप झारखंड का बिहार कह सकते हैं, यहां झारखंडी पहचान ही नष्ट होने के कगार पर है, लिहाजा इतिहास को नहीं जानने वाले युवा वर्ग को लगता है कि यहां के लोगों ने अलग राज्य मांगा और सीधे केंद्र सरकार ने दे दिया. जो लोग शहीद हुए उनके बारे में जानते होंगे कि

निजी झंझटों के कारण हत्या कर दी गयी होगी, लेकिन यह वास्तविकता से इतर है. सच तो यह है कि बदमाशों ने निजी कारणों से नहीं, बल्कि मजदूरों को एकजुट करने या फिर सूदखोर-महाजनों के खिलाफ लोगों को गोलबंद करने के लिए ही अगुआ साथियों की हत्या कर दी, ताकि आंदोलन ठहर जाए, रुक जाए और उनके द्वारा जारी अनवरत शोषण के खिलाफ कोई बोलने या लड़ने की हिमाकत न करे.

छात्र जीवन से ही अलग राज्य का न केवल समर्थक रहा, बल्कि सब कुछ त्याग कर संघर्षों में भी शामिल रहा. आंदोलनों के बारे में साथियों से न केवल योजना बनायी, बल्कि सशरीर भाग भी लिया. कई बार पुलिस की लाठियां खायी. परिवार की आर्थिक स्थिति खराब रहने के बाद भी अपने कैरियर के प्रति सचेत नहीं रहा. मौके आये, लेकिन गंवा दिये. जीवन का पहला उद्देश्य अलग राज्य के निर्माण को रखा. एक जुझारू कार्यकर्ता के रूप में पहचान बनी तो लगा कि सब कुछ मिल रहा है. कभी भी झामुमो और मासस को अलग नहीं समझा. शायद इसलिए गुरुजी का भी मैं प्रिय रहा और एके राय का भी चहेता. एके राय के कहने पर पत्रकारिता शुरू की. धनबाद रश्मि में बरवाअड्डा डेट लाइन से लिखना शुरू किया. किसी अखबार के लिए बरवाअड्डा डेट लाइन का यह श्रीगणेश था. इसी दौरान पिताजी के निधन ने मुझे पूरी तरह तोड़ दिया. इसी बीच कोयलांचल के चर्चित अखबार आवाज टूट कर चमकता आईना बना. फिर कॉमरेड राय के कहने पर ही आईना में नौकरी शुरू की. उसके बंद हो जाने पर बिहार ऑब्जर्बर में सेवारत रहते प्रभात खबर में लाया गया.

90 का दशक झारखंड आंदोलन के लिए न केवल उथल-पुथल का रहा, बल्कि कोयलांचल के कई झारखंड आंदोलनकारियों की हत्या की गयी. अखबार के दफ्तर में रात तीन-चार बजे तक रह कर अलग से कुछ काम करूं या कोई पुस्तक लिखूं, यह सोचना ही पागलपन लगता है, लेकिन बिना पागलपन के कुछ किया भी नहीं जा सकता. इसी बीच प्रभात खबर के वरिष्ठ संपादक श्री अनुज कुमार सिन्हा ने झारखंड आंदोलन पर एक वृहत व संग्रहनीय किताब लिखी. उससे मुझे प्रेरणा मिली कि इसी व्यस्तता के बीच ही कोयलांचल में हुई घटनाओं को केंद्रित कर अलग से उसे लिपिबद्ध किया जाए, ताकि नयी पीढ़ी को यह पता चले कि यूं ही झारखंड

राज्य नहीं बना है. जिन लोगों की आज हम जयंती और शहादत दिवस मना रहे हैं, उन्होंने कैसे विपरीत परिस्थियों में माफिया, निजी खान मालिक और सूदखोर-महाजनों के खिलाफ लड़ाइयां लड़ी. इसी बीच श्री अनुज कुमार सिन्हा की किताब झारखंड आंदोलन का दस्तावेज : शोषण, संघर्ष और शहादत और विनोद कुमार की किताब 'टुंडी' को पढ़ा तो मेरे संकल्प और दृढ़ होने लगे. पुस्तक रक्तरंजित राजनीत में वर्ष 2000 तक अलग राज्य के आंदोलनों में शहीद हुए लोगों की जीवनी प्रमुखता से उल्लेखित तो है ही. साथ ही कोयलांचल में घटित कुछ प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है, जो बाद में जाकर चर्चा का विषय बना.

झारखंड आंदोलन को पहले केवल आदिवासियों और कुड़मियों का ही आंदोलन समझा जाता था, बेशक संघर्ष और शहादत में भी उन्हीं दो समाज के लोगों की भागीदारी अधिक है. यह भी सच है कि दोनों समाज उपेक्षित भी थे. लेकिन यह बात भी सच है कि इन दोनों समाजों के अलावा अन्य जाति समाज के लोगों का भी झारखंड आंदोलन में प्रत्यक्ष योगदान रहा. अप्रत्यक्ष तो था ही. इसलिए इस पुस्तक को तीन भागों में बांटा गया है. पहले भाग में झारखंड आंदोलन में कोयलांचल का योगदान और धनबाद जिले की प्रमुख घटनाओं को शामिल किया गया है.दूसरे भाग में गैरकुड़मी व गैरआदिवासियों की उन विभूतियों के संघर्ष और शहादत की कहानी है, जिन्होंने लाल और हरा झंडा के नेतृत्व में अपनी जान की बाजी लगा दी.

माफिया, निजी खान मालिकों के गुंडों ने उनकी हत्या करवा दी और तीसरे खंड में कोयलांचल में आदिवासी-कुड़मी नेताओं के संघर्ष और शहादत की कहानी का उल्लेख है. इसके लिए एक दशक के अपने सामाजिक-राजनीतिक अनुभव को तो लिपिबद्ध किया ही, साथ ही शहीद परिवारों के सदस्यों और उनके सहयोगियों से भी बातचीत कर सामग्री जुटायी. साथ ही साथ ऊपर उल्लेखित श्री अनुज कुमार सिन्हा और विनोद कुमार की पुस्तकों का भी सहारा लिया. इसके अलावा अलग राज्य के संघर्ष में साथ रहे शंकर किशोर महतो (संस्थापक कार्यालय सचिव झाममो), हरि प्रसाद महतो (स्व शक्तिनाथ महतो के अनुज), पूर्व विधायक आनंद महतो, टुंडी विधायक मथुरा प्रसाद महतो, खेदन महतो (सरायढेला),

अंबुज मंडल (सिंदरी), गणेश प्रसाद चौरसिया (बरवाअड्डा), आगम राम (निरसा), पुनीत महतो (जीतपुर गोमो), दुर्गा चरण ओझा (चासनाला), जगत महतो, (तेलीपाड़ा), शिव प्रसाद महतो (बैजकारटांड़, तेतुलमारी), अंबिका महतो (मुनीडीह), राम लाल (बीसीकेयू नेता), हरि प्रसाद पप्पू (गोधर), झामुमो के पूर्व जिलाध्यक्ष व वरिष्ठ अधिवक्ता कंसारी मंडल, वरिष्ठ अधिवक्ता धनबाद बार एसोसिएशन के पूर्व महासचिव व पूर्व मुखिया विदेश कुमार दां (मनियाडीह), धानो सोरेन, राजेंद्र तिवारी (दोनों टुंडी), मासस के महासचिव हलधर महतो, झारखण्ड आंदोलनकारी बेनीलाल महतो (करमा, कसमार) और पत्रकार सह लेखक दीपक सवाल से उनके समय पर हुई घटनाओं और शहीदों के जीवन से जुड़ी पहलुओं की जानकारी ली. आशा करता हूं रक्तरंजित राजनीति नामक यह पुस्तक आपको जानकारी से भरी मिलेगी. इसके बाद भी त्रुटियों की काफी गुंजाइश है, इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं. यह पुस्तक झारखंड अलग राज्य के तमाम आंदोलनकारियों को समर्पित है.

◆◆◆◆◆

अलग झारखंड राज्य के दूसरे चरण की लड़ाई कोयलांचल से शुरू

20 जून 1963 को अलग झारखंड अलग प्रांत मांगने वालों के लिए आज भी काला दिन के रूप में याद किया जाता है. उस दिन रांची में सत्तासीन कांग्रेस पार्टी ने विशाल सभा कर चमत्कारिक व विद्वान आदिवासी नेता जयपाल सिंह मुंडा की अगुआई वाली झारखंड पार्टी का विलय कांग्रेस में कर दिया था. हालांकि झापा के सभी सदस्य यह नहीं चाहते थे, लेकिन बतौर अध्यक्ष जयपाल सिंह मुंडा के कांग्रेस में चले जाने के बाद अलग राज्य की मांग को झटका लगा. कांग्रेस ने षडयंत्र कर इस मांग को ठंडे बस्ते में डलवा दिया था. कांग्रेस को डर था कि जयपाल सिंह यदि क्षेत्रीय दल का प्रतिनिधित्व करते रहेंगे तो आदिवासी बहुल इलाके मे उनकी दाल नहीं गलेगी. दरअसल भारत के स्वतंत्र होने के बाद हुए बिहार विधानसभा के प्रथम चुनाव (1952) में झापा मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी थी. इसके 32 विधायक जीत कर सदन पहुंचे थे. झापा छोटनागपुर व संथाल परगना में विशेष कर आदिवासी इलाके में काफी लोकप्रिय थी. झापा ने एक पार्टी का रूप एक जनवरी 1950 को जमशेदुपर के करनडीह मैदान में लिया था, जिसके अध्यक्ष जयपाल सिंह मुंडा चुने गये थे. इससे पहले यह अखिल भारतीय आदिवासी महासभा के रूप में सामाजिक संगठन था. आदिवासी महासभा का गठन 1938 को हुआ था. इधर, झापा के कांग्रेस में विलय होने के बाद अगल राज्य की मांग शिथिल हो गयी, लेकिन झापा के ही सदस्य रहे बागुन सुंब्रई व एनइ होरो कांग्रेस में नहीं गये थे. उन्होंने झापा को जीवित रखने के लिए मांग को जीवित रखा, लेकिन आंदोलन को बल नहीं मिल रहा था. उसके बाद 1967 में अखिल भारतीय झारखंड पार्टी का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष बागुन सुंब्रई व महासचिव एनइ होरो बनाये गये. इसके बाद चुनाव आया तो दोनों नेता अलग हो गये. होरो की खूंटी इलाके में पकड़ थी तो सुंब्रई की कोल्हान में.

इधर, कोलकाता से एमटेक कर सिंदरी फर्टिलाइजर के पीएंडडी विभाग में बतौर इंजीनियर सेवा दे रहे एके राय को मजदूरों के पक्ष में बोलने

के लिए कंपनी ने निकाल बाहर कर दिया था, तो वह माकपा के टिकट से 1967 और 1971 में सिंदरी से विधायक बन चुके थे. बिनोद बिहारी महतो भी माकपा के सदस्य थे और उस पार्टी से चुनाव लड़ चुके थे. बिनोद बाबू कुड़मी समाज को जागरूक करने के लिए शिवाजी समाज के माध्यम से समाजसेवा में जुटे हुए थे. उस समाज में उस समय बहु-विवाह, पत्नी परित्याग की कुप्रथा चल पड़ी थी. दहेज प्रथा, अशिक्षा जैसी सामाजिक बुराइयों से कुड़मी समाज जूझ रहा था. आपूर्ति विभाग में बतौर किरानी नौकरी से परित्याग कर बिनोद बाबू एक अच्छे अधिवक्ता के रूप में पहचान बना चुके थे. कोयलांचल का इलाका औद्योगिक क्षेत्र होने के कारण सार्वजनिक संस्थानों के निर्माण और खदान खोलने के लिए रैयतों से कंपनियां जमीन औने-पौने दाम में ले रही थीं. बीसीसीएल, डीवीसी के अलावा बोकारो स्टील सिटी में जमीन अधिग्रहण का सिलसिला चल पड़ा था. बिनोद बाबू गरीब रैयतों के मुकदमे लड़े और उचित मुआवजा रैयतों को दिलाया. अपने प्रैक्टिस के बलबूते बिनोद बाबू ने धन भी काफी कमाया, लेकिन स्वभाव से मार्क्सवादी रहने के कारण उन्होंने उसे संचय न कर गांव-गांव में स्कूल-कॉलेज की स्थापना की, जिसकी संख्या दर्जनों में हैं.

दूसरी ओर कोयलांचल में माफिया राज कायम था. उस माफिया का

सहयोगी केवल बाहर के लोग ही नहीं थे, बल्कि गांव के जमींदार–सूदखोर और बुर्जुआ मानसिकता वाली प्रतिक्रियावादी ताकतें भी थी. इधर, बिनोद बाबू और एके राय का मिलन हो चुका था. बिनोद बाबू को कॉमरेड राय अग्रज मानते थे, जबकि बिनोद बाबू उन्हें एक तेज–तर्रार बुद्धिमान गरीबों का हितैषी व त्यागी युवक मानते थे. उधर एक राजनीतिक बयानबाजी के कारण कॉमरेड राय को माकपा ने पार्टी से बर्खास्त कर दिया, तो उनके कई साथियों ने भी पार्टी छोड़ दी, उनमें से एक बिनोद बाबू भी थे. बर्खास्त माकपा के साथियों को मिला कर एके राय ने पटना एलएलए फ्लैट में 22 अप्रैल 1972 को मार्क्सवादी समन्वय समिति का गठन किया. इससे पहले बिहार कोलियरी कामगार यूनियन (सीटू से संबद्ध) के माध्यम से कॉमरेड राय कोलियरी मजदूरों को शोषण के खिलाफ एकजुट कर रहे थे. बीसीकेयू पीड़ित मजदूरों का चहेता संगठन बन चुका था. व्यवस्था के खिलाफ हर संघर्ष में बीसीकेयू के सदस्य लाल झंडा लेकर चारों ओर लड़ रहे थे. दूसरी ओर, अपने पिता की हत्या से प्रतिशोध की भावना में जल रहे गोला इलाके में शिबू सोरेन आदिवासियों को एकजुट कर रहे थे. उन्होंने जैनामोड़ में आदिवासी सुधार समिति नामक संगठन बनाया था. वह आदिवासियों के बीच चमत्कारिक नेता के रूप में उभर चुके थे, लेकिन दिकू (गैर आदिवासी) उन्हें दुश्मन मानते थे. आदिवासी सुधार समिति बोकारो स्टील प्लांट द्वारा

झामुमो के एक स्थापना दिवस पर मंचासीन एके राय, शिबू सोरेन, हरि महतो, प्रह्लाद महतो व अन्य

ली गयी आदिवासियों की जमीन के मुआवजा के लिए संघर्ष कर रही थी.

आदिवासियों के घरों को मशीनों द्वारा टूटते देख कर क्रांतिकारी शिबू का मन उद्वेलित हो रहा था. शिबू सोरेन आदिवासियों को शराबखोरी व महाजनों के खिलाफ गोलबंद कर रहे थे. लिहाजा वह महाजनों की आंखों की किरकिरी बन चुके थे. उन्हीं महाजनों ने माराफारी में कंपनी से मिल कर शिबू सोरेन पर कई मुकदमे लदवा दिये थे. इसी बीच वन चास निवासी मोहन मांझी ने शिबू सोरेन को सलाह दी कि बिनोद बाबू से मिलना चाहिए, वह बड़े अधिवक्ता होने के साथ-साथ गरीबों के मददगार भी हैं. इसी बीच बिनोद बाबू का केस के सिलसिले में चास आना-जाना लगा रहता था. चास धनबाद जिले में रहने के बावजूद वहां अलग से सब-डिवीजनरी कोर्ट शुरू से था. मोहन मांझी के मार्फत शिबू सोरेन का बिनोद बाबू से मिलन हुआ. बिनोद बाबू शिबू सोरेन को धनबाद ले आये और हीरापुर स्थित अपने दफ्तर में रखने लगे. इधर, राजनीति के पक्के खिलाड़ी एके राय शिबू सोरेन के कम्युनिस्ट चरित्र को पहचान गये. तीनों की विचारधारा मिल गयी. तीनों ने मिल कर मंत्रणा की कि दक्षिण बिहार का पठारी क्षेत्र जो रत्नगर्भा है, यहां बहिरागत लोगों का साम्राज्य स्थापित हो रहा है. औद्योगिक इलाका होने के कारण पूरे देश के लोग यहां रोजगार के लिए आ रहे हैं, यहां तक तो ठीक है, लेकिन वही लोग यहां के आदिवासी-मूलवासियों को राजनीतिक-सामाजिक शोषण भी कर रहे हैं. मालिकों से मिल कर गुंडा पाल रहे हैं, फिर उन्हीं गुंडों के सहारे चुनाव जीत रहे हैं. जिनकी जमीन पर कल कारखाने लगे हैं, उनका अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है. भाषा-संस्कृति मिटती जा रही है. यहां के खनिज से मिले राजस्व से पूरे बिहार व देश का विकास हो रहा है और इस आदिवासी क्षेत्र को सत्ता-शासन द्वारा उपेक्षित रखा जा रहा है. गांव के सेठ-साहूकार और जमींदार का बहिरागत धुर्त लोग जाति-धर्म के नाम पर सहयोग ले रहे हैं. गांव के धनवान लोगों का सहारा पाने के कारण आदिवासी-दलित व अत्यंत गरीब बंधुआ मजदूर बन कर रह रहे हैं और यहां की खनिज संपदा से बाहर के लोग राज कर रहे हैं. विकास के नाम पर भी राशि का उचित बंटवारा नहीं मिल रहा है. औद्योगिक प्रतिष्ठानों के सामुदायिक विकास की राशि उत्तर बिहार में खर्ची जा रही है.

सरकारी कार्यालयों में भी यहां के लोगों की पूछ नहीं होती है. अशिक्षा

व अज्ञानता के कारण वे सामंती शोषण और पूंजीवादी अत्याचार के शिकार हो रहे हैं. बहिरागत लोगों ने इस इलाके को उपनिवेश बना कर रखे हैं, इसलिए इससे मुक्ति पाने के लिए एक सामूहिक संघर्ष की जरूरत है. इसी सिलसिले में बिनोद बाबू के आवास पर सिंदरी के विधायक एके राय, बिनोद बाबू और शिबू सोरेन की बैठक हुई. पार्टी गठन पर मंत्रणा हुई. नाम पर चर्चा हुई. उस समय बांग्लादेश अपनी आजादी की लड़ाई बांग्लादेश मुक्ति वाहिनी के बैनर तले लड़ रहा था, जबकि वियतनाम में कम्युनिस्ट नेता हो ची मिह्न के नेतृत्व में वहां के लोग वियतनाम मुक्ति मोर्चा (वियतनाम लिब्रेशन फ्रंट) के नेतृत्व में लड़ रहे थे. उसी से प्रेरित होकर झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया गया. कुछ लोग मानते हैं कि बांग्लादेश की मुक्ति वाहिनी के नाम के कारण मुक्ति मोर्चा नाम पड़ा, जबकि कुछ लोग मानते हैं कि वियतनाम के संगठन के कारण मुक्ति मोर्चा नाम पड़ा. झामुमो शब्द नामकरण को लेकर भी दो मत हैं.

कुछ लोग बताते हैं कि बिनोद बाबू के बड़े पुत्र राजकिशोर महतो ने झारखंड मुक्ति मोर्चा का नाम दिया था, जबकि कुछ लोग कहते हैं कि कॉमरेड एके राय ने इसका नामकरण किया था. हालांकि यह द्वंद्व कभी विवाद का कारण नहीं बना. तय हुआ कि लाल और हरा झंडा के नेतृत्व में शोषण मुक्ति की लड़ाई लड़ी जायेगी. चार फरवरी 1973 को गोल्फ ग्राउंड धनबाद में इसका पहला अधिवेशन हुआ, और उसी दिन को औपचारिक रूप से पार्टी की स्थापना की तिथि मानी गयी. उस अधिवेशन में बिनोद बिहारी महतो अध्यक्ष चुने गये, जबकि शिबू सोरेन महासचिव. झारखंड को जानने वाले विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकों के अनुसार बिनोद बाबू के शिवाजी समाज व शिबू सोरेन की आदिवासी सुधार समिति का उस दिन विलय होकर झामुमो बना. हालांकि कहीं कहीं शिबू सोरेन के सामाजिक संगठन को सोनोत संथाल समाज दर्शाया गया है, जबकि कुछ लोगों का कहना है कि सोनोत संथाल समाज की स्थापना शिबू सोरेन के उदय से पहले दामोदरपुर (धनबाद) में हो चुका था. वह संगठन विलय नहीं हुआ था, अभी भी वह आदिवासी समाज में सक्रिय है. गठन के दौरान तीनों नेताओं की पूरी-पूरी भागीदारी रही. आदिवासी-कुड़मियों के अलावा कोलियरी मजदूरों की भी सहभागिता रही, जिसका संगठन बीसीकेयू था.

◆◆◆◆◆

किसान-मजदूरों की ऐसी एकता कहीं नहीं दिखी

संघर्ष और निर्माण के सिद्धांत पर कोयलांचल की राजनीति में किसान और मजदूरों की जो एकजुटता कोयलांचल में दिखी, शायद पूरे बिहार में यह स्थिति कहीं नहीं थी. कोलियरियों या कल कारखानों में जब भी बड़ा आंदोलन हुआ, गांव के किसानों ने भी आकर शिरकत की. गांव के किसानों को मजदूरों के लाभ या हानि से कोई लेना-देना नहीं था, लेकिन बिनोद बाबू-एके राय के आह्वान के कारण किसान भी जुटते थे, परिणामस्वरूप श्रमिकों की मांग मानने के लिए प्रबंधन तैयार हो जाता था. प्रबंधन को यह भय सताता था कि यदि मजदूरों का शोषण जारी रखें तो किसानों के सहयोग से आंदोलन लंबा चलेगा, उससे अच्छा कमोबेश कर मांग मान ही ली जाए. ठीक उसी प्रकार जब-जब अलग झारखंड राज्य के लिए आर्थिक नाकेबंदी की घोषणा झामुमो की ओर से की जाती, लाल झंड़े के नेतृत्व में उस समय एकजुट हुए बहिरागत मजदूर भी नाकेबंदी को सफल बनाने में सहयोग करते. उनके सहयोग के बगैर कोलियरियों व औद्योगिक क्षेत्रों में आर्थिक नाकेबंदी को सफल करना गांव के लोगों के लिए परेशानी भरा काम था. कोलियरियों का एक छटांक कोयला भी बाहर जाने नहीं दिया जाता और मजदूर कोयला उत्पादन में खदान के अंदर जाते ही नहीं. ये मजदूर वैसे लोग भी रहे, जिनका अलग राज्य से कोई वास्ता नहीं था, वे उत्तर प्रदेश व उत्तर बिहार के थे.

लेकिन संगठन के फैसले के कारण वे बराबर मदद करते रहे. इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा. पटना व दिल्ली की कुर्सी में बैठा सत्ता-शासन अलग राज्य की मांग पर एक बार सोचने के लिए मजबूर हो जाता था. भले ही आंदोलनों के दौरान नेताओं में झंडा विवाद रहा, लेकिन जमीनी स्तर पर

न किसान और न ही मजदूर दोनों को अलग समझते, क्योंकि अन्याय के खिलाफ संघर्ष में दोनों एक दूसरे के पूरक रहे. इतना ही नहीं, जिला या प्रखंड स्तर पर गांव के लोगों की साधारण मांगों को लेकर हो रहे आंदोलनों में भी कारखाना या कोलियरी के मजदूरों का योगदान रहा. वे भी आते और मजदूरों के सुर में सुर मिला कर शासन-प्रशासन के खिलाफ संघर्ष करते, जिसके कारण अधिकारियों को भय होता और उनकी मांग मानने के लिए बाध्य होते. यह इसलिए हो पा रहा था कि दिशोम गुरु के कोयलांचल छोड़ कर संताल को मुख्य कार्य क्षेत्र बना लिये जाने के बाद आदिवासी-कुड़मी के अलावा दलितों में एकतरफा पकड़ बिनोद बाबू की थी, जबकि क़ॉमरेड राय गांव के प्रिय तो हो ही गये थे, श्रमिकों में भी वह सर्वे-सर्वा बन गये थे. भले ही यूनियन बीसीकेयू अलग राज्य की प्रखर विरोधी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएम) की यूनियन सीटू से संबद्ध थी, लेकिन कोयलांचल में उसकी एक न चली. सीटू की पूरी यूनियन अलग राज्य के हुए आंदोलनों में शरीक होती रही. यहां माकपा व सीटू के दिग्गज नेता एसके बक्शी, जो बीसीकेयू के महासचिव रहे, वह भी सशरीर आंदोलनों में मौजूद होते रहे.

यह सब हो पा रहा था जनाधार वाले नेता बिनोद बाबू व एके राय के कारण. कॉमरेड राय बीसीकेयू के अध्यक्ष व बिनोद बाबू और शिबू सोरेन उपाध्यक्ष हुआ करते थे. इसी किसान-मजदूर एकता के कारण एके राय धनबाद से चुनाव भी जीतते रहे, जबकि गिरिडीह से बिनोद बाबू सांसद भले ही एक बार बने, लेकिन उनके संसदीय क्षेत्र के मजदूर और किसानों के सहयोग से मुख्य संघर्ष में रहे. किसान-मजदूरों के इस मजबूत गठबंधन के कारण ही कोयलांचल (झरिया-निरसा-बाघमारा,बेरमो-गिरिडीह) में स्थापित माफियाई आतंक में कमी आयी और धौड़ों के शोषित मजदूर भी बोलने की स्थिति में न केवल आये, बल्कि एकजुट होकर खिलाफ करने की भी हिम्मत जुटाने लगे. उसी तरह गांवों के उत्पीड़ित लोगों के भी मुंह खुलने लगे, जिनके सामने सिर उठाने की हिम्मत नहीं थी, उनके सामने भी नजर से नजर मिलाकर बात करने लगे. यह भी सच है कि इसी दौरान सिर उठा कर बोलने वाले सैकड़ों शख्सों के सिर धड़ से अलग कर दिये गये. कोयलांचल रक्तरंजित होता रहा और इसको लेकर राजनीति भी होती रही. लेकिन, शोषण मुक्ति के इस आंदोलन में जमीन पर गिरे मेहनतश अवाम के लिए लड़ने वालों के खून ने ही अलग झारखंड राज्य का रास्ता प्रशस्त किया.

◆◆◆◆◆

बिनोद बाबू के निधन के बाद झारखंडी एकता में आयी कमी

1991 के आम चुनाव में गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र से बिनोद बाबू चुनाव जीत गये. यह चुनाव झामुमो के लिए ऐतिहासिक साबित हुआ. न केवल शिबू सोरेन ने दुमका सीट से जीत हासिल की, बल्कि गोड्डा से सूरज मंडल, राजमहल से साइमन मरांडी, जमशेदपुर से शैलेंद्र महतो और चाईबासा से कृष्णा मार्डी की भी जीत हुई. लेकिन धनबाद के जांबाज एसपी रणधीर प्रसाद वर्मा के आतंकवादियों के हाथों शहीद होने (तीन जनवरी 1991) के उपरांत भाजपा ने धनबाद से उनकी विधवा प्रोफेसर रीता वर्मा को टिकट दे दिया तो प्रचंड सहानुभूति के कारण धनबाद से एके राय चुनाव हार गये. इससे पहले जबरदस्त राम लहर के बाद भी 1989 में कॉमरेड राय धनबाद से चुनाव जीत गये थे. उनका चुनाव चिह्न तीर-धनुष था. उन्होंने भाजपा के समरेश सिंह को 13 हजार पांच सौ से अधिक मतों से पराजित किया था.

इसी बीच झारखंडियों के लिए मनहूस दिन आया 18 दिसंबर 1991. संसद सत्र में भाग लेने के दौरान बिनोद बाबू का दिल्ली में निधन हो गया. परिणामस्वरूप गिरिडीह में 1992 में उपचुनाव हुआ. बिनोद बाबू के ज्येष्ठ पुत्र रांची हाइकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता राजकिशोर महतो झामुमो के उम्मीद्वार बने. भाजपा ने तब समरेश सिंह को गिरिडीह से उतारा, लेकिन झारखंडी एकता के आगे भाजपा हार गयी और राजकिशोर महतो सांसद बन गये. यहां यह उल्लेखनीय जरूरी है कि समरेश सिंह खुद

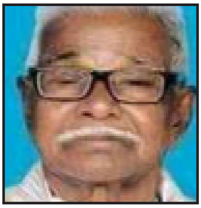

झारखंडी रहे. चंदनकियारी उनका जन्मस्थान रहा. लेकिन राजनीतिक तौर पर वह अलग राज्य के विरोधी मोर्चा के साथ रहे, इसलिए गांव के गरीब वर्गों और अलग राज्य चाहने वाले समाज ने उन्हें अपना पहला नेता नहीं माना. जिसके कारण वह दिग्गज रहने के बाद भी सांसद नहीं बन पाये. यद्यपि एके राय और बिनोद बाबू का विश्वासी साथी रहने के कारण हारू रजवार चन्दनकियारी में कुड़मी समाज का विश्वास जीतने में कामयाब रहे, जिसके कारण वह चन्दनकियारी से विधायक भी बनते रहे. यह अलग बात है कि भाजपा में अलग राज्य के समर्थन का प्रस्ताव समरेश सिंह ने ही वनांचल के नाम पर दिया था, जिसे पार्टी ने स्वीकार किया था. बिनोद बाबू के निधन के बाद लगा कि दो भागों में बंटा झामुमो एक हो जायेगा. लेकिन राष्ट्रपति चुनाव में फिर मतांतर सामने आया.

राजकिशोर बाबू ने झामुमो मार्डी गुट का गठन किया. कृष्णा मार्डी अध्यक्ष बनाये गये, जबकि वह खुद महासचिव रहे. कोयलांचल के लिए यहां तक तो ठीक था, क्योंकि झामुमो (बिनोद) के भरोसे ही यहां संघर्ष तेज होता रहा और लोग जुटते गये. लेकिन झामुमो (बी) की तरह मासस के साथ झामुमो मार्डी का संबंध नहीं रहा. फलस्वरूप कोयलांचल में झारखंडी एकता में कमी होती रही. बिनोद बाबू के निधन के बाद आजसू बिनोद बाबू के आधार वोट कुड़मी समाज में सेंध मारने लगी. मजबूत भी होने लगी. धनबाद सीट से एके राय को मिलने वाला परंपरागत कुड़मी वोट बिनोद बाबू के जीवित रहने के समय जिस प्रतिशत से मिलता, वह नहीं मिलने लगा. उनके मतों में कमी आने लगी. मध्यम वर्ग के जो कुड़मी नेता कॉमरेड राय को गुरु मानते, वह भी बगावती तेवर दिखाने लगे. स्थिति ऐसी की कोई एक कुड़मी नेता ऐसा नहीं रहे, जिनकी बात पर मतों का ध्रुवीकरण हो. इतना ही नहीं, शिवा महतो जैसे नेता भी डुमरी से आकर एके राय के खिलाफ धनबाद से नामांकन कर दिया.

झारखंडी मतों का विकेंद्रीकरण होने लगा. फलस्वरूप मजदूर बहुल इस क्षेत्र में उस समय मालिकों की पार्टी कही जाने वाली भाजपा का कमल खिलता रहा. सवाल केवल कमल खिलने तक का ही नहीं रहा, झारखंडी भावना में भी कमी आने लगी. परिणाम रहा कि फिर से माफियाई ताकत कोलियरियों से लेकर गांवों तक में सिर उठाने लगी. हालांकि बिनोद बाबू के निधनोपरांत राजकिशोर महतो कुड़मी के सबसे बड़े नेता के रूप में विरासत के कारण उभरे, लेकिन 1996 में झामुमो मार्डी से गिरिडीह लोकसभा चुनाव हारने के बाद नीतीश कुमार की समता पार्टी में उनके चले जाने से राजनीतिक रूप से मजबूत कुड़मी समाज के मत कई दलों में बिखरने लगे. समता पार्टी को बिहार की पार्टी यहां के लोग करार देते रहे, जिसके कारण राजकिशोर बाबू को उस दल में जाने से बहुत लाभ नहीं मिला. कोयलांचल में वह इसलिए भी सफल नहीं हो पाये, क्योंकि झारखंडियों को हर वक्त ललकराने वाले झरिया के विधायक सूर्यदेव सिंह के अनुज बच्चा सिंह भी उस समय समता पार्टी के नेता व विधायक हुआ करते थे और धनबाद में सूर्यदेव सिंह के भाई और बिनोद बाबू के बेटे की कथित दोस्ती लोगों को बेमेल लगी. एके राय के खिलाफ झामुमो मार्डी से खुद शिवा महतो (1996) ने चुनाव लड़ा. उधर, बिनोद बाबू के रहते झामुमो के गर्भ से जन्मे आजसू की दाल कोयलांचल में नहीं गलती थी, यद्यपि आजसू के सदस्य अलग राज्य के लिए लगातार संघर्ष करते रहते थे.

राजकिशोर बाबू के राजनीतिक रूप से कमजोर होने पर आजसू को यहां पैर फैलाने में काफी मदद मिली. लेकिन इसी दौरान राजकिशोर बाबू सीधे भाजपा में शामिल हो गये, सिंदरी से 2005 में विधानसभा का चुनाव लड़े और जीते भी. लेकिन झामुमो मार्डी के समय उनके साथ रहने वाले नेता भाजपा में नहीं गये. इससे आजसू और पैर पसारने लगी. बात राजकिशोर महतो के विधायक बनने तक सीमित नहीं रही, राजकिशोर महतो के माध्यम से भाजपा उस समाज में भी सेंधमारी करने में सफल हो गयी, जो कुड़मी समाज उसके लिए अब तक अभेद्य थी. इधर, मासस की हालत कुड़मी समाज के नेताओं के कई दलों में चले जाने से पतली होती रही, कॉमरेड राय लगातार चुनाव हारते रहे. झारखंडी एकता तार-तार होती रही.

यद्यपि सिंदरी के पूर्व विधायक आनंद महतो कॉमरेड राय के साथ रहे. जिसके कारण उनकी भी उस समाज के लोग आलोचना करते रहे. इसका राजनीतिक फायदा वे लोग उठाते रहे, जो कल तक अलग राज्य के विरोधी थे या फिर जिनका अलग झारखंड राज्य में कोई योगदान नहीं रहा. इधर, कोयलांचल में भी सुदेश महतो कुड़मी समाज में नंबर वन का नेता बने, जबकि राजकिशोर बाबू की राजनीतिक पूंजी रहने के बाद भी उस समाज में सुदेश महतो से वह कमतर साबित होने लगे. लेकिन भाजपा राजकिशोर महतो को खोना नहीं चाहती थी, लेकिन 2009 में सिंदरी से वह झाविमो के फूलचंद मंडल से चुनाव हार गये, जिसके कारण उनकी निष्क्रियता बढ़ी. फिर वह आजसू में शामिल होकर टुंडी से 2014 में भाजपा से गठबंधन के कारण चुनाव जीत गये. इस तरह से 1991 के बाद कोयलांचल में संघर्षशील जाति कुड़मी के मतों का विकेंद्रीकरण होता रहा, जो अब भी जारी है. हालांकि झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति के गठन के बाद पुन: एक बार झारखंडी भावना का विकास हुआ है. इसके सुप्रीमो जयराम महतो को सुनने लोगों का हुजूम उमड़ रहा है. हाल के दिनों में कुड़मी समाज में उनकी लोकप्रियता का रथ आगे बढ़ता जा रहा है, लेकिन गठबंधन के इस दौर में अकेले चल कर संसदीय राजनीति में जेबीकेएसएस कहां तक सफल हो पाती है. यह आगे की बात है.

◆◆◆◆◆

वाम और कांग्रेस से शुरू से ही निकटता रही झामुमो की

झामुमो गठन के बाद 1977 में टुंडी विधानसभा क्षेत्र से शिबू सोरेन चुनाव लड़े. लेकिन जनसंघ के सत्यानारायण दुदानी के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा. बताया जाता है कि झामुमो गठन के बाद ही विचारधारा को लेकर बिनोद बाबू और शिबू सोरेन में वैचारिक मतभेद होने लगा था. गुरुजी इंदिरा गांधी के 20 सूत्री कार्यक्रम का समर्थन कर रहे थे, जिसका बिनोद बाबू कट्टर विरोधी थे. इसलिए 77 के चुनाव में बिनोद बाबू ने टुंडी से शक्तिनाथ महतो को उम्मीदवार बना दिया. जिसके कारण मतों का विकेंद्रीकरण हुआ और गुरुजी हार गये. उसके बाद गुरुजी ने संथाल परगना की ओर रुख किया. 80 के लोकसभा चुनाव में गुरुजी दुमका से न केवल सांसद बने, बल्कि झामुमो भी बड़ी ताकत के रूप में उभरा. बिनोद बाबू समेत 11 विधायक झामुमो के जीते, और मासस के तीन विधायक. इस जीत के बाद भी आंतरिक रूप से झामुमो अध्यक्ष बिनोद बाबू और महासचिव शिबू सोरेन के बीच विचारधाराओं को लेकर टकराहट होती रही. बिनोद बाबू का झुकाव वाम की ओर शुरू से था तो गुरुजी का लगाव कांग्रेस के साथ रहा. लेकिन, अलग राज्य की मांग व शोषण के खिलाफ

सूरज मंडल व शैलेन्द्र महतो के साथ दिशोम गुरु

बलियापुर की एक सभा में कम्युनिस्ट नेता एके राय व एसके बक्शी के साथ बिनोद बाबू

संघर्ष में दोनों के विचार एक थे. कोयलांचल में माफियाओं के खिलाफ संघर्ष में दोनों एके राय के सहयोगी रहे. इसी बीच 1983 में राज्यसभा का चुनाव आया तो फिर एक बार मत देने को लेकर बिनोद बाबू और शिबू सोरेन में वैचारिक मतभेद उभर कर आया. वामपंथी राजनीति से आये बिनोद बाबू चाहते थे कि उस समय राज्यसभा चुनाव में भाकपा के उम्मीदवार चतुरानन मिश्र को वोट दिया जाए, जबकि उस समय विधायक बन चुके सूरज मंडल के प्रभाव में आये गुरुजी कांग्रेस के पक्ष में मत देने के पक्षधर थे. रामगढ़ के विधायक अर्जुन राम महतो और संतालपरगना के एक विधायक छोड़ कर सभी झामुमो के विधायक गुरुजी के पक्ष में और बाकी विधायक बिनोद बाबू के पक्ष में रहे, जिन्होंने क्रमश: कांग्रेस और भाकपा के उम्मीदवार को वोट दिया. मासस के तीनों विधायक केएस चटर्जी, आनंद महतो व हारू रजवार ने भी भाकपा उम्मीदवार को ही वोट दिये. उसके बाद दोनों नेताओं के बीच खाई बढ़ती गयी. इसी बीच रामगढ़ में झामुमो का महाधिवेशन हुआ, जिसमें बिनोद बाबू को अध्यक्ष पद से हटाने का प्रस्ताव विधायक अर्जुन राम महतो ने दिया, जिसका समर्थन शैलेंद्र महतो ने किया. उसके बाद बिनोद बाबू महाधिवेशन से निकल कर धनबाद लौट आये. उसी अधिवेशन में जमशेदपुर के निर्मल महतो को झामुमो का अध्यक्ष बनाया गया. इस टूट के लिए बाद में लोगों ने सूरज मंडल को कारक माना था.

◆◆◆◆◆

....और झामुमो बिनोद गुट का उदय

रामगढ़ महाधिवेशन के अगले ही दिन बिनोद बाबू ने हीरापुर कार्यालय में विश्वसनीय समर्थकों की बैठक बुलायी. उसमें मुख्य रूप से जगत महतो, मथुरा प्रसाद महतो, हरि प्रसाद महतो आदि थे. बातें रखी गयी. कहा कि अलग से महाधिवेशन किया जाना चाहिए. इज्जत का सवाल है. कार्यकर्ताओं को समेटने की जिम्मेवारी तेलीपाड़ा के जगत महतो को दी गयी. एक सप्ताह बाद ही हीरापुर दुर्गामंदिर मैदान में अलग से अधिवेशन हुआ. विधायक शिवा महतो समेत 1800 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और बिनोद बाबू को अध्यक्ष बनाया गया. रांची के हेलेन कुजूर भी इसमें मौजूद थे. फिर 85 का विधानसभा चुनाव दोनों गुटों ने अलग होकर लड़ा. धनबाद के भी कार्यकर्ता बंट गये. बलदेव रजवार, कंसारी मंडल और सरकार मुर्मू समेत तमाम आदिवासी नेता गुरुजी के साथ रहे, जबकि मणींद्र नाथ मंडल और अधिकतर कुड़मी नेता बिनोद बाबू के साथ रहे. इस अधिवेशन को सफल बनाने में जगत महतो ने काफी मेहनत की थी, इसलिए वह बिनोद बाबू के काफी प्रिय भी रहे.

◆◆◆◆◆

आनंद महतो ने बिनोद बाबू के लिए जीती हुई सीट छोड़ी

कोयलांचल की राजनीति में जब चुनाव को लेकर त्याग की बात आती है तो सिंदरी से चार बार विधायक रहे स्वच्छ छवि के आनंद महतो की चर्चा जरूर होती है. 1980 में बिनोद बाबू टुंडी से विधायक बन चुके थे. लेकिन टुंडी गुरुजी की कर्मस्थली थी. इलाका आदिवासी बहुल है और तीर-धनुष चिह्न आदिवासियों की पहली पसंद है. कहीं न कहीं बिनोद बाबू को मन में यह भय सता रहा था कि पार्टी की टूट और इंदिरा गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति लहर के बाद टुंडी से पुनः भाग्य अजमाने में परेशानी न हो जाए. इसलिए वह एक प्रस्ताव लेकर एके राय के पास गये. प्रस्ताव था कि वह इस बार खुद सिंदरी से चुनाव लड़ना चाहते हैं. सिंदरी के सीटिंग विधायक आनंद महतो कहीं दूसरी सीट से लड़े. राय साहब पसोपेश में पड़ गये. कहा कि आनंद बाबू से इस पर बात करें, उन्हें कोई दिक्कत नहीं है. बिनोद बाबू ने आनंद महतो के समक्ष प्रस्ताव रखा, जिसे उन्होंने खुशी-खुशी न केवल स्वीकार कर लिया, बल्कि अन्य सीट पर भी दावा नहीं किया. बिनोद बाबू सीढ़ी छाप से सिंदरी से चुनाव लड़े और जीते भी. उधर बिनोद बाबू ने अपनी जीती हुई टुंडी की सीट मणींद्रनाथ मंडल को दे दी, जहां वह मामूली अंतर से हार गये.

बीबीएम कॉलेज बलियापुर के समारोह में एके राय, राजकिशोर महतो, आनंद महतो व प्रो. एस बंदोपाध्याय

खंड एक : प्रमुख घटनाएं

टुंडी के आदिवासियों ने महाजन का सिर काटा और कोर्ट ले आये

घटना 1972 की बतायी जा रही है. बिनोद बाबू बतौर वकील काफी प्रसिद्ध हो चुके थे. गरीब-दुखियों का केस नि:शुल्क लड़ना उनकी आदतों में शुमार था. महाजनी प्रथा के खिलाफ संघर्ष के कारण आदिवासियों-हरिजनों का वह विश्वास पात्र बन चुके थे. वह और गुरुजी जो कहते, आंख मूंद कर महाजनों से पीड़ित लोग विश्वास कर लेते. इसी बीच टुंडी के कतिपय आदिवासी गुरुजी के पास आये और कहा कि एक महाजन पूरे गांव को लड़वा रहा है. झूठा केस से सभी लोग परेशान हैं. गुरुजी ने सभी को बिनोद बाबू के पास इसलिए भेज दिया कि वह कानून के जानकार थे. आदिवासियों ने बिनोद बाबू के पास आकर पीड़ा सुनायी. बिनोद बाबू जितने गंभीर अधिवक्ता थे, उतने ही साधारण जीवन में मजाकिया भी थे. मजाक-मजाक में बिनोद बाबू ने आदिवासियों से कहा कि अरे यदि महाजन का सिर काट कर ला दोगे तो हम हाकिम के पास जाकर बोलेंगे कि हिसाब हो गया. फिर क्या था. अगले दिन आदिवासियों ने सताने वाले उस महाजन का सिर न केवल काटा, बल्कि बक्सा में भर कर बिनोद बाबू के पास ले आये. बिनोद बाबू ने पूछा क्या है, तो कहा कि बाबू आप ही ने तो कहा था कि सिर लाओ, ला दिये. बिनोद बाबू चौंक गये. फिर कटे सिर को कोर्ट ले जाकर बिनोद बाबू ने मजिस्ट्रेट से कहा कि आदिवासियों ने हिसाब कर दिया है महाजन का. यहां न्याय नहीं मिलने से परेशान लोगों ने अपना काम कर दिया. तुरंत गांव में पुलिस भेज कर मजिस्ट्रेट ने जांच करवायी. लेकिन जनदबाव ऐसा था कि आदिवासियों पर कुछ नहीं हुआ.

◆◆◆◆◆

तोपचांची के घटक दारोगा को जिंदा या मुर्दा नहीं खोज पाया प्रशासन

बात 1974 के नवंबर माह की है. धनकटनी आंदोलन चरम पर था. तोपचांची के तराई वाले क्षेत्र में महाजनों से जमीन वापस कर गरीब आदिवासियों ने धनरोपनी की थी. लेकिन, जब धनकटनी का समय आया तो सिंहडीह गांव का एक आदिवासी बिनोद बाबू के पास गया और बताया कि बाबू साव नामक महाजन धान काट लेगा. तोपचांची पुलिस उसे सहयोग कर रही है. बिनोद बाबू उस समय मीसा के तहत जेल से छूट कर लौटे थे. बिनोद बाबू गंभीर हुए और रणनीति पर चर्चा की. जीतपुर के पुनीत महतो से संपर्क कर वस्तुस्थिति से अवगत हुए. फिर कहा कि जाकर खेत में धान काटो, कौन जा रहा है, पता लगाओ. एक दिन जैसे ही आदिवासी धान काटने गये तो साव तो विरोध करने नहीं गया लेकिन तोपचांची थानेदार घटक खुद आदिवासियों को रोकने खेत चले गये. धान काट रहे लोगों को काफी डराया-धमकाया. क्रोधित होकर आदिवासियों ने दारोगा को न केवल अपने कब्जे में कर लिया, बल्कि ढोलकट्टा के जंगल की ओर ले गये. जब एक दिन बाद दारोगा नहीं लौटे तो पूरे जिले में काफी हंगामा हुआ. आंदोलन की स्थिति क्या थी, इसी से पता लगाया जा सकता है कि तत्कालीन एसपी खुद तोपचांची न आकर बिनोद बाबू के हीरापुर कार्यालय चले गये और उन्हें लेकर तोपचांची आये. घटक दारोगा को खोज निकालने में मदद की अपील की. बिनोद बाबू ने साफ कह दिया कि वह इसमें कुछ मदद नहीं कर सकते. वह घटना पूरे बिहार में सुर्खियों में रही. सिंदरी के तत्कालीन विधायक एके राय से सरकार ने मदद की अपील की. बताया जाता है कि कॉमरेड राय और बिनोद बाबू को उग्रवादियों का संरक्षक उसी घटना के बाद से कहा जाने लगा. पुलिस जांच करती रही. लेकिन महाजनों के सिपहसलार और गरीबों के क्रूर छवि वाले घटक दारोगा को प्रशासन जिंदा या मुर्दा खोज नहीं पाया. किसी गरीब पर केस भी नहीं हुआ. हालांकि बताया जाता है कि जिन लोगों ने दारोगा की हत्या की, उन लोगों ने बिनोद बाबू को सच से अवगत करा दिया था. ढोलकट्टा जंगल में छान मारने के बाद भी कुछ पता नहीं चल पाया.

◆◆◆◆◆

गुरुजी ने होड़-दिकू को एक साथ करने के लिए शिलगढ़ी जंगल में किया पिकनिक

बात 1975 की है. महाजनी प्रथा का विरोध और धनकटनी आंदोलन के कारण शिबू सोरेन आदिवासियों (होड़) के बीच जहां गुरुजी' बन चुके थे. दूसरी ओर तमाम गैरआदिवासी (दिकू) उन्हें घृणा करने लगे थे. होड़ और दिकू एक दूसरे को शंका की नजरों से देख रहे थे. उधर झामुमो का गठन भी हो चुका था.

गुरुजी को लगने लगा कि समाज में आदिवासियों और गैरआदिवासियों के बीच खाई बढ़ती जा रही है. ऐसे में फसल पर कब्जा तो हो जा रहा है, लेकिन राजनीतिक फसल काटने के लिए दिकू-होड़ को एक मंच पर लाना होगा और यहां हो रहे बहिरागत लोगों के शोषण से उन्हें अवगत कराना होगा. इसको लेकर उन्होंने एक वनभोज का आयोजन करने का फैसला किया, जिसका समर्थन उनके सहयोगियों ने किया. उस समय वन विभाग का मनियाडीह के शिलगढ़ी के पास एक गेस्ट हाउस था, जो पहाड़ की तराई में घनघोर जंगलों के बीच था. वहीं पर वनभोज का फैसला लिया

गया. उस वनभोज में होड़ और दिकू वर्ग के प्रमुख लोगों को बुलाया गया. सभी को एक साथ बैठाने की यह पहली घटना मानी जाती है. सभी के समक्ष आंदोलन को नयी धार देने की योजना बनायी गयी. गुरुजी ने लोगों से कहा कि झारखंड आंदोलन में समग्र समाज की जरूरत है, ऐसा नहीं होने से हमारी जो मूल लड़ाई है, वह आपसी संघर्ष में बंट जायेगी.

वनभोज में टुंडी के तत्कालीन थाना प्रभारी बी किचिंगिया भी शामिल थे, जिनकी शिबू सोरेन को आगे बढ़ाने में खास भूमिका थी. कई बकरे कटे और भात बना. गुरुजी के लिए सात्विक भोजन साग-भात के अलावा दाल बनायी गयी थी. बताया जाता है कि उस पिकनिक के बाद टुंडी में होड़ और दिकू में जो वैमनस्यता थी, वह धीरे-धीरे कम होती गयी. गुरुजी के साथ अन्य समाज के लोग भी जुड़ने लगे.

पिकनिक के सफल आयोजन में बसंत पाठक, झगरू पंडित, दीनदयाल सिंह, लाला सुराल, धानो सोरेन, कृपाल सिंह, श्यामलाल मुर्मू, छतीकलाल मरांडी, मुरलीधर दां, लगन बास्की, टीकाराम टुडू, राजेंद्र प्रसाद तिवारी, रामदेव सिंह आदि शामिल थे. इस ऐतिहासिक पिकनिक ने झारखंड का भूगोल बदलने में अहम भूमिका निभायी.

◆◆◆◆◆

मनियाडीह में आदिवासियों से लुटे गये किसान के पोते को गुरुजी ने दिल्ली में रख कर वकालती पढ़ायी और राज्यसभा का सदस्य भी बनाया

70 के दशक में धनकटनी आंदोलन ने जोर पकड़ लिया था. जगह-जगह आदिवासी समाज जमींदारों और हुक्मरानों के खिलाफ आंदोलित था. मनियाडीह में रघुनाथ दां का नाम बड़े किसानों के रूप में लिया जाता था. रघुनाथ दां की पहचान इलाके में एक संभ्रांत व्यक्ति के रूप में थी. उस क्षेत्र में होड़ और दिकू के बीच खाई बन गयी थी. उसी दौरान आदिवासियों के बीच एक चमत्कारिक व्यक्ति के रूप में शिबू सोरेन ने पहचान बना ली थी. आदिवासियों के बीच एक तरह से उन्हें भगवान का दर्जा प्राप्त हो चुका था. शिबू सोरेन गुरुजी' बन चुके थे. एक घटनाक्रम में आदिवासियों ने रघुनाथ दां के खेत-खलिहान का सारा अनाज लूट लिया था. उन्हें खेतों में धनरोपनी भी नहीं करने दी जाने लगी थी.

हजारों मन धान की खेती वाले किसान एक तरह से भूमिहीन हो चुका

राजनाथ सिंह, कमलनाथ, गुलाम नबी आजाद, शरद पवार व अन्य सांसदों के साथ संसद भवन जाते हुए संजीव कुमार

अपनी मां के साथ संजीव कुमार

था. उस परिवार को खेती छोड़ कर उस समय आजीविका का कोई साधन भी नहीं था. इसी बीच रघुनाथ दां एक बार गुरुजी द्वारा आयोजित आदिवासियों की बैठक में खुद चले गये तो आदिवासी चौंक गये. उन्होंने गुरुजी के सामने प्रस्ताव रखा कि आखिर उनका क्या दोष है कि इस तरह अनाज लूट लिया जा रहा है. उनके पास जो खेत हैं, उनमें एक भी खेत आदिवासियों से लिया हुआ नहीं है और न ही वह सूद का कारोबार करते हैं. इसलिए पूरा परिवार आपकी शरण में है, अब जीवित रह कर क्या होगा, जान ही ले लीजिए. उनकी बातों से गुरुजी काफी प्रभावित हुए.

गुरुजी को लगने लगा था कि अलग प्रांत की जो लड़ाई उनलोगों ने ठान रखी है, वह इस तरह की वैमनस्यता समाज के बीच बढ़ने से आगे नहीं बढ़ पायेगी. उसके बाद गुरुजी दुमका के सांसद बन गये. फिर रघुनाथ दां का हाल-चाल लेने के क्रम में गुरुजी को पता चला कि उनका पोता और गुणाधर दां का छोटा बेटा संजीव कुमार रांची से ग्रेजुएट कर लौटा है, तो उन्होंने रघुनाथ दां के सामने पोते संजीव कुमार को अपने साथ दिल्ली ले जाने का प्रस्ताव रखा, जिस पर रघुनाथ दां ने सहमति दे दी. उसके बाद

गुरुजी ने संजीव कुमार को लॉ की पढ़ाई दिल्ली अपने सांसद आवास में रख कर पूरी करवायी. यह वही संजीव कुमार हैं, जो बाद में सुप्रीम कोर्ट के बड़े वकील बने. बाद में आंदोलनों के दौरान गुरुजी पर हुए सारे मुकदमे वह लड़ने लगे. संजीव कुमार बतौर अधिवक्ता उस समय पूरे देश में चर्चित हुए जब गुरुजी के आप्त सचिव रहे शशि नाथ झा हत्याकांड, सांसद रिश्वत कांड, चिरुडीह नरसंहार कांड और कुड़को हत्याकांड को बखूबी लड़ा और सभी मुकदमों में गुरुजी को बाइज्जत बरी भी कराया. जब पूरे देश में बड़े नेताओं में कोई बरी नहीं हुए, उस समय गुरुजी को बरी कराई कर संजीव कुमार ने काफी नाम कमाया.

बताया जाता है कि गुरुजी या झामुमो से संजीव कुमार ने केसों की पैरवी के लिए कभी पैसा नहीं लिया. अविवाहित संजीव कुमार का जीवन भी सादगी से भरा रहा. इधर, अलग राज्य के बाद झामुमो की स्थिति मजबूत हुई. 2012 में राज्यसभा का चुनाव आया. बाहरी लोगों और पैसे वालों को राज्यसभा का सदस्य बनाने के लिए झामुमो बदनाम हो चुका था, लेकिन उस चुनाव में गुरुजी ने संजीव कुमार को टिकट देकर राज्यसभा का सदस्य (सांसद) बनाया. पार्टी का एक धड़ा इसका विरोध कर रहा था, लेकिन गुरुजी ने प्रायश्चित के तौर पर दरियादिली दिखायी. गुरुजी के उस फैसले की प्रबुद्ध लोगों ने काफी सराहना की, साथ ही इससे यह मिथक भी तोड़ने का प्रयास किया कि झामुमो अब केवल कुड़मी या आदिवासियों का नहीं, सभी लोगों का है.

◆◆◆◆◆

...और इंदिरा गांधी की जगह एके राय-बिनोद बाबू ने किया पुल का उद्‌घाटन

झरिया और चंदनकियारी की सीमा पर अवस्थित दामोदर नदी पर वृहत पुल निर्माण सांसद एके राय की अनुशंसा पर हो चुका था. जब वह पहली बार सांसद (1977 में) बने थे, उसी समय से इसको लेकर प्रयासरत थे. 1980 में वह दूसरी बार चुने जा चुके थे. नदी पर पुल भी बन गया था. उधर संजय गांधी के हवाई हादसे में निधन के बाद कांग्रेसियों ने उसका नाम संजय सेतु रखने का फैसला किया और तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के हाथों उद्घाटन की तैयारी भी चल रही थी. इंदिरा गांधी ने तिथि भी दे दी थी. बिहार सरकार इसको लेकर जोर-शोर से तैयारी में जुटी थी. लेकिन कोयलांचल में जनता का हीरो तो कॉमरेड राय और बिनोद बाबू ही थे. चंदनकियारी और भौंरा-चासनाला के साथियों ने तय किया कि पुल का उद्घाटन एके राय और बिनोद बाबू द्वारा कराया जायेगा. फिर सभी सहमत हुए.

चंदनकियारी के मानपुर सीतानाला से विशाल बैलगाड़ी जुलूस निकाला गया. हजारों किसान उसमें शामिल हुए. बैलगाड़ी पार कर कॉमरेड राय और बिनोद बाबू ने इसका उद्घाटन कर दिया. फिर पुल का नामकरण बिरसा पुल कर दोनों छोर पर बोर्ड लगा दिया गया. मजेदार बात यह है कि इंदिरा गांधी को जब यह जानकारी हुई तो उन्होंने अपना कार्यक्रम रद्द कर दिया. इस तरह से उस पुल का नामकरण बिरसा पुल पड़ा. उस बैलगाड़ी जुलूस में चंदनकियारी के तत्कालीन विधायक हारू रजवार, सिंदरी के विधायक आनंद महतो के अलावा अन्य नेताओं में उदय शेखर, निताय महतो, दुर्गा चरण ओझा, राम लाल, किशुन महथा, जोगी महतो, सीताराम महतो, सबुर गोराईं, दिलीप चटर्जी, अंबुज मंडल, बच्चन भारती, जुमराती मियां आदि थे. कहा जाता है कि कम से कम 10 हजार लोग उसमें शामिल हुए थे. वर्ष 1980 था.

◆◆◆◆◆

26 जनवरी 1988 : गणतंत्र दिवस पर सिंदरी में फहराया गया हरा झंडा

झारखंड अलग राज्य का आंदोलन शीर्ष पर था. ऑल असम स्टूडेंट यूनियन (आसू) की तर्ज पर झामुमो का छात्र संगठन ऑल झारखंड स्टूडेंट यूनियन का गठन निर्मल महतो के नेतृत्व में हो चुका था. झामुमो, मासस, आइपीएफ के अलावा आजसू भी अलग राज्य के लिए आंदोलनरत थी. आर्थिक नाकेबंदी का दौर चल रहा था. जगह-जगह तोड़फोड़, रेल रोको, पुल उड़ाओ जैसे आंदोलन भी हो रहे थे. परिणामस्वरूप पुलिस की कड़ी नजर रह रही थी. इसी दौरान डॉ राम दयाल मुंडा, बीपी केसरी जैसे विद्वान लोगों ने झारखंड समन्वय समिति (जेसीसी) का गठन सिंतबर 1987 को किया. बीपी केसरी इसके संयोजक थे. उसमें झारखंड अलग राज्य चाहने वाले 53 संगठनों को शामिल किया गया था, जिनमें झामुमो, आजसू के अलावा मासस व इंडियन पीपुल्स फ्रंट, (जो बाद में जाकर भाकपा माले बना) भी थे. तय हुआ था कि गणतंत्र दिवस के मौके पर 26 जनवरी 1988 को प्रस्तावित झारखंड राज्य के हर चौक चौराहे पर जेसीसी राष्ट्रीय झंडे के साथ झारखंड का प्रतीक हरा झंडा फहरायेगा. इस फैसले से सरकार की एजेंसियां सतर्क हो गयीं.

अंबुज मंडल, महालाल हांसदा, नुनूलाल टुडू, प्रदीप चंद्रा, सोहन सोरेन व इंसेट में आनंद महतो इनपर हुआ था राजद्रोह का केस

पूरे क्षेत्र में पुलिस बल तैनात कर दिया गया. बताया जाता है कि बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र ने सिंदरी के तत्कालीन विधायक बिनोद बिहारी महतो, गुरुजी शिबू सोरेन से वार्ता कर इस फैसले को वापस लेने का आग्रह किया, लेकिन इन लोगों ने मांग की कि आप राज्य के सदन में अलग राज्य का प्रस्ताव लाएं, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया. इसके बाद बिहार सरकार ने प्रस्तावित झारखंड इलाके में 26 जनवरी को अपनी पुलिस के अलावा अर्द्ध-सैनिक बलों को भी चौक चौराहों में भर दिया. चूकि मामला गणतंत्र दिवस से जुड़ा था, इसको लेकर किसी ने राष्ट्रीय झंडा ध्वजारोहण के दौरान हरा झंडा नहीं फहराया. लेकिन सिंदरी का सिनेमा हॉल चौक पूरे राज्य में पहला ऐसा स्थान रहा, जहां तिरंगे के साथ तीर-धनुष वाले हरा झंडा फहराया गया. नेतृत्व कर रहे थे तत्कालीन पूर्व विधायक आनंद महतो. यहां अधिकतर मासस से जुड़े साथी आनंद महतो के साथ रहे.

उन्होंने स्वयं झंडा फहरा कर पूरे देश में यह संदेश देने का प्रयास किया कि झारखंडियों का असली गणतंत्र अलग राज्य से ही है. पुलिस ने आकर आनंद महतो, अंबुज मंडल, सोहन सोरेन, अमरनाथ महतो, प्रदीप चंद्रा, दुखन महतो, महालाल हांसदा, नुनूलाल टुडू, भजोहरि गोराईं, सुकलाल मांझी, दुखन सोरेन आदि को गिरफ्तार कर लिया. इतना ही नहीं, राजद्रोह का केस किया. इन नेताओं ने राजद्रोह के उस केस को लड़ा. फिर अलग राज्य बनने के बाद 2008 में जब राज्य सरकार ने झारखंड आंदोलन के दौरान हुए मुकदमों के वापस लेने का फैसला किया तो इस केस को वापस लिया गया, और इस मुकदमे से जुड़े सभी आंदोलनकारियों को झारखंड आंदोलनकारी घोषित किया गया.

◆◆◆◆◆

बरवाअड्डा : मेरी लाश पर झारखंड बनने की बात कहने वाले सीएम लालू यादव पर हमला

उत्तर प्रदेश की एक महिला के साथ जीटी रोड बरवाअड्डा में दुर्व्यवहार से थानेदार के खिलाफ धरना-प्रदर्शन लगातार हो रहा था. पुलिस पर गुस्सा इस बात को लेकर था कि पीड़िता द्वारा गश्ती दल से मदद मांगने के बाद भी पुलिस ने मदद नहीं की थी. बरवाअड्डा निवासी तत्कालीन भाजपा नेता फूलचंद मंडल ने आंदोलन की शुरुआत की. उसके बाद सभी दल बरवाअडडा थानेदार के निलंबन की मांग को लेकर आंदोलन पर उतारु थे. लेकिन सीएम लालू के खास रहने के कारण थानेदार पर कार्रवाई नहीं हो रही थी. बरवाअड्डा पुराना मोड़ में झामुमो की सभा 19 अक्तूबर 1992 को हो रही थी. सैकड़ों लोग जुटे थे.

बड़े नेताओं में तोपचांची के टेकलाल महतो, मणींद्रनाथ मंडल, निरसा के अशोक मंडल, फणिभूषण मंडल, गोविंदपुर के हफीजुद्दीन अंसारी, गुल्लू अंसारी, संतलाल प्रमाणिक आदि मंचासीन थे. बरवाअड्डा क्षेत्र के तत्कालीन मुखिया वैद्यनाथ महतो, धैया के वार्ड आयुक्त कृष्णा मंडल, देवेन मंडल, तारापद मंडल आदि भी समर्थकों के साथ थे. नेताओं का भाषण चल रहा था. दिशोम गुरु शिबू सोरेन का इंतजार किया जा रहा था. उसी समय तोपचांची से सड़क मार्ग से मुख्यमंत्री लालू यादव का

काफिला पार हो रहा था. दरअसल लालू यादव उस समय कह रहे थे मेरी लाश पर झारखंड बनेगा. इससे अलग राज्य चाहने वाले लोग उनसे खास चिढ़े हुए थे. जैसे ही काफिला पार होने लगा, झामुमो समर्थकों ने मणींद्र नाथ मंडल के कहने पर काफिले पर पत्थर से हमला कर दिया. पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया. गोलियां भी चलायी. पुलिस की मार से तोपचांची मानटांड़ के टेकलाल महतो और काशीटांड़ बरवाअड्डा के सुलेमान अंसारी के पैर टूट गये. कई लोगों को गोली लगी. हालांकि किसी की जान गोली से नहीं गयी.

गुरुजी को भीतिया के पास हिरासत में ले लिया गया. इस घटना के बाद पूरे देश में अलग राज्य की मांग सुर्खियों में आ गयी. उस समय बीबीसी ने इस समाचार को प्रमुखता से प्रसारण किया था. देश-विदेश में इस घटना की चर्चा हुई और राजनीतिक दलों को अलग राज्य का समर्थन करने के लिए सोचने-विचारने पर बाध्य होना पड़ा. उसके बाद उस मामले में दर्जनों नेताओं पर मुकदमा दर्ज हुआ. कई को जेल जाना पड़ा. दो दिन पहले निरसा के तत्कालीन विधायक गुरुदास चटर्जी सभा कर चुके थे. झारखंड बनने के बाद राज्य सरकार ने आदोलनकारियों के केस वापस लिये. लेकिन इस केस को नहीं लिया गया. हालाकि फूलचंद मडंल जब विधायक बने तो उन्होंने सदन में सवाल उठा कर इस केस को भी वापस लेने की मांग की और जिन पर केस हुआ, उन्हें झारखंड आंदोलनकारी घोषित करने की मांग की, लेकिन सरकार ने इसे विशुद्ध क्राइम केस मान कर वापस नहीं लिया.

◆◆◆◆◆

खंड दो

18 सितंबर 1969 : मधुबन में रामदेव सिंह की हत्या

कोयलांचल में मजदूरों को संगठित कर इसे अंजाम तक पहुंचाने में केवल झारखंडी युवकों ने ही शहादत नहीं दी, बल्कि अन्याय के खिलाफ हुए आंदोलन में बहिरागत उन लोगों ने भी अपनी जान की कुर्बानी दी, जिन्हें आज भी झारखंडी जनमानस श्रद्धा से याद करते हैं. ऐसे ही शहीदों में एक थे रामदेव सिंह, जिनकी हत्या निजी कंपनी के गुंडों ने 18 सितंबर 1969 को मधुबन डीजी प्लांट के समीप कर दी थी, उस समय न झामुमो बना था और न गांवों में झारखंडी भावना ही विकसित हुई थी.

अलबत्ता कॉमरेड एके राय सिंदरी से माकपा के टिकट से दूसरी बार विधायक चुन लिये गये थे. रामदेव सिंह सीटू के सदस्य थे और मजदूरों के मसीहा के रूप में जाने जाते थे. माफिया व गुंडों के अत्याचारों के खिलाफ उनका तेवर एक विद्रोही का था. अच्छे संगठनकर्ता भी थे. मजदूर व किसानों को भयमुक्त करने के लिए नदखुरकी में सीपीआइएम के बंगाल के सांसद मो इस्माइल की सभा को सफल बनाने के लिए रात-दिन प्रचार-प्रसार में लगे हुए थे.

दो तीन दिन बाद कार्यक्रम होना था. कार्यक्रम में लोगों की संभावित एकजुटता से दुश्मन वर्ग आशंकित था कि उनकी माफियागीरी अब नहीं चलेगी. इस कारण 18 सितंबर 1969 को मधुबन परसबनिया में निजी कंपनी करमचंद्र थापड़ के पहलवानों ने जीप से सिर्फ रामदेव सिंह

को उतार कर टांगी व फरसा से दिनदहाड़े हत्या कर दी. रामदेव सिंह की शहादत से ही बीसीकेयू को बनने में बल मिला और स्थापना हुई.

बाहर के रहने के बाद भी झारखंड के किसान-मजदूरों के हक की लड़ाई लड़ी

रामदेव सिंह एके राय के नेतृत्व में माफिया व गुंडों के खिलाफ शोषित-पीड़तों को एकजुट कर रहे थे. खदानों के राष्ट्रीयकरण के लिए जोरदार आंदोलन किया था. इस कारण निजी कंपनी के संचालकों की आँखों की वह किरकिरी बने हुए थे. लेकिन उनकी हत्या के बाद आंदोलन तेज हो गया. मजदूर व किसान एक प्लेटफार्म पर आकर आंदोलन पर उतर आये. जिसके चलते बाघमारा कोयलांचल से माफिया व पहलवानों की फ़ौज ने वहां से भागने में ही अपनी भलाई समझी. बीसीकेयू अभी तक उन्हें याद करती है.

परसबनिया मधुबन में शहीद वेदी पर प्रतिवर्ष शहादत दिवस मनाया जाता है. बाहर के रहने के वावजूद यहां के ग्रामीण, मजदूर व किसानों के हक के लिए आंदोलन की अगुआई उन्होंने की थी. उनका पैतृक आवास बिहार के भोजपुर (आरा) जिले के इचारी गांव था. उनके पिता रामसंदेश सिंह व उनके भाई वासदेव सिंह व श्यामदेव सिंह मधुबन में ही रहते थे. रामदेव सिंह किसानी जीवन छोड़ अपने परिवार के साथ मधुबन में आ गये थे. शहीद रामदेव सिंह का इकलौता बेटा नागेंद्र सिंह आज नीमतल्ला (सोनारडीह) में किसी तरह अपने परिवार के साथ जीवन-यापन कर रहे हैं. नागेंद्र सिंह को दो लड़के व एक लड़की हैं. शहीद रामदेव सिंह की पत्नी का वर्ष 2003 में देहांत हो गया था.

◆◆◆◆◆

14 फरवरी 1972 : धर्माबांध गोलीकांड

माफिया के खिलाफ लड़ कर राम बहादुर कुर्मी व मंगल धोबी ने दी शहादत

यह बात बिल्कुल असत्य है कि कोयलांचल में झारखंड विरोधी माफिया शक्ति के खिलाफ केवल झारखंडियों ने लड़ाई लड़ी. उन सभी साथियों ने भी इस संघर्ष को आगे बढ़ाया और जान भी दी, जिन्होंने लाल झंडा का नेतृत्व स्वीकार किया था. कोलियरी इलाके में माफिया-मालिक गठजोड़ के खिलाफ जारी बीसीकेयू के संघर्ष में खुद को समाहित किया था. ऐसे ही हिम्मत वाले साथियों में नाम है राम बहादुर कुर्मी व मंगल धोबी का. राम बहादुर मोतिहारी (बिहार) के बलुआ बिरता गांव में 1954 में जन्म लिये थे. पिता का नाम महादेव कुर्मी था. वह काम के सिलसिले में धर्माबांध आये व निजी कोयला कंपनी में काम करने लगे. बाद में बीसीकेयू की सदस्यता ग्रहण की.

1971 में कोल कंपनियों के राष्ट्रीयकरण के बाद वह बीसीसीएल का कर्मी बन गया. बीसीकेयू मजदूर शोषण व माफिया शक्ति के खिलाफ संघर्ष कर गरीबों की मसीहा यूनियन के रूप में पहचान बना चुकी थी, इसलिए इसके सदस्यों व नेताओं से प्रबंधपरस्त शक्तियां चिढ़ती थी. जान की दुश्मन बनी हुई थी. इसी सिलसिले में एक सामूहिक भोज में राम बहादुर को कंपनी के गुडों ने खाने के लिए बुलाया तो उन्होंने विरोध किया. कहा कि जब कंपनी का सरकारीकरण हो गया है तो फिर आपके लंगर में हमलोग क्यों खाएं. इस बात से गुंडे काफी दुखी हुए. 14 फरवरी 1972 को अपने क्वार्टर के बाहर वह दातुन कर रहे थे, साथ में चंपारण के रहने वाले मंगल धोबी भी थे. कंपनी के गुंडों ने आकर अंधाधुंध फायरिंग कर दी, जिससे कुल 19 मजदूरों को गोलियां लगी. लेकिन मंगल व रामबहादुर ने दम तोड़ दिया. इस घटना के बाद पूरे धर्माबांध क्षेत्र में हंगामा हुआ. कई दिनों तक एके राय के नेतृत्व में आंदोलन होता रहा. उसके बाद मंगल धोबी की पत्नी को बीसीसीएल में नौकरी मिली. बहुत संघर्ष के बाद राम बहादुर कुर्मी के छोटे भाई लाल बहादुर को भी नौकरी मिली.

◆◆◆◆◆

2 अप्रैल 1973 : ईस्ट बसुरिया में थामी मंडल, जगदीश मंडल व कादिर मियां की शहादत

एके राय सिंदरी से विधायक बन चुके थे. एक ईमानदार के साथ-साथ संघर्षशील नेता के रूप में उनकी पहचान पूरे राज्य में हो चुकी थी. निजी मालिकों के हाथों से कोलियरियों का राष्ट्रीयकरण भले ही हो चुका था, लेकिन प्रबंधन परस्त ट्रेड यूनियन कोलियरियों में यूनियन कम, ट्रेड अधिक करती थी. झकझक खादी पहने नेता जब कोलियरियों में आते तो प्रबंधन के लोग आवभगत करते. मजदूर समझ ही नहीं पाते कि लंबे-लंबे, गोरे-गोरे, लठैतों की सुरक्षा में चलने वाले नेता श्रमिक के हैं या फिर प्रबंधन के. ऐसे ही नेताओं का बीसीसीएल के अधिकारियों के साथ मिल कर सूदखोरी का धंधा चलता था. उनकी गाढ़ी कमाई उनकी जेब में जाती, अलबत्ता जिनके श्रम से कोयला का उत्पादन होता, पूरे देश को ऊर्जा मिलती, वे ऊर्जा विहीन थे. लेकिन उनके समानांतर बिहार कोलियरी कामगार यूनियन का गठन हो चुका था. नेतृत्व ईमानदार और किसी प्रकार के लाभ से दूर रहने के कारण इसने मजदूरों का विश्वास जीत लिया था. हर धौड़ा व खदान में सूदखोरों के खिलाफ मजदूर एकजुट होने लगे थे. भले ही प्रबंधन को भी यह पसंद नहीं था, लेकिन मजदूरों की एकजुटता लाल झंडा के नेतृत्व में मधुबन, ईस्ट बसुरिया, लोदना, पूर्वी झरिया, पश्चिमी झरिया के साथ इसीएल में सांगठनिक विकास हो चुका था. इसी दौरान कुसुंडा एरिया की ईस्ट बसुरिया कोलियरी में मजदूरों को अन्याय के खिलाफ संगठित कर रहे थे जगदीश मंडल और थामी मंडल. दोनों ही गिरिडीह जिला के बिरनी थाना क्षेत्र के पांडरमनिया गांव के रहने वाले थे.

इसी शहीद वेदी में हर साल दी जाती है श्रद्धांजलि

राजधनवार के कादिर मियां भी मुखर थे. दरअसल ईस्ट बसुरिया में सिंह बंधुओं का जबरदस्त दबदबा था. किसी की एक नहीं चलती थी. इधर लाल झंडा के साथ मजदूरों के जुड़ने से उनकी अवैध कमाई पर चोट पहुंचने लगी थी. ठेकेदार बाहरी मजदूरों के यहां लाकर प्रबंधन से काम कराते और पैसा खुद उठाते थे. दो अप्रैल की सुबह जैसे ही खदान से कोयला काट कर सभी ऊपर उठ रहे थे. गुंडों ने अंधाधुंध गोलियां चला दी. मौके पर ही जगदीश मंडल, थामी मंडल और कादिर मियां की मौत हो गयी. तीनों ही जेनरल मजदूर थे. उसके बाद ईस्ट बसुरिया मैदान में एके राय और बिनोद बिहारी महतो ने विशाल सभा की. हक की बात कहने के कारण जिस जगह तीनों श्रमिक शहीद हुए, उस मैदान का नामकरण शहीद मैदान किया गया है. वहां हर साल बीसीकेयू के नेतृत्व में श्रद्धांजलि सभा की जाती है.

माफिया चाह रहे थे अपने मजदूरों की हो नियुक्ति

दरअसल 16 अक्टूबर 1971 को ही कोलियरियों का राष्ट्रीयकरण हो गया था. ईस्ट बसुरिया कोलियरी चनचनी कंपनी की हुआ करती थी. रामचंद्र सिंह वहां ठेकेदार थे. राष्ट्रीयकरण के बाद ठेकेदार चाहते थे कि अधिक से अधिक उन लोगों की नियुक्ति हो, जिनकी सूची वह देंगे. भले ही वैसे मजदूर यहां कार्यरत रहे हों या नहीं. वह अपने लठैतों की नियुक्ति चाहते थे. एक अप्रैल को रविवार रहने के कारण प्रोजेक्टर द्वारा गोपी फिल्म दिखायी जा रही थी. लोगों की काफी भीड़ थी. उसी दौरान जगदीश मंडल, थामी मंडल व कादिर मियां को मारने की साजिश थी, लेकिन भीड़ के कारण गुंडे यह काम करने से उस दिन चूक जरूर गये, लेकिन मन शांत नहीं हुआ. अगले ही दिन हत्या कर दी गयी. तीन लोगों की हत्या के बाद भी वहां गुंडों की बदमाशी तब बंद हुई जब मजदूर लाल झंडे के नेतृत्व में मुखर होने लगे. जगदीश मंडल व थामी मंडल अपने मजदूरों के लिए सदा लड़ते थे. गुंडों को लगने लगा था कि इन्हें हटाये बगैर उनकी रंगदारी ईस्ट बसुरिया में नहीं चलने वाली है. उसी तरह कादिर मियां भी अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते थे. उनकी हत्या के बाद पत्नी अजोला खातून की भी मौत हो गयी. बाद में अनुकंपा के आधार पर कादिर के बड़े बेटे इसराइल मियां को नौकरी मिली. उसी तरह जगदीश मंडल की पत्नी शनिचरी देवी को व थामी मंडल की पत्नी निरिया देवी को नौकरी मिली.

◆◆◆◆◆

15 नवंबर 1973 : सिजुआ में मजदूरों ने जान देकर बचायी लाल झंडे की शान

यह सर्वविदित था कि कोयला खदानों के राष्ट्रीयकरण के पूर्व निजी मालिक गुंडे पाल कर रखते थे ताकि मजदूरों को शोषण करने के लिए उनका इस्तेमाल किया जा सके. लेकिन कोलियरियों के राष्ट्रीयकरण के बाद भी उन्हीं गुंडों की चलने लगी. बीसीसीएल में गुंडों के लोगों को स्थायी किया जाने लगा. इधर, कॉमरेड राय के कारण लाल झंडे के नेतृत्व में शोषित-पीड़ित श्रमिकों की बीसीकेयू की पहली पसंद बन चुकी थी. गजलीटांड़-अंगारपथरा इलाके में जिन जगहों में लाल झंडा लहर रहा था, उसे बदमाशों ने उतार कर तिरंगा झंडा लगा दिया था. लाल झंडों को जलाया जा रहा था. तिरंगा को इसलिए लगा दिया गया था कि उसे उतारने पर देशद्रोह का केस हो जायेगा. उसी जगह तिरंगा की जगह पुन: लाल झंडा फहराने पर बीसीसीएल के सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें रोक दिया. मजदूरों ने इसे प्रतिष्ठा का विषय बना लिया और सिजुआ एरिया में काम रोक दिया. 13 नवंबर को इसको लेकर श्रमायुक्त के कार्यालय में सुनवाई होनी थी, लेकिन प्रबंधन पक्ष नहीं गया तो यूनियन के कार्यकर्ताओं ने अपनी कोलियरियों के अधिकारियों से बातचीत करनी चाही, लेकिन लठैतों ने हमला कर दिया. इसी हमला के खिलाफ 15 नवंबर को मजदूर सिजुआ एरिया कार्यालय पहुंचे तो उन्हें बाहर ही रोक दिया गया. मजदूरों ने घुसने का प्रयास किया तो सुरक्षाकर्मियों ने गोलियां चला दी, जिसमें छह मजदूरों की मौत हो गयी. मजदूरों का मानना था मृतकों की संख्या और थी. कॉमरेड एके राय की पहल पर बंगाल के माकपा सांसद ने इस मुद्दे को संसद में उठाया था, जिसमें सरकार ने स्वीकार किया था कि छह लोग मारे गये हैं. इसके विरोध में 21 नवंबर को धनबाद जिला की तमाम खदानों में हड़ताल की गयी. बताया जाता है कि लगभग एक लाख मजदूरों ने इस हड़ताल में भाग लिया था. इससे पहले गजलीटांड़ कोलियरी में बीसीकेयू के कार्यकर्ता रामेश्वर सिंह पर इसलिए हमला किया गया था कि वह वार्ता करने कोलियरी कार्यालय पहुंचे थे. इससे पहले छह नवंबर 1973 को ही केशरगढ़ा खदान में मजदूरों पर गोलियां चलायी गयी थी, जिसमें अर्जुन रवानी नामक मजदूर को गोली लगी थी. वह सूदखोरों का विरोध कर रहे थे. इस घटना के विरोध में हुए जुलूस में लठैतों व गुंडों ने फायरिंग कर दी थी, जिसमें लालदेव नामक मजदूर की मौत हो गयी थी. वह बोकारो-झरिया खदान में मालकट्टा था.

11 मार्च 1974 : गोमो में साजिश कर सदानंद झा को मार डाला

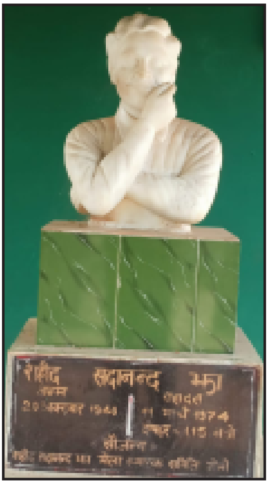

सदानंद झा के शोषण के खिलाफ संघर्ष व शहादत से यह बात मिथक साबित होती है कि झारखंड आंदोलन में झारखंड के बाहर विशेष कर बिहारियों का कोई योगदान नहीं रहा. वह बिहार के थे, लेकिन झारखंड आंदोलन में अनवरत व कई ऐतिहासिक संघर्ष किया, जिसके कारण आज भी गोमो व आसपास के गांवों में उनका नाम सम्मान से लिया जाता है. लोग हर साल उनकी समाधिस्थल पर आकर श्रद्धा भाव के सुमन अर्पित करते हैं. आठ दिन तक उनके नाम पर मेला लगाया जाता है. एक मूर्ति भी शहादत स्थल पर स्थापित है. सदानंझ मार्केट वहां पर अवस्थित है. यह सब उनके संघर्ष व लोकप्रियता के कारण ही यह सम्मान उनके नहीं रहने के बाद भी उनके प्रति है. सदानंद झा बिहार के मुंगेर जिला के तारापुर के निकट मनेर गांव के रहने वाले थे. उनके मामा गोमो में रेलवे में टंडेल पद पर कार्यरत थे. वह बाल्यकाल से ही मामा के यहां रहने लगे.

विशॉप रॉकी हाइस्कूल से मैट्रिक की. पढ़ाई में बहुत तेज नहीं रहने के बाद भी खेलकूद में बहुत आगे रहते थे. एक अच्छा फुटबॉल खिलाड़ी के रूप में छात्र जीवन में उन्होंने पहचान बनायी. नेतृत्व गुण रहने के कारण गोमो व गोमो के आसपास के गांवों में फुटबॉल मैच का आयोजन करवाने लगे. खुद भी अच्छा खिलाड़ी बन कर उभरे. उसके बाद रेलवे में खिलाड़ी के आधार पर नौकरी 1971 को मिल गयी. लेकिन अन्याय के खिलाफ उनके मन में मुखालफत की भावना बराबर रहती थी. रेलवे में महिलाकर्मियों के साथ काफी भेदभाव किया जाता था. कर्मियों का शोषण होता था. गोमो रेलनगरी में स्वच्छता का अभाव था. इन मुद्दों को लेकर वह रेलवे के

खिलाफ मुखर हुए. कर्मियों ने उन्हें हाथों हाथ लिया और अपना नेता चुन लिया. पूर्व रेलवे में कर्मचारियों को संगठित कर यूनियन बनायी. रेलवे में पकड़ भी काफी मजबूत हो गयी थी. कोई भी समझौता बगैर सदानंद झा के नहीं होने लगे थे.

वाकपटुता इतनी थी कि लोग भाषण सुनने के लिए खड़े रहते थे. जोशीला भाषण देकर लोगों को संगठित करने में महारत हासिल था. उधर, बिनोद बिहारी महतो के शिवाजी समाज का संगठन गांव-गांव में फैल चुका था. एके राय-बिनोद बिहारी महतो व शिबू सोरेन का मिलन भी हो चुका था. उनकी तिकड़ी इतनी तगड़ी हो चुकी थी कि गांवों के महाजन-सूदखोर और औद्योगिक क्षेत्रों में मालिक थर्राने लगे थे. धनकटनी आंदोलन के जरिये आदिवासी संगठित होने लगे थे. उधर गांवों में भी सदानंद झा लोकप्रिय होने लगे थे. विद्रोही स्वभाव के सदानंद झा को धनकटनी आंदोलन को गरीबों की मुक्ति का आंदोलन जैसा लग रहा था, इसलिए यह आंदोलन उन्हें भा गया.

बिनोद बाबू की पहचान सभी कुड़मी गांवों में हो चुकी थी. उधर, जीतपुर गांव के पुनीत लाल महतो, जो स्व झा के सहपाठी भी थे, सभी शिवाजी समाज से जुड़ गये थे. उनके साथ नारायण महतो, दामोदर राम, टिकू महतो जैसे अगुआ के अलावा काफी साथी जुड़ने लगे थे. शिबू सोरेन व बिनोद बाबू के भी वह धीरे-धीरे काफी प्रिय होने लगे थे. गोमो-हरिहरपुर-तोपचांची, डुमरी, भेंडरा व पारसनाथ की तराइयों के गांवों में चलने वाले धनकटनी आंदोलन में खुद को समर्पित कर दिया. उधर, अलग राज्य की मांग भी शुरू हो चुकी थी. पीड़ित लोगों को संगठित करने के बाद वह उस इलाके के एक अच्छे नेता के रूप मे उभर चुके थे. समानांतर रूप से रेलकर्मियों के हक की लड़ाई भी लड़ते रहे. लेकिन दूसरी ओर उस इलाके के सूदखोर, महाजनों का संबंध कांग्रेस के साथ था. गोमो में तमाम दिग्गज परिवार युवा कांग्रेस जुड़े थे. वैसे लोग ही उस इलाके के मूलवासियों और आदिवासियों का शोषक थे.

सूद पर पैसे देकर बंधुआ मजदूर बना कर रखना, उत्पादित अनाज खुद रख लेना, फिर कष्ट के समय उसी अनाज को पीड़ित को देने का यह सिलसिला जारी था. लेकिन सदानंद झा के आंदोलन के कारण बुर्जुआ व

सामंती विचारधारा वाले लोगों को परेशानी खड़ी होनी शुरू हो गयी थी. वैसी समाजविरोधी लोग अब सदानंद व उनके साथियों को रास्ते से हटाने की सोचने लगे थे. लेकिन ईमानदारीपूर्वक गरीबों की सेवा करने के कारण जमींदार-सूदखोर सीधे लड़ने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे तो प्रशासन का सहयोग लेते. उसी दौरान तत्कालीन प्रशासन ने सदानंद झा व पुनीत लाल महतो आदि को साधारण जनता के लिए टेरोरिस्ट (आतंकवादी) घोषित कर दिया.

पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने के लिए खोजने लगी. उनके आंदोलन का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सरकार के इंटिलेजेंसी विभाग ने केंद्र सरकार तक को इनके बारे में जानकारी दे दी. उसी दौरान तत्कालीन उपायुक्त ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का पत्र पुनीत लाल महतो व सदानंद झा को दिखाया और कहा कि पीएम ने दिल्ली बुलाया है, चलिये ले जायेंगे. दोनों ने मंत्रणा की कि क्या करना है. फैसला हुआ, नहीं जाना है, वे युवा कांग्रेस में शामिल करने के लिए दबाव देंगी या फिर षडयंत्र कर रास्ते में ही हत्या कर दी जायेगी. इसके बाद स्व झा डुमरी और पारसनाथ पार के घने जंगलों के गांवों में महाजनी प्रथा के विरुद्ध लोगों को गोलबंद करने लगे.

अलग झारखंड राज्य के लिए मीटिंग-बैठक कर उसके बारे में लोगों को समझाने लगे कि क्यों गरीबों के कल्याण, यहां की भाषा-संस्कृति की रक्षा, और शोषण से मुक्ति के लिए अलग प्रांत चाहिए. लेकिन उस क्षेत्र के जमींदार-पुलिस गठजोड़ ने उन्हें गिरिडीह जेल भेज दिया. वहां से छूटने के बाद वह और अधिक मंजे हुआ नेता के रूप में उभर कर सामने आये. साम्यवादी-समाजवादी सोच रखने वाले स्व झा पूरे बिहार में चर्चित होने लगे. उसी दौरान बिहार के कांग्रेसी नेताओं ने उनसे सम्पर्क कर टिकट व पद देने का लालच दिया. लेकिन उन्होंने ठुकरा दिया. कहा हम झारखंड क्षेत्र के गरीब-शोषित-उत्पीड़ित समाज के लोगों को संगठित कर हक दिलायेंगे, विधायक-सांसद या फिर पद मायने नहीं रखता.

बिना शर्त प्रशासन ने किया रिहा

गोमो बाजार में कुछ व्यवसायी परिवार हैं, जो पहले काफी चर्चित थे. उन परिवारों का संबंध गांव के जमींदारों से तो था ही, कांग्रेस पार्टी से जुड़े रहने के कारण प्रशासनिक पकड़ भी तगड़ी थी. गेहूं-सत्तू पिसाई की मशीन गोमो में हुआ करती थी. पांच पैसे प्रति किलो गेहूं पिसाई की दर थी.

लेकिन मशीन के मालिक ने अचानक एक पैसा प्रतिकिलो बढ़ा दिया. सुनने में यह बहुत साधारण बात लगती है, लेकिन उस समय के गरीब किसानों एक पैसा भी बहुत अधिक था. इतनी छोटी महंगाई को भी सदानंद झा को खटक गया. उन्होंने गांव के लोगों को लेकर उस व्यापारी परिवार के यहां जाकर रेट यथावत रखने की बात कही. जनता के हित में उसके मालिक के साथ मारपीट कर दी. उनका साथ पूरी रेल कॉलोनी के लोगों ने दिया, क्योंकि एक ही मशीन वहां हुआ करती थी और लोगों को पिसाई करना भी मजबूरी थी. मारपीट के आरोप में पुलिस ने गिरफ्तार कर धनबाद जेल भेज दिया. फिर क्या था.

गांव के आदिवासी-मूलवासी किसान परिवार और रेलकर्मी सभी सड़क पर उतर गये. राजधानी एक्सप्रेस को रोक दिया गया. रेल पटरियों पर हजारों लोग बैठ गये. एक ही मांग कि सदानंद झा को रिहा करो. लेकिन पुलिस ने कहा कि कोर्ट कचहरी के नियमों का बिना पालन किये कैसे रिहा किया जा सकता है. लेकिन लोग उग्र हो चुके थे अपने नेता की गिरफ्तारी से. पूर्वी रेलवे में अफरातफरी मच गयी. मामला दिल्ली तक पहुंचा. गांव के लोग बोलने लगे कि गोमो रेलवे स्टेशन महतो की जमीन पर बना है, हम एक भी ट्रेन पार होने नहीं देंगे. अभी तक के इतिहास में पहली बार 72 घंटे रेल का चक्का जाम रहा. प्रशासनिक महकमा में हलचल मच गयी. तत्कालीन उपायुक्त ने तुरंत उस समय के सिंदरी के विधायक एके राय से संपर्क किया. राय साहब पटना में थे. वहां से मंत्रियों ने एके राय से कहा कि मामला रेल का है, समझा दीजिए. उन्होंने कहा कि जनता की भावना को समझा जाए, जाइये बिनोद बाबू से संपर्क कीजिए. फिर उपायुक्त ने बिनोद बाबू से संपर्क किया. बिनोद बाबू ने साफ कह दिया, हम कुछ नहीं कर सकते. जनता की मांग मान लीजिए. उपायुक्त के आदेश पर बिना शर्त धनबाद जेल से सदनानंद झा को रिहा किया गया.

बिनोद बिहारी महतो की जीप पर बैठा कर गोमो लाया गया. साथ में उपायुक्त भी थे . जनता के बीच दिखाया गया कि सदानंद झा आ गये हैं, तब उग्र लोग शांत हुए और रेल का परिचालन चालू हुआ. इस आंदोलन के बाद एक दिग्गज जननेता के रूप में उनकी पहचान पूरे जिला में होने लगी. एके राय, बिनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन के बाद इस धारा

की दूसरी पंक्ति के नेता शक्ति नाथ महतो, आनंद महतो, केएस चटर्जी, शिवा महतो, हारू राजवार जैसे नामचीन नेताओं की पंक्ति में वह आग गये थे. लेकिन दूसरी ओर गरीबों के शोषक भी सदानंद झा के खिलाफ गोलबंद होने लगे थे.

किसानों की विशाल सभा बुलायी तो सूदखोरों ने हमला बोल दिया

18 फरवरी 1974 को उन्होंने गोमो फुटबॉल मैदान में एक विशाल सभा बुलायी. डुमरी, पीरटांड़ के अलावा हरिहरपुर, भेंडरा इलाके के किसानों की रैली पहुंची. काफी भीड़ जुटी थी. उनका जोशीला भाषण सुन कर लोगों ने अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने का संकल्प लिया. शाम होने को चली तो भीड़ छंटने लगी. इसी दौरान युवा कांग्रेस के सदस्यों, जिन्हें सदानंद झा की जनगोलबंदी की राजनीति पसंद नहीं थी, ने भीड़ पर हमला बोल दिया. लाठी-डंडा से उन्हें पीटा गया. वह घायल हो गये, लेकिन सातों हमलावर पकड़ लिये गये. फिर मुख्य साथियों ने कहा कि इन्हें क्या किया जाए, किसी ने कहा काट दो, खत्म कर दो तो किसी ने कहा उचित दंड देकर छोड़ दो. किसी ने कहा उठक-बैठक करा कर चेतावनी देकर छोड़ दो कि गरीबों का वे शोषण करना बंद कर देंगे. लोगों ने स्थानीय हमलावरों को शारीरिक डंड देकर छोड़ दिया. उधर, रेलकर्मियों की बैठक में भाग लेने शाम को ही सदानंद झा अंडाल चले गये. लेकिन सूदखोरों के साथ पुलिस का मित्रवत संबंध रहने के कारण उनके साथ नारायण महतो और पुनित लाल महतो को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया. कुछ दिन बाद सदानंद झा ने जेल में जाकर अपने साथियों से मुलाकात की. उनकी पकड़ इस कदर हो गयी थी कि जेल प्रशासन ने गेट के अंदर ले जाकर उनसे मुलाकात करायी. लेकिन भीतर ही भीतर प्रशासन को यह भय सता रहा था कि कुछ बड़ी घटना घट जायेगी, इसलिए पुनीत लाल व नारायण महतो को हजारीबाग सेंट्रल जेल स्थानांतरित कर दिया गया. इधर, उनके प्रमुख साथियों के जेल जाने के बाद विरोधी खेमा सदानंद के पीछे पड़ गया. 11 मार्च 1974 को गोमो बाजार के लोको चालक विश्रामगृह के पास उन्हें गोलियों से भून दिया गया. इस कांड को अंजाम देने के लिए विरोधियों ने कानपुर से शूटर मंगाया था.

◆◆◆◆◆

28 जनवरी 1978 : चासनाला गांव में घुस कर माफियाओं ने सुरेंद्र नाथ महतो को गोली मार दी

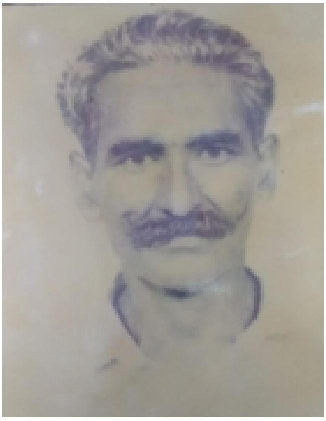

कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण हो चुका था. धनबाद में सांसद के रूप में एके राय चुन लिये गये थे. वह पूरे बिहार में काफी चर्चित सांसद थे, क्योंकि उन्होंने जेल से ही विपुल मत लेकर जीत हासिल की थी. गरीब किसान-मजदूरों के मसीहा के रूप में उनकी पहचान हो चुकी थी. इससे पहले वह जिस सिंदरी सीट से विधायक थे, वहां जुझारू व्यक्तित्व के धनी आनंद महतो विधायक बन चुके थे, जबकि सूर्यदेव सिंह झरिया से चुन लिये गये थे. भले ही सूर्यदेव सिंह जनता पार्टी से चुने गये थे, लेकिन कोयलांचल में गांव के लोगों की नजर में उनकी छवि दबंग व माफिया की थी, अलबत्ता बहिरागत लोगों के वह काफी प्रिय हो चुके थे.

चासनाला गांव झरिया विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत पड़ता है. सिंदरी से सटा होने के कारण यहां के लोगों के सुख-दुख के साथी लाल झंडा से जुड़े लोग थे. चासनाला में इंडियन आयरन एंड स्टील (इस्को) की खदानें संचालित थीं. राष्ट्रीयकरण के बाद खदानों में मजदूरों को रखने का सिलसिला चल रहा था. प्रबंधन वहां यूनियन नेताओं से मजदूर बहाली की सूची लेते थे, फिर उसी सूची के आधार पर लोगों को स्थायी नियोजन दिया जाता था. उसी समय आपात काल में चासनाला महतो बस्ती के सुरेंद्र नाथ महतो, बिरंची महतो, संतोष महतो, रामनाथ महतो आदि जेल से छूट कर आये थे. सभी अन्याय के खिलाफ लोगों को जागृत करने में लगे थे. हराधन महतो, दुर्गा चरण ओझा जैसे युवा साथी भी उन लोगों के सहयोगी थी. दुखद बात यह थी कि जिसकी जमीन इस्को ने ली थी, उसे नौकरी नहीं दी जा रही थी, अपितु माफियाओं द्वारा बनायी गयी सूची के अनुसार काम दिया जाने लगा था. बहिरागत माफिया गांव के एक भी व्यक्ति की सूची

में नाम नहीं देते थे, उल्टे दफ्तर में दबाव बनाकर विस्थापितों का नाम हटा दिया जाता था. इसके खिलाफ एके राय ने गांव वालों की बैठक की, जिसका साथ उपरोक्त युवाओं ने दिया. फिर ग्रामीण एकता मंच बना कर चासनाला, कांड्रा, सुदामडीह, सिंदरी, रांगामाटी, परसबनिया, चिटाही, छाताबाद, कुलटांड़ और भौंरा इलाके के गांवों में मंच की लगातार बैठक होती रही. लोगों का इसमें साथ मिला. यह संगठन एके राय और बिनोद बिहारी महतो के दिशा-निर्देश पर काम कर रहा था. लोगों को यह जागरूक किया जाने लगा कि संपदा हमारी और नौकरी बाहरी लोगों को, यह चलने नहीं दिया जायेगा. इसको लेकर मूकदर्शक बने रहना उचित नहीं है. सबसे दिक्कत थी कि प्रबंधन भी नहीं चाहता था कि विस्थापितों को न्याय मिले. ऊपर से माफियाओं के साथ पुलिस का अटूट गठजोड़ था. बात-बात में मुकदमा कर दिया जाता था.

दबंग यूनियन नेता बिहार-यूपी से पहलवान लाकर रखते थे, ताकि गांव के सीधे-साधे लोग हक की बात न करे, उनके समक्ष आत्मसमर्पण कर दे. राजनीतिक रूप से सूर्यदेव सिंह के नेतृत्व में गठित जनता मजदूर संघ व कांग्रेस की इंटक ध्रुव विरोधी थे, लेकिन गांव वालों के खिलाफ की जब बात आती तो दोनों यूनियनें एक हो जाती थी. इधर, एके राय जैसे जुझारू व्यक्ति, बिनोद बिहारी महतो जैसे जनाधार वाले नेता और शिबू सोरेन जैसे आदिवासी नेता का साथ होने के कारण गांव को लोगों का मनोबल टूटा नहीं था. वे अन्याय के खिलाफ अनवरत संघर्षरत थे. चासनाला में टीपी सिंह, सीएस चौबे, ओंकार सिंह का आधिपत्य था, उसे तोड़ कर गरीबों का वहां शासन स्थापित करना कोई आसान बात नहीं थी, लेकिन माफिया ताकत भी गांव वालों की एकता और उनके नेताओं की ईमानदारी के कारण कमजोर होने लगी थी. जब प्रजातांत्रिक रूप से माफिया ताकत गांव वालों से कमजोर होने लगी तो पुलिस के साथ गठजोड़ बनाया, इसके बाद भी लोग संघर्ष से पीछे नहीं हटे तो युवाओं को रास्ता से हटाने के लिए हत्या की राजनीति अपनाने लगी. हालत तो यह हो गयी थी कि दबंग लोग लिक से हट कर गंदी हरकत करने लगे थे. ग्रामीण महिलाएं सब्जी या मूढ़ी लेकर बेचने जाती थी तो उसे उतार लिया जाता था. उससे बांग्ला, खोरठा या हिंदी से न बात कर भोजपुरी में गालियां दी जाती थी. मारे पेट के वह सहन करती थी और रास्ता बदल कर फेरी करती थी. इधर, लाल झंडा के नेतूतव में ग्रामीण एकता मंच भी मजबूत हो रहा था. मंच का मानना था कि हमारी

जमीन पर कोयला खदान और हमें ही नौकरी के लिए पीछे रहना पड़ रहा है. मंच ने भी योजनबद्ध तरीके से संघर्ष को जारी रखा.

अमलाबाद में सूर्यदेव सिंह के लठैत के खिलाफ संघर्ष कर उसे पराजित किया. भौंरा के सुरेश महतो को इस दौरान माफियाओं ने गोली मार दी, जिससे उसकी मौत हो गयी. सुरेश की मौत से भले ही एक साथी मंच का चला गया, लेकिन मंच और अधिक सशक्त होकर उभरा. विशेष कर चासनाला में. उसी दौरान इस्को ने जमीन अधिग्रहण किया तो मंच लगातार आंदोलन करता रहा. उधर माफियाई गतिविधि भी शिखर पर थी. चासनाला में मंच के खिलाफ माफियाओं ने एक बड़ा जुलूस 28 दिसंबर 1978 को निकाला, उसमें पुलिस फोर्स भी शामिल था. सभी हथियार से लैस थे. नेतृत्व ओंकार सिंह व तपेश्वर सिंह कर रहे थे. चासनाला ओझा बस्ती, महतो बस्ती समेत सभी टोलों में घुसते हुए एचके क्वायरी पहुंचा. जुलूस ने स्थानीय लोगों को खुली चुनौती दी. जिसे सुरेंद्र महतो ने स्वीकार किया और युवाओं की टोली बना कर तीर-धनुष के साथ मोर्चा संभाल लिया. कहा कि जुलूस शहर में निकालें, गांव के लोगों में दहशत न फैलाएं. लेकिन सुरेंद्र नाथ महतो को जुलूस में शामिल बदमाश ने रायफल से गोली चला दी. घायल होकर वहां छटपटाने लगा.

सिंदरी के तत्कालीन विधायक आनंद महतो व कांड्रा के झगरू राय आदि ने सुरेंद्र को उठा कर सिंदरी एफसीआइ के अस्पताल ले गये, जहां उनकी मौत हो गयी. उनके साथ टिकर महतो, वासुदेव महतो, शत्रुघ्न महतो, मदन महतो भी घायल हुए थे. सुरेंद्र तीन भाइयों में सबसे छोटे थे. गोवर्धन महतो और सर्वेश्वर महतो उनसे बड़े थे. उनकी दो बहनें भी थीं. उनकी हत्या के बाद चासनाला में बिनोद बाबू और एके राय और एसके बक्शी के नेतृत्व में विशाल आंदोलन हुआ. गांव के विस्थापितों को नौकरी मिलने लगी. सुरेंद्र की शहादत ने गांव के लोगों को न्याय मिला. सुरेंद्र की पत्नी बेली महतो को नौकरी इस्को में मिली. उनके निधन के बाद उनके छोटे बेटे धीरेन महतो को नौकरी मिली. उनके चार पुत्र लखन महतो, महावीर महतो, रंजीत महतो और धीरेन महतो हैं. चासनाला महतो बस्ती के मैदान में उनकी मूर्ति लगायी हुई है, जहां हर साल 27 दिसंबर को श्रद्धांजलि सभा होती है. उनका जन्म 12 जून 1955 को हुआ था. पिताजी पोपू महतो किसान थे.

◆◆◆◆◆

30 सितंबर 1978 : निरसा के दिग्गज मुखिया अभय चरण तिवारी की हत्या

कोयलांचल में एके राय, बिनोद बिहारी महतो व शिबू सोरेन के नेतृत्व में केवल अलग राज्य की लड़ाई ही नहीं लड़ी गयी, बल्कि गांवों में सामंतों व सूदखोरों के खिलाफ भी गरीब लोगों को जागरूक किया गया. इसका असर जहां सूदखोरों व जमींदारों को आर्थिक रूप से हुआ, वहीं इस संघर्ष में हर इलाके में गांव के युवकों को नेतृत्व की क्षमता मिली. संघर्ष में शामिल होकर अपना नाम काफी रोशन किया. इसी तरह का नाम था निरसा इलाके में अभय चरण तिवारी का. खुद एक संभ्रांत परिवार में अबनीकांत तिवारी के घर में 1941 को जन्म लिया. वह अबनी बाबू की पहली पत्नी बासंती देवी की एकमात्र संतान थे. पढ़ने-लिखने में शुरू से तेज रहे. बीबी कॉलेज आसनसोल में स्नातक की पढ़ाई की.

बीसीसीएल की गोपालीचक कोलियरी में बतौर सीनियर ओवरमैन नौकरी की. फिर इसीएल की चापापुर एक नंबर कोलियरी में नौकरी की. उस समय सार्वजनिक संस्थानों में नौकरी करते हुए चुनाव लड़ने की आजादी थी. इसलिए घाघरा पंचायत में मुखिया का चुनाव लड़े और जीते. शिक्षा ग्रहण करने के दौरान ही उन्हें राजनीति भाने लगी. उस समय गोविंदपुर के सत्यनारायण दुदानी विधायक बन चुके थे टुंडी से. वह जनसंघ से जुड़े थे. उनका संपर्क सत्यनारायण बाबू से हुआ और वह 1969 के बिहार विधानसभा का चुनाव निरसा से जनसंघ से लड़े. भले ही उन्हें सफलता नहीं मिली, लेकिन एक गांव के युवक ने सम्मानजनक मत लाकर सबको चौंका दिया. उसी समय निरसा में कृपा शंकर चटर्जी का जलवा हुआ करता था. श्री चटर्जी एके राय, बिनोद बाबू व शिबू सोरेन के बाद कोयलांचल में सबसे बड़े नेता के रूप में उभर चुके थे. फिर एके राय और केएस चटर्जी ने अभय चरण से संपर्क किया और मासस-झामुमो में जुड़ कर अन्याय के खिलाफ

में उस समय हो रहे संघर्ष में शामिल होने का आग्रह किया. अभय ने बात मान भी ली. आदिवासियों को वह एकजुट करने लगे. अलग राज्य के संघर्ष में सक्रिय भूमिका तो निभायी ही, साथ ही समानातंतर चल रहे शैक्षणिक आंदोलन में भी काफी योगदान दिया. निकट के गांव बेनागड़िया में शिवाजी हाइस्कूल व बरवापूर्व में महेंद्र हाइस्कूल के निर्माण में अहम भूमिका निभायी. धीर-धीरे वह लोकप्रिय होने लगे थे. दूसरी ओर जमींदारों की आंखों की किरकिरी हो गये थे, निकट की कोलियरी के सूदखोरों का भी वह नंबर वन शत्रु बन कर उभर चुके थे.

इसीएल की चापापुर कोलियरी के दो सूदखोरों के खिलाफ मुहिम छेड़ दी थी. बिहार कोलियरी कामगार यूनियन के बैनर तले मजदूरों को भी एकजुट करने लगे थे. उनकी बहादुरी की चर्चा आज भी लोग करते हैं. एक बार तीन डकैतों को उन्होंने मार गिराया था. इतना ही नहीं, तीन डकैतों को पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया था. लोगों को लगने लगा था कि वह इलाके में एक रहनुमा बन कर उभर रहे हैं पीड़ितों व शोषितों के लिए. लेकिन दूसरी ओर कोलियरी व गांव के सूदखोरों के लिए वह परेशानी का कारण बनने लगे थे. उन्हें परास्त करने के लिए सूदखोर-महाजन भी षडयंत्र में जुट गये थे और वे सफल भी हो गये. 30 सितंबर 1978 को वह मोटरसाइकिल से अपने घर से निकल कर चापापुर कोलियरी जा रहे थे. बारिश हो रही थी. गांव के कुछ दूर पार करने के बाद जंगल में उन्हें घेर कर गोली मार दी गयी. इससे भी संतुष्टि नहीं मिली तो फरसा से वार कर दिया. वह वहीं ढेर हो गये. अगले दिन एक अक्तूबर को विशाल शवयात्रा निकाली गयी. उसमें दिनों दिग्गजों एके राय, बिनोद बिहारी महतो के अलावा शिबू सोरेन भी शामिल हुए. वह अपने छह पुत्रों सपन तिवारी, तपन तिवारी, वृंदावन तिवारी, विद्युत तिवारी, जीमुत वाहन तिवारी, कार्तिक तिवारी, एक पुत्री रीता तिवारी व पत्नी आनंदमयी तिवारी को छोड़ कर चले जरूर गये, लेकिन आज भी लोग उन्हें उसी कद्र के साथ याद करते हैं. बाद में उनके ज्येष्ठ पुत्र सपन तिवारी की इसीएल में नौकरी हुई.

घाघरा में है स्मृति स्थल

उनके नाम पर निरसा में एकमात्र स्मृति स्थल बना हुआ है. पूर्व विधायक अरूप चटर्जी ने अपने स्तर से समाधिस्थल घाघरा में बनाया है, जहां पर हर साल शहीद दिवस मनाया जाता है और लोग श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं.

◆◆◆◆◆

1 नवंबर 1978 : जयतारा में पुलिस से लड़ते हुए शहीद हुए लीलू, हीरू व पटल बाउरी

70 के दशक के आंदोलन को यदि वर्ग संघर्ष कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. यह वर्ग संघर्ष सरजमीं पर दिख रहा था. महाजनों व जमींदारों के खिलाफ जहां गांव के शोषित-पीड़ित जनता एकजुट होकर अपने हक-अधिकार के प्रति जागरूक हो रहे थे तो वहीं इसकी प्रतिक्रिया में महाजन व निरंतर शोषण करने वाली शक्ति उस समय पुलिस की मदद से अपना राज कायम रखना चाह रही थी, और उनकी मुखालफत करने वाले शख्स को रास्ते से हटाने की योजना बनाती थी. ऐसी ताकतों ने पुलिस का दम भर इस्तेमाल किया. धनबाद जिला के चास अंचल (अभी बोकारो जिला) के जयतारा गांव में ऐसी ही घटना में तीन युवकों की हत्या पुलिस ने कर दी. दरअसल महाजनी प्रथा के खिलाफ उस इलाके में लीलू बाउरी, हीरू बाउरी व पटल बाउरी काफी सक्रिय थे. तीनों जयतारा गांव के ही रहने वाले थे और तीनों का सीधा संबंध एके राय, बिनोद बाबू व दिशोम गुरु शिबू सोरेन के साथ इसलिए हो चुका था कि उनकी गतिविधि के कारण मासस व झामुमो के संगठन का काफी विकास हो रहा था. उस समय गांव में दलितों की स्थिति काफी खराब थी और वे दलित थे और दलितों के दर्द को समझते थे, इसलिए समानता के इस आंदोलन में वे अगुआ बने हुए थे. लेकिन जमींदार उन्हें केस-मुकदमा में फंसा कर परेशान किया करते थे. कई मुकदमे हो चुके थे. इसी बीच एक नवंबर 1978 की घनघोर रात को चास पुलिस तीनों पकड़ने के लिए आयी. जैसे ही लीलू, हीरू व पटल को मालूम हुआ, वे हिम्मत के साथ पुलिस का सामना करने लगे. गांव के अन्य लोगों ने भी इनका साथ दिया. दोनों पक्षों में भिड़ंत हो गयी. इसी बीच जैसे ही पुलिस को मालूम हुआ कि ये ही तीनों को पहले से हम खोज रहे हैं, पुलिस ने गिरफ्तार करने की जगह फायरिंग कर हत्या कर दी. तीनों की मौत वहीं पर हो गयी. ग्रामीणों ने भी पुलिस पर परंपरागत हथियार से हमला किया, जिसमें कुछ पुलिस वाले घायल हुए. उसके बाद तीनों का परिवार काफी बिखर गया. आज भी एक नवंबर को झारखंड मुक्ति मोर्चा की ओर से जयतारा में शहीद दिवस मनाया जाता है.

◆◆◆◆◆

23 अप्रैल : 1984 तेतुलिया हत्याकांड

अलग राज्य समर्थक दुकानदार यदुनंदन वर्णवाल की हत्या

नवादा के नरेट गांव के रहने वाले थे यदुनंदन वर्णवाल.1945 में हुआ था उनका जन्म. धर्माबांध, तेतुलिया साउथ गोविंदपुर कोलियरी चालू अवस्था में थी, फलस्वरूप मजदूर आंदोलन भी उस इलाके में होता रहता था. वह बिहार कोलियरी कामगार यूनियन के उस इलाके के चर्चित नेता हो चुके थे. संबंध एके राय, बिनोद बाबू व शिबू सोरेन से था. अन्याय के खिलाफ हर संघर्ष में खड़ा हो जाता था. भीतर से जुझारू प्रकृति के व्यक्ति थे. ईमानदार रहने के कारण उनकी रोजी-रोटी नेतागीरी से नहीं चलती थी, इसलिए परिवार चलाने के लिए एक राशन की दुकान चलाते थे. झारखंड अलग राज्य के लिए हो रहे आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाते थे. उनकी गतिविधि देख माफिया नाराज रहते थे. इसी बीच 23 अप्रैल 1984 को माफियाओं ने उनके घर में घुस कर हत्या कर दी. सुबह लोगों को लगा कि डकैती हुई है, लेकिन बाद में पता चला कि कोई सामान लेकर नहीं गये हैं. वह शुद्ध रूप से उनकी हत्या मजदूर राजनीति करने के कारण ही की गयी. हत्या के बाद काफी हंगाम हुआ था. अभी उस दुकान को उनके पुत्र गोपाल वर्णवाल चलाते हैं. शेष दो पुत्र किसी तरह परिवार चला रहे हैं.

◆◆◆◆◆

25 फरवरी 1990 : गोधर में नेपाल रवानी की हत्या

एक हिम्मत वाले नेता की माफियाओं ने कर दी हत्या

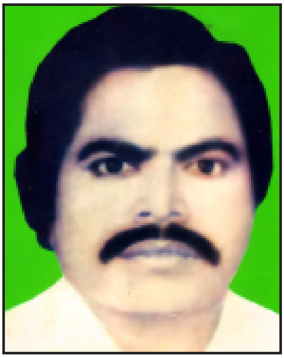

झारखंड आंदोलन के दौरान कोयलांचल के बहुत सारे सपूतों को जान की बाजी लगानी पड़ी. उन्हीं में से एक थे नेपाल रवानी. धनबाद शहर के गोधर रवानी बस्ती में मोही रवानी व कल्याणी देवी के घर में 16 नवंबर 1955 को जन्म लेने वाले नेपाल रवानी जब युवा अवस्था में पहुंचे तो अलग राज्य पाने के लिए गांव-घर के युवाओँ को जहां संघर्ष करते देखा, वहीं कोलियरी क्षेत्रों में चमचमाती कार और झकझक खादी पहने, बड़ी-बड़ी मुंछ वाले गैरझारखंडियों को भी देखा, जो नहीं चाहते थे कि गांव के लोग जागरूक हो और झारखंड अलग राज्य के संबंध में कुछ बोले. क्योंकि वही एक मुद्दा था, जिससे गांव के लोग एकजुट होते थे और बहिरागत लोगों के खिलाफ मुखालफत की हिम्मत जुटाते थे. एके राय और बिनोद बिहारी महतो के कारण गांव के लोगों ने निडर होकर बोलना-चलना सीख लिया था. पूरे कोयलांचल में बाहरी-भीतरी की भावना विकसित हो गयी थी.

जगह-जगह लोग आंदोलनरत थे. गोधर इलाका रसिक हांसदा की शहादत के बाद जागरूक हो चुका था. नेपाल रवानी, हरि प्रसाद पप्पू का राजनीति में पदार्पण हो चुका था. लाल-हरा झंडा के साथ अन्याय के खिलाफ लड़ रहे थे. उसी दौरान धनबाद में चर्चित उपायुक्त आये थे मदन मोहन झा. वह माफिया संस्कृति के बिल्कुल खिलाफ थे. एके राय को वह मानते थे. डीसी चाहते थे कि कोई भी साहस जुटा कर सामने आये जो माफियाओं से कड़ा मुकाबला केवल राजनीति में नहीं, बल्कि रोजगार के क्षेत्र में भी करे. जिला प्रशासन गांव के लोगों को मदद करेगा. इसी को लेकर उन्होंने कॉमरेड राय से मंत्रणा की और कहा कि बीसीसीएल में बालू सप्लाई के नाम पर माफिया घराना लूट मचा कर रखा है. इसलिए हम चाहते हैं कि गांव के लोगों की को-ऑपरेटिव सोसाइटी बना दी जाए, जो बीसीसीएल को बालू की आपूर्ति करेगी और सोसाइटी से जुड़े बेरोजगार युवा उससे लाभान्वित होंगे. कॉमरेड राय के समर्थकों की संख्या की उस

समय कोई कमी नहीं थी. लेकिन नेपाल रवानी के जुझारू चरित्र और हिम्मत को देखते हुए उपायुक्त को उन्होंने नेपाल रवानी का नाम बताया. फिर डीसी श्री झा ने नेपाल रवानी को बुला कर सहयोग समिति बनाने में सहयोग करने का आश्वासन दिया. कुछ ही दिनों में छोटानागपुर परिवहन सहयोग समिति नामक सोसाइटी का गठन हुआ, जिसके अध्यक्ष नेपाल रवानी बनाये गये.

बीसीसीएल एरिया छह धनसार एरिया में नौरंगदेव सिंह-रामचंद्र सिंह की ट्रांसपोर्टिंग चलती थी. सोसाइटी बनने के बाद परिवहन का कार्य समिति को मिला. गांव के युवकों को भागीदारी उसमें बढ़ने लगी. उधर, सिंह बंधु आर्थिक चोट पाने के कारण काफी दुखी थे. इसी बीच बिहार विधानसभा का चुनाव आया. मणींद्रनाथ मंडल धनबाद से झामुमो-मासस के उम्मीदवार बनाये गये. 25 फरवरी 1990 की शाम को गोधर बीसीकेयू कार्यालय में मणींद्र मंडल पहुंचे, फिर नेपाल रवानी ने उन्हें गोधर इलाके में साथ लेकर प्रचार कराया. रात आठ बजे के बाद मणींद्रनाथ नेपाल रवानी को गोधर में ही छोड़ कर पुटकी-मुनीडीह की ओर चले गये और नेपाल रवानी ऑफिस से अपने आवास पैदल जाने लगे. उसी दौरान हवा चानक के पास माफियाओं ने गोली मार कर उनकी हत्या कर दी. बहुत हंगामा हुआ. सभी लोग सुबह जुटे. खुद एके राय ने नेपाल रवानी को कंधा दिया था.

पहले भी एक बार हो चुका था मृत घोषित

उक्त घटना से पहले भी नेपाल रवानी पर जानलेवा हमला हुआ था. चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया था. पोस्टमार्टम हाउस ले जाया जा रहा था तो शरीर में हरकत आयी और उन्हें बचा लिया गया. मौत के मुंह से लौटने के बाद भी वह कभी किसी से डरे नहीं. प्रशासन ने सोसाइटी गठन के बाद उन्हें हथियार का लाइसेंस लेने की हिदायत दी थी, लेकिन बिनोद बाबू, एके राय, आनंद महतो जैसे बड़े नेताओं को बिना बॉडी गार्ड के रहते देख उन्होंने भी हथियार का लाइसेंस लेने से इंकार कर दिया था.

गोधर मोड़ के पास है आदमकद मूर्ति

निधन के बाद गोधर मोड़ के पास नेपाल रवानी की आदमकद मूर्ति लगायी गयी है. उनके दोनों पुत्र अजय रवानी और विकास रवानी झामुमो से जुड़े हुए हैं. हर साल गोधर में उनका शहादत दिवस मनाया जाता है, उसमें अभी भी लाल और हरा झंडा फहरा कर श्रद्धांजलि सभा की जाती है. दोनों ही दलों के लोगों के अलावा बीसीकेयू के लोग शामिल होते हैं.

◆◆◆◆◆

15 मई 1994 : मवेशी चोरों ने कलीमुद्दीन अंसारी को मार डाला

गोविंदपुर-निरसा व पूर्वी टुंडी की सीमा पर एक गांव है सहराज. उस गांव में जन्म लिये थे कलीमुद्दीन अंसारी. शुरू से ही अन्याय के खिलाफ वह आवाज बुलंद करने वाले युवा थे. झारखंड अलग राज्य के आंदोलन व मजदूरों के शोषण के खिलाफ हो रहे संघर्ष में उन्होंने खुद को समाहित कर दिया था. सिंदरी विधानसभा क्षेत्र में उनका घर पड़ता है, लेकिन अपनी सक्रियता की वजह से सीटू से संबद्ध बिहार कोलियरी कामगार यूनियन के वह इसीएल चापापुर के एरिया सचिव थे, जो निरसा विधानसभा क्षेत्र मे पड़ता है. पार्टी स्तर पर वह मासस से जुड़े रहे.

मासस और झामुमो उस समय आम जनता के लिए दो दल नहीं लगता था, अलबत्ता चुनावों में दोनों टकराते रहे और खामियाजा भी भुगतते रहे. लेकिन धनबाद का इलाका एके राय व बिनोद बाबू से सर्वाधिक प्रभावित रहा. इसलिए अलग राज्य के हुए आंदोलन हो या माफिया विरोधी आंदोलन सर्वाधिक शहादत लाल झंडा के साथियों ने ही दी और उन्हें याद भी वे लोग करते आ रहे हैं. अपनी सक्रियता के कारण गोविंदपुर प्रखंड मासस का उन्हें अध्यक्ष बनाया गया. कई बार सांगठनिक चुनाव हुए, लेकिन वह निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाते रहे. सक्रियता की वजह से पायी लोकप्रियता से अब लोग उनसे ज्वलन की भावना रखने लगे थे. सामाजिक सरोकार रहने के कारण अपनी जाति समाज में भी उनकी पकड़ बनने लगी थी. इलाके के लोगों में लोकप्रिय हो रहे थे. कभी भी बिना मीटिंग-सीटिंग के वह नहीं रहते. एक समय ऐसा आया कि चुनाव में उनकी जाति के तमाम मतदाता विधानसभा चुनाव में मासस के खिलाफ हो गये, लेकिन पार्टी के प्रति समर्पित कलीमुद्दीन टस से मस नहीं हुए, अलबत्ता उन्हें काफी लालच-प्रलोभन दिया गया. गरीबी दूर करने का आश्वासन दिया गया, इस पर उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि शोषणमुक्त झारखंड अलग राज्य की चाहत

रखने वाली मासस और उनके नेता एके राय, आनंद महतो को वह छोड़ नहीं सकते. चुनाव के बाद उनका कद बढ़ा. इसी बीच 15 मई 1994 को मासस के ईस्ट बरवा कार्यालय में पार्टी की बैठक की अध्यक्षता कर शाम तक बरवा में ही रहे. उसी समय पार्टी के प्रखंड सचिव बरवा निवासी अनिल मंडल से पेट्रोल के लिए एक सौ रुपया लिया. दरअसल अनिल मंडल ऐसे शख्स थे, जो सभी कार्यकर्ता के दुख-सुख को समझते थे. एक तरह से कहा जाए तो वही एक ऐसे व्यक्ति थे जो गोविंदपुर की पूरी पार्टी को चलाते थे. अनिल मंडल का बिनोद बाबू के पिता महेंद्रनाथ महतो के नाम पर बरवा में हाइस्कूल निर्माण में अहम भूमिका थी. बिनोद बाबू उन्हें काफी मानते थे. जब विद्यालय का सरकारीकरण हुआ तो अनिल मंडल उसके कर्मचारी हो गये. लेकिन उनकी सामाजिक सरोकार से जुड़े कार्य छूटे नहीं. वह तो वेतन के पैसे भी पार्टी कैडरों में बांट देते थे.

कलीमुद्दीन अंसारी भी उस दिन उनसे पैसा लेकर बरवा के अर्जुन होटल में खाना खाया और घर के लिए अपनी मोटरसाइकिल से निकल गये. जीटी रोड से उनका घर दूर पड़ता है. घर पहुंचने से पहले कालाडाबर मोड़ के पास पशु चोरों ने उन्हें रोक लिया. तस्करों को उनसे यह दिक्कत होती थी कि वह निडरता के साथ बराबर रात-बिरात चलते थे, जिससे उनकी चोरी में परेशानी होती थी. जैसे ही चोरों ने रोका, कलीमुद्दीन ने पहचान लिया, वह नसीहत देने संबंधी बातें करने लगे, इसी बीच एक चोर ने लोहे के तेज औजार से उनकी बाइक पर रखे हाथों पर चोट दे दी, जिससे उनकी दोनों हथेलियां कट गयीं. वीरान जगह में हुई घटना के कारण सुबह लोगों ने उन्हें मृत अवस्था में पाया. अगले दिन सहराज में उनकी मिट्टी मंजिल की गयी. उनके जनाजे में जुटी भीड़ उनकी लोकप्रियता को दर्शा रही थी. तत्कालीन निरसा विधायक गुरुदास चटर्जी, सिंदरी विधायक आनंद महतो, पूर्व सांसद एके राय समेत विभिन्न दलों के हजारों लोग जुटे थे जनाजा में. अभी हाल में मासस सहराज में उनका शहादत दिवस मनाती है. वह छह बेटे, दो बेटियां व विधवा को छोड़ जरूर चले गये, लेकिन अन्याय के खिलाफ लड़ने वाला ऐसा समर्पित मुसलिम कार्यकर्ता मासस को अभी तक नहीं मिला. बाद में अनिल मंडल के प्रयास से उनके बड़े बेटे को जीटी रोड के एक कारखाने में नौकरी दिलायी गयी. उनकी पत्नी कहती हैं, वह चले गये, लेकिन उनके द्वारा लोगों के बीच बनी पहचान ही परिवार की संपत्ति है.

◆◆◆◆◆

17 अगस्त 1994 : सरायढेला कांड : दिग्गज समाजसेवी मणींद्रनाथ मंडल की हत्या

तारीख 12 अक्तूबर 1994. दुर्गा महा अष्टमी का दिन. सरायढेला दुर्गा पूजा समिति धनबाद जिले का एक चर्चित पूजा पंडाल. कई बार जिला में प्रथम स्थान प्राप्त किया था इस समिति ने. यह पुरस्कार केवल साज-सज्जा, विद्युत सज्जा या मूर्ति के आकार को लेकर नहीं था, बल्कि कमेटी सदस्यों का स्वयं का अनुशासन और उमड़ती भीड़ को नियंत्रण करने के लिए मिलता था. इसी भीड़ को चीरती हुई एक कार तेज गति से आती है. उसमें चार मनबढ़ू युवक सवार थे. कमेटी के लोगों ने कार को रोकने का प्रयास किया कि मेला बाधित हो जायेगा. लोगों में भगदड़ मच जायेगी. आपलोग रास्ता बदल कर अपना घर जाएं. लेकिन उन्हें इससे कोई मतलब नहीं था. किसी की नहीं सुनी. तब कमेटी के सदस्यों राजेंद्र विश्वकर्मा, प्रेम मंडल आदि ने पूजा कमेटी के संस्थापक अध्यक्ष मणींद्रनाथ मंडल से संपर्क किया.

जुझारू स्वभाव के मणींद्र घर में चाय पी रहे थे. सुन कर आये और कार की खिड़की से सिर को सटा कर उन्हें ऐसा करने से मना किया. लेकिन युवकों ने उनकी बात तो मानी ही नहीं, उल्टे बेखौफ होकर उनके सिर पर गोलियां दाग दी. यह सूचना जंगल में आग की तरह फैल गयी कि माफिया परिवार के युवक ने मणींद्रनाथ मंडल को गोली मार दी. प्रशासन ने तुरंत उन्हें उठा कर केंद्रीय अस्पताल में भर्ती कराया. चिकित्सकों ने बताया कि वह जीतिवत हैं. इस तरह पांच दिनों तक जीवन-मृत्यु से वह जूझते रहे. अंततः 17 अगस्त को उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये. यह सुनने से लगता है कि यह एक आपराधिक घटना है, लेकिन यह आपराधिक नहीं, बल्कि राजनीतिक घटना थी. दरअसल उस समय मणींद्रनाथ मंडल काफी लोकप्रिय हो चुके थे. सरायढेला पंचायत के मुखिया तो थे ही, झारखंड मुक्ति मोर्चा

के जिलाध्यक्ष भी थे. दअसल नब्बे के दशक में झारखंड अलग राज्य की मांग शिखर पर थी.

मणींद्रनाथ मंडल कोयलांचल में इसमें अग्रणी भूमिका निभा रहे थे, इससे अलग राज्य नहीं चाहने वाले लोगों की नजर में वह चढ़े हुए रहते थे. जुझारू व्यक्तित्व के कारण पूरे झारखंड क्षेत्र में काफी नाम कमा चुके थे. राजनीतिक-सामाजिक आंदोलनों से वास्ता रखने के कारण घर-घर वह पहचान बना चुके थे. घटना के बाद लगा कि कोयलांचल समेत पूरे झारखंड में खून की नदी बह जायेगी. बदले की भावना से लोग उग्र हो चुके थे. एके राय, शिबू सोरेन, सूरज मंडल, आनंद महतो के अलावा झामुमो के सभी विधायक धनबाद पहुंच चुके थे. लेकिन प्रशासन व झामुमो के नेताओं ने मामले को शांत करा कर कोयलांचल को आग में झोंकने से बचा लिया. उनकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता था कि निधन के बाद शवयात्रा में हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी थी. खुद शिबू सोरेन ने शव को कंधा दिया था. पूरा झारखंड एक दिन के लिए बंद था. स्वत: स्फूर्त बंद था. लोगों में माफिया के प्रति आक्रोश था. उनके घर के निकट मैदान में उनका दाह संस्कार किया गया, जहां अभी उनका समाधिस्थल बना हुआ है. हर साल उनकी जयंती और शहादत दिवस पर वहां श्रद्धांजलि सभा होती है. जिस समय माफिया ने हमसे उन्हें छीन लिया था, उस समय वह अपनी शिक्षिका पत्नी रेखा मंडल और एक छोटी बेटी आनंदिता व पुत्र सत्यजीत (ददन) को छोड़ कर गये थे. उस घटना के बाद रेखा मंडल झामुमो में शामिल हुईं.

केंद्रीय कार्यकारिणी की सदस्य रहीं. बाद में जब झारखंड स्वायत्तशाषी परिषद (जैक) का गठन हुआ तो रेखा मंडल को पार्षद बनाया गया और उन्हें शिक्षा विभाग सौंपा गया. इससे पहले 1995 में शिबू सोरेन ने रेखा को टुंडी से झामुमो का टिकट देने की पेशकश की, लेकिन राजनीति के दांव-पेंच को समझ नहीं पाने वाली एक साधारण महिला ने टुंडी से टिकट लेने से इनकार कर दिया, तब मजबूर होकर झामुमो ने धनबाद विधानसभा क्षेत्र से टिकट दिया. लेकिन रेखा को तीसरे स्थान पर ही संतोष करना पड़ा. दरअसल अपने पति के एक स्वजाति सहयोगी टुंडी से भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ रहे थे तो रेखा ने टुंडी से लड़ने से मना कर दिया, जबकि

रेखा के लिए टुंडी सीट लगभग जीतने वाली सीट थी, क्योंकि 1985 में मणींद्रनाथ मंडल टुंडी से मासस व झामुमो बिनोद गुट के संयुक्त उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ चुके थे और मामूली अंतर हार गये थे. रेखा मंडल उस राजनीतिक भूल के लिए अभी प्रश्चाताप करती हैं. उसके बाद उन्हें उस तरह का मौका कभी मिला नहीं.

क्रांतिकारी विचारों के थे धनी

मणींद्रनाथ मंडल का जन्म 17 अगस्त 1949 को धनबाद जिला के सरायढेला गांव के कोचाकुल्ही में एक साधारण परिवार में हुआ था. वह चार भाइयों में सबसे छोटे थे. पिता का नाम लंबोदर मंडल व माता का नाम बालिका देवी था. जिला स्कूल से मैट्रिक करने के बाद उन्होंने पीके राय मेमोरिय कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की. फिर कुछ दिन बाद एलएलबी की. मणींद्रनाथ जब युवा थे उस समय कोयलांचल में एके राय, बिनोद बिहारी महतो और शिबू सोरेन का आंदोलन शुरू हो चुका था. पहले वह सीपीआइ के कार्यकर्ता थे, बाद में वह एके राय के संपर्क में आये और शोषण के खिलाफ जारी मुक्ति संग्राम में खुद को झोंक दिया. उधर, बिहार कोलियरी कामगार यूनियन मजदूरों को एकजुट करने में जुटा था. उसी संगठन से जुड़ कर मणींद्रनाथ मंडल ने पीएमसीएच (अभी एसएनएमएमसीएच), बीसीसीएल और हिंदुस्तान स्टील (सेल), आइएसएम, सीएमआरआइ (अभी सिम्फर) के विस्थापितों की लड़ाई लड़ी. कल कारखानों में न्यूनतम मजदूरी और उनका उचित हक दिलाने के संघर्ष में खुद को पूरी तरह शामिल कर लिया.

कोयला भवन की जमीन पर हल चलवाया तो बीसीसीएल ने स्व मंडल की बनायी सूची के आधार पर नौकरी दे दी

वर्ष 73-74 यहां के लिए आंदोलन का वर्ष रहा. बीसीसीएल का राष्ट्रीयकरण हो चुका था. जिसकी जमीन चली गयी, उस विस्थापितों को नौकरी मिलनी इतनी आसान बात थी नहीं. झरिया, बाघमारा, बरोरा, इजे एरिया भौंरा, ब्लॉक दो, सिजुआ एरिया में बिहार कोलियरी कामगार यूनियन का संघर्ष जारी था. गांव के लोग जुड़ रहे थे. इधर, कोलियरी के कार्यालयों में जो जमीन गयी, उसके विस्थापितों को कंपनी कोई ध्यान नहीं

दे रही थी, क्योंकि यहां उत्पादन नहीं होता था. जिस वजह से प्रबंधन को बहुत परेशान नहीं होना पड़ता था. मणींद्रनाथ मंडल कोयला भवन के अंदर जो जमीन है, दामोदरपुर, सरायढेला, खरनागढ़ा, धैया, सुगियाडीह के किसानों को हल-बैल लेकर वहां जोतने चले गये. वह खुद हल चलाने लगे, साथ में सैकड़ों किसानों के हल चलने लगे. कोल इंडिया में सचिव हुआ करते थे एसके लाल. जिला प्रशासन व सीआइएसएफ के बूते की बात नहीं थी मणींद्र को रोकना.

कोल इंडिया के सचिव खुद आये और कारण पूछा. एसपी हुआ करते थे मैकू राम. वह बीसीसीएल का पक्ष ले रहे थे. लेकिन निडर मणींद्र ने कहा कि दलाली करने आया है, इसका जवाब देना होगा. उग्र लोगों ने एसपी की पिटाई कर दी. लेकिन जनगोलबंदी या फिर कार्रवाई करने के बाद माहौल बिगड़ने के भय से पुलिस ने किसी पर कोई केस नहीं किया. समझौता का आग्रह किया. दरअसल बिनोद बिहारी महतो और एके राय व शिबू सोरेन जैसे लोगों का साथ मणींद्र को साथ था. कुछ होने से स्थिति बिगड़ सकती थी. यह आंदोलन के दौरान संभवत: पहली घटना थी, जिसमें एसपी खुद चोटिल हो गये हों और प्रबंधन या प्रबंधन ने प्राथमिकी तक दर्ज नहीं करायी. उस समय नियमानुसार जिसकी एक एकड़ जमीन जाती उसे ही नौकरी मिलती थी. श्री लाल ने कहा कि कागजात जमा कराइये, नौकरी दे दी जायेगी. कोई देर नहीं होगी. उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं होगा. कोई एकड़ या डिसमिल नहीं, जिसकी जमीन नाम मात्र की भी गयी है, उन्हें नौकरी देनी होगी, तब ही आंदोलन रुक सकता है. इस बात को प्रबंधन ने मान लिया. लेकिन गरीबों के हितैषी मणींद्र यहीं नहीं रुके. कहा एक किसान की खेती होती है तो समाज के कई वर्गों को लाभ पहुंचता है. जैसे, ब्राह्मण, गोड़ाइत, नाई, रजवार, खेतिहर मजदूर. खेती बंद होने से वे कहां जायेंगे. इस पर बीसीसीएल प्रबंधन के पसीने छूटने लगे. इसके बाद आंदोलनकारी चरित्र के मणींद्र से ही पूछ गया उपाय. इस बार मणि बाबू ने इलाके के गरीबों की सूची बनायी. उनमें 149 लोगों को स्वीपर पद पर नौकरी के लिए सूची दी.

बिना कोई जांच पड़ताल किये रैयतों के अलावा सूची में उल्लेखित लोगों को बीसीसीएल में नौकरी दी गयी. इसके बाद इनका कद काफी बढ़ा.

पीएमसीएच, सीएमआरआइ और आइएसएम में भी इसी तरह का आंदोलन कर लोगों को स्थायी नौकरी दिलायी. सीएमआरआइ कैंपस के बाहर धैया बस्ती के लोगों की जो जमीन थी, चहारदीवारी हो जाने के कारण वहां खेती करने के लिए लोगों को जाने में काफी परेशानी होती. खेत में उपजे अनाज को खलिहान तक लाने का भी कोई रास्ता नहीं था. सीएमआरआइ प्रबंधन ने रास्ता दिया था. लोग परेशान हो गये थे. मणींद्रनाथ मंडल ने संघर्ष कर लोगों को स्थायी रास्ता दिलाया. सीएमआरआइ मेन गेट होकर लोग आसानी से हल-बैल लेकर आने-जाने लगे. उनके निधन के बाद प्रबंधन ने उसे फिर बंद करने का प्रयास किया है.

काफी संकरा रास्ता दिया गया है, केवल पैदल या मोटरसाइकिल पार करने लायक. दरअसल उनका संघर्ष इतना तीखा होता था कि अधिकारी वर्ग कांप उठता था. जोशीला भाषण देने और निडर व्यक्ति के कारण वह बिनोद बाबू और एके राय के काफी प्रिय हो चुके थे. आंदोलकारी चरित्र इनका विद्यार्थी जीवन से ही रहा. पीके राय में जब पढ़ाई करते थे (1969-70) तो स्थानीय विद्यार्थियों को काफी हेयदृष्टि से देखा जाता था. कुछ विद्यार्थी गुंडागर्दी करते थे. उसी समय वह ग्रामीण इलाके के विद्यार्थियों को साथ लेकर आंदोलन पर उतर आये थे. उनका कहना था कि हमारे गांव के निकट कॉलेज बना है तो फिर हम डर कर क्यों रहेंगे.

ऊंच-नीच व जातिवाद के घोर विरोधी रहे

जिस समय मणि बाबू राजनीति में सक्रिय हुए. उस समय गांवों में ऊंच-नीच और जात-पात, छुआछूत का काफी असर था. वाम विचारों के धनी स्व मंडल इससे काफी दुखी होते थे. गांव में जब बैठक करने जाते तो सबसे पहले अंतिम पंक्ति के व्यक्ति के यहां जाकर रुकते, बातें करते फिर उन्हीं लोगों को संगठित करते. अपने भाषण में वह साफ तौर पर कहते कि बहुसंख्यक लोग आज पीड़ित-शोषित हैं, उन्हें जगाने की जरूरत है. अपनी जाति (सूड़ी) का सर्वमान्य नेता रहने के बाद भी उन्होंने जातिवाद को कभी बढ़ावा नहीं दिया, संगठित जरूर किया. बतौर उदाहरण : उनके गांव के सामने है सरायढेला दास पाड़ा. उस समय शादी-ब्याह में दास (दलित) के घरों में कोई खाने नहीं जाता था और न ही निमंत्रण अपने यहां के लिए देता था. लेकिन समाजवादी विचारों के लैस स्व मंडल उस टोला के प्रह्लाद दास

के यहां एक शादी समारोह में अचानक पहुंच गये. साथ में गणपत महतो, खेदन महतो, बलदेव रजवार, परेश मंडल आदि को ले लिये. उस पंचायत में कोई पांडेय सरपंच हुआ करते थे. उन्हें गालियां देकर बोले कि तुम्हें जनता क्यों चुनेगी, यदि इस तरह मनुष्य को घृणा करोगे. प्रह्लाद दास यह देख कर चौंक गये. वह यह सोच नहीं सकते थे कि मणि बाबू आयेंगे. ससम्मान जो बना था, उन्हें परोसा गया और सभी ने खाया. उसके बाद से ही उस टोला के किसी भी आयोजन में वह जाकर भोजन करने लगे. इस प्रकरण के बाद हरिजनों के वह काफी प्रिय बन गये. इसी तरह वह कभी सांप्रदायिक विचारों दूर रहे. उनके घर हर धर्म, जाति के लोगों का आना-जाना लगा रहता था. कहते थे कि झारखंड अलग राज्य के संघर्ष में सांप्रदायिकता और जातिवाद बाधक साबित हो सकता है. ऐसे विचारों से मूल उद्देश्य की प्राप्ति नहीं हो सकती है.

सिद्धांतों से कभी नहीं किया समझौता

क्रांतिकारी विचारों से लैस होने के कारण उन्होंने कभी सिद्धांतों से समझौता नहीं किया. एक बार की बात है. अपनी जाति में नियम बनाया गया था कि कोई भी वर पक्ष 50 व्यक्ति से अधिक बराती लेकर कन्या पक्ष के यहां नहीं जायेगा. उस नियम को उन्होंने ही प्रस्ताव देकर समाज के सम्मलेन में पारित कराया था. उसी समय उनके भतीजे प्रेमनाथ मंडल (परान) का विवाह बरवाअड्डा मंडल पाड़ा के विद्युत अभियंता प्रभाष मंडल की बेटी रेणु के साथ तय हुई. बरात पहुंची. दरवाजा लगा कर नियमानुसार गिनती शुरू हुई. बरात पूरे 50 थे. लेकिन मणींद्र भी खुद गये थे, उन्हें लेकर संख्या 51 हो गयी. लेकिन नियमों के प्रति उनकी दृढ़ता देखिये, उन्होंने दुल्हन के यहां खाना नहीं खाया. लोगों ने अनुरोध किया, पर नहीं माने. बगल में उनके साथी मासस नेता गणेश चौरसिया के यहां जाकर समय बिताया. वहीं भोजन भी किया. इसी तरह अपने राजनीतिक-सामाजिक जीवन में कई ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं, जिनमें उन्होंने कभी लचीलापन आने नहीं दिया.

अपनी जाति को दिलायी पहचान

प्रखर मार्क्सवादी चिंतक एके राय चाहते थे कि झारखंड क्षेत्र की गरीब जातियां जो सदा से शोषित रही है, उसमें राजनीतिक-सामाजिक

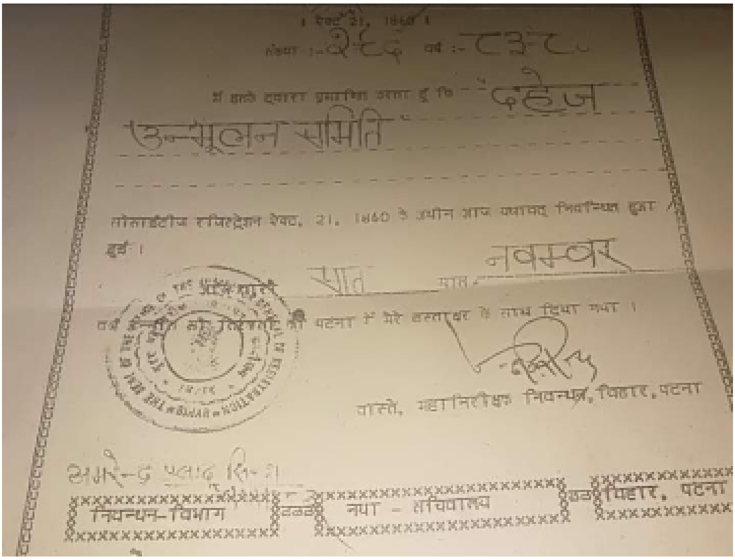

(ऐक्ट 21, 1860)

संख्या :- 266 वर्ष :- 83-84

मैं इसके द्वारा प्रमाणित करता हूं कि दहेज उन्मूलन समिति

सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट, 21, 1860 के अधीन आज यथावत् निबन्धित हुई।

सात मास नवम्बर

पटना में मेरे हस्ताक्षर से सत्य किया गया।

वास्ते, महानिरीक्षक निबन्धन, बिहार, पटना

निबन्धन-विभाग नया - सचिवालय बिहार, पटना

चेतना जगायी जाए. उस समय बिनोद बिहारी महतो के नेतृत्व में कुड़मी समाज का संगठन शिवाजी समाज का कार्यक्रम जोर-शोर से चल रहा था, जबकि सोनोत संथाल समाज शिबू सोरेन की अगुआई में संचालित था, जो आदिवासियों को शोषण के खिलाफ एकजुट कर रहा था. उस समय सूड़ी समाज की कोई अपनी पहचान नहीं थी.

खेती करना, संघर्ष से दूर रहना. शराब पीना, शराब बनाना, गांवों में दुकान चला कर परिवार की परवरिश करने से अधिक दूरदृष्टि समाज के गरीब लोगों के पास नहीं थी. यद्यपि इस समाज के कई परिवार धनबाद जिला में नामचीन थे. उनका अपना गाड़ी-घोड़ा व व्यवसाय था. सामाजिक उत्थान या फिर राजनीतिक भागीदारी से उन्हें कोई मतलब नहीं था. यह पीड़ा मणि बाबू को सताती थी कि जिस समाज में जन्म लिये हैं, वह जागरूक नहीं है. दहेज के कारण बेटी के पिता की कमर टूट रही थी. खर्चीली शादी, बाल-विवाह इस समाज में बहुत बड़ी कुरीति नहीं मानी जाती थी, (हालांकि अभी खत्म नहीं हुआ है). पूरी तरह पुरुष प्रधान इस समाज में वधू प्रताड़ना के मामले, परित्यक्त महिलाओं की संख्या हर गांव में थी. महिलाओं को शिक्षा नहीं देना इस समाज के लोग कुरीति नहीं समझते थे. कम ही लोग थे जो अपनी बेटियों को स्कूल-कॉलेज भेजते

थे. विधवा महिलाओं का पुनर्विवाह कराना शान के खिलाफ था. स्वयं शोषित व मेहनतकश वर्ग के रहने के बाद भी स्वभाव सामंत जैसा था. या फिर वैसे समाज या जाति के पिछलग्गु जैसा इस जाति का व्यवहार था, जो जाति आम जनता की नजर में सामंत या शोषक थी.

वैसे समय में आरएस मोर कॉलेज में अध्ययनरत शंकर मंडल समेत अन्य छात्र सामाजिक मुद्दों पर संगठित हो रहे थे. वह दौर ही था आंदोलन का. वैसे छात्रों को संगठित कर मणि बाबू ने दहेज उन्मूलन समिति नामक संगठन बनाया. इसके प्रथम वार्षिक अधिवेशन की तिथि उन्होंने रखी 23 मार्च. शहीद ए आजम भगत सिंह का शहीद दिवस. तिथि चयन में भी उन्होंने अपने विचारों को प्रदर्शित किया. एक क्रांतिकारी के शहादत दिवस पर सामाजिक संगठन का अधिवेशन. एक कुशल संगठनकर्ता होने के कारण इनके पीछे युवाओं की टोली चल पड़ी. पहले ही अधिवेशन में बिना दहेज लिये विवाह पतरिंग (गोविंदपुर) निवासी फटीक मंडल ने की. अधिवेशन में तेलो (बोकारो) निवासी ठाकुरदास मंडल को केंद्रीय अध्यक्ष बनाया गया, जबकि उस समय युवा अधिवक्ता के रूप में उभरे कंसारी मंडल महासचिव बनाये गये.

रास बिहारी मंडल (बोकारो) को चास कमेटी का चेयमरैन बनाया गया. फूलचंद मंडल भी सामजिक आंदोलन से जुड़े, जो बाद में सिंदरी से तीन बार विधायक चुने गये. सम्मेलन के मुख्य अतिथि बिनोद बिहारी महतो ने बिना दहेज के शादी करे के लिए फटीक मंडल को स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया. उसके बाद संगठन में धार आयी. पूरे छोटानागपुर-संथालपरगना और पश्चिम बंगाल के पुरुलिया, बर्दमान जिला में संगठन का विस्तार हुआ. थाना कमेटी, ग्राम कमेटी सशक्त थी. बिना दहेज के सैकड़ों युवाओं ने विवाह करना शुरू किया. बराती में मात्र 50 लोग ही जाते थे. हर साल 23 मार्च को विराट अधिवेशन धैया दुर्गा मंदिर प्रांगण में होने लगा. (अभी भी जारी है, लेकिन संगठन पहले जैसा धारदार नहीं है). लेकिन अगुआ होने के बाद भी खुद कभी किसी पद पर नहीं रहे.

जाति का मुद्दा संसद तक पहुंचाया

बिहार में सूड़ी जाति पिछड़ी जाति एनेक्सर दो में है. झारखंड बनने के बाद भी यही स्थिति रही. हाल ही में उसे एनक्सर एक में लाया गया है.

लेकिन बगल के राज्य पश्चिम बंगाल में यह जाति अनुसूचित जाति के अंतर्गत आती है. जब एके राय दूसरी बार (1980) सांसद बने तो मणींद्र मंडल के साथ एके राय ने इस जाति की स्थिति के बारे में विमर्श किया. फिर क़ॉमरेड राय ने अपने प्रश्न संख्या 4025 के माध्यम से संसद में 1980 में बंगाल की तरह बिहार में भी सूड़ी जाति को अनुसूचित जाति का दर्जा देने की मांग की. फिर केंद्र सरकार ने मुंगेरीलाल आयोग बनाया. आयोग ने भी पक्ष में रिपोर्ट दी. अलग झारखंड राज्य बनने के बाद झारखंड की सूड़ी जाति उस मांग के लिए संघर्षरत है. लेकिन मणींद्र के रहते जो काम हुआ, उसके बाद वह नहीं हो पाया. इतना ही नहीं, दहेज उन्मूलन समिति गठन बाद सभी पिछड़ी जातियों ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संगठन बनाना उसी दौर में शुरू किया. तैलिक कल्याण समिति, लोहार समाज, मोमिन समाज, नाई समाज, मयरा समाज, गोप समाज, बनिया समाज आदि संगठन बने.

27 जाति समाज के अध्यक्ष चुने गये

वह यहीं नहीं रुके. उस समय संचालित 27 जाति समाजों का मणींद्रनाथ मंडल के नेतृत्व में 1983 में त्रिदिवसीय सम्मेलन मंदाकिनी उच्च विद्यालय बड़ा जमुआ, बरवाअड्डा में चला. फैसला किया गया कि हर समाज में दहेज ने कोढ़ का रूप ले लिया है. जो भी समाजविरोधी व्यक्ति अपने पुत्र के विवाह में दहेज लेगा या बेटी का बाप दहेज देगा, उसका दंड केवल अपनी जाति के लोग नहीं, बल्कि सभी समाज के लोग मिल कर देंगे. 27 जातियों का इसको लेकर समन्वय समिति बनायी गयी. सभी लोगों ने मिल कर मणींद्रनाथ मंडल को अध्यक्ष बनाया. यद्यपि वह संयोजक रहना चाहते थे. इस तरह वह अब सभी समाज के प्रिय होने लगे थे. वह ऐसा पहले नेता थे जिन्होंने सभी समाज को संगठित करने में संघर्ष किया. अपनी जाति तक में ही सीमित नहीं रहे.

जाति सम्मेलन में पारित कराया अलग झारखंड राज्य को समर्थन करने संबंधी प्रस्ताव

अलग झारखंड राज्य के प्रति उनका लगाव किस कदर था, वह इस बात से ही पता चलता है कि अपने जाति संगठन के 12वें महाधिवेशन (1992) में उन्होंने पारित कराया कि सूड़ी, मंडल जाति अलग राज्य का

समर्थन करती है और जो राजनीति संगठन अलग राज्य का विरोध करेगी, उसे इस समाज का समर्थन नहीं मिलेगा. यह कहना जितना आसान अभी लग रहा है, उस समय नहीं था. उस समय अलग राज्य की मांग करना यानी झामुमो या मासस का सदस्य होना था. और सूड़ी जाति में कुड़मी या आदिवासी की तरह वैसी बात थी नहीं कि लोग आंख मूंद कर झामुमो या मासस की मांग का समर्थन कर दे. लेकिन बहस व अपने भाषण से लोगों को यह समझाने के लिए वह सक्षम हुए कि यह किसी दल की मांग आने वाले दिनों में नहीं रह जायेगी. सभी दलों को मजबूरन अलग राज्य की मांग करनी ही पड़ेगी. इसलिए क्यों नहीं हम इमसें आगे आएं. उनकी दूरदृष्टि सच साबित हुई. अलग राज्य का प्रखर विरोधी राष्ट्रीय दल या बिहार में सत्तासीन दल को अलग राज्य की मांग का समर्थन करना पड़ा.

अलग झारखंड राज्य के खिलाफ बोलने वाले मुख्यमंत्री पर सीधी कार्रवाई करने वाले राज्य के पहले नेता

अलग राज्य की मांग को लेकर चारों ओर आंदोलन हो रहा था. बिहार में कांग्रेस की सत्ता जाने के बाद झारखंड मुक्ति मोर्चा व वाम दलों के सहयोग से लालू यादव मुख्यमंत्री बन गये थे. झामुमो एक सहयोगी दल होने के कारण लोगों की उम्मीद बढ़ गयी थी कि लालू यादव बिहार से झारखंड को अलग करने के पक्षधर होंगे. लेकिन वह इसके पक्ष में नहीं थे. वह सीधे कहते थे झारखंड हमारी लाश पर ही बनेगा. यह बात यहां के लोगों को खटक रही थी. भाजपा भी उस समय राज्य की मांग का समर्थन कर रही थी, वनांचल के रूप में.

झारखंड की मांग इतनी प्रखर हो चुकी थी कि झारखंड में क्षेत्र में मजबूत स्थिति में रही भाजपा को प्रतिक्रिया में वनांचल के रूप में अलग राज्य की मांग करनी पड़ी थी. अलग राज्य के समर्थन किये बिना यहां पांव पसारना मुश्किल होने लगा था. उसी दौर में लालू यादव का बयान सभी को खटकता था. बात 1992 की है. बरवाअड्डा के थानेदार श्याम मोहन सिन्हा के खिलाफ लोग आंदोलित थे. गुरुजी की सभा बरवाअड्डा पुराना मोड़ में होने वाली थी. तारीख थी 19 अक्तूबर 1992.

नेताओं का भाषण चल रहा था. दिशोम गुरु शिबू सोरेन का इंतजार किया जा रहा था. उसी समय तोपचांची से सड़क मार्ग से मुख्यमंत्री लालू

यादव का काफिला पार हो रहा था. सभास्थल के पास जैसे ही लोगों को लगा कि सीएम का काफिला है. मणींद्र नाथ ने कहा कि बदला लेने का इससे अच्छा मौका और नहीं मिल सकता. हमला करो. हालांकि वहां मौजूद कई नेताओं ने उन्हें रोका, लेकिन साहसी मणींद्र ने लालू यादव की कार पर पथराव कर दिया. देखते ही देखते भीड़ ने भी पथराव किया. पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया. गोलियां भी चलायी. पुलिस की मार से तोपचांची मानटांड़ के टेकलाल महतो और काशीटांड़ बरवाअड्डा के सुलेमान अंसारी के पैर टूट गये. पुलिस ने गोलियां चलायी. मणींद्र पकड़ाये नहीं. इस घटना के बाद पूरे देश में अलग राज्य की मांग सुर्खियों में आ गयी. उसके बाद उस मामले में दर्जनों नेताओं पर मुकदमा दर्ज हुआ. मणींद्रनाथ मंडल को जेलयात्रा करनी पड़ी.

अभी भी याद किये जाते हैं मणींद्रनाथ

उनकी हत्या के इतने दिनों के बाद भी आज भी मणींद्रनाथ मंडल एक अग्रणी झारखंड आंदोलनकारी, विस्थापितों व सामाजिक पुनरुद्धार के नेता के रूप में याद किये जाते हैं. उनके आवास के निकट शहीद वेदी बनायी गयी है. उनके नाम पर स्टील गेट सरायढेला में मणींद्र बाजार लगता है. धैया मंडल बस्ती के पास उनके नाम पर वहां के युवकों ने एक द्वार शहीद

मेमको मोड़ में मणींद्र मंडल की प्रतिमा का अनावरण करते विधान सभा के स्पीकर रबीन्द्र नाथ महतो, साथ में मंत्री दर्जा प्राप्त विनोद पांडेय, फागू बेसरा व समाजसेवी गौतम मंडल

मणींद्रनाथ मंडल द्वार बनाया है. जमुआटांड़ कतरास में उनकी मूर्ति लगायी गयी है. धनबाद–बरवाअड्डा रोड पर मेमको मोड़ नया उपायुक्त कार्यालय के पास झामुमो द्वारा नामित मणींद्रनाथ मंडल चौक पर उनके शहादत दिवस 17 अक्तूबर 2023 को विधानसभा के स्पीकर रबींद्रनाथ महतो ने आदमकद मूर्ति का अनावररण किया. सूड़ी समाज कल्याण समिति और झामुमो के संयुक्त तत्वावधान में भव्य आयोजन किया गया था. नामकरण के बाद भी इस चौक पर झारखंड विरोधी ताकतें नहीं चाहती थी कि जिला के इस प्रमुख चौक पर मणींद्र की मूर्ति लगे. इतना ही नहीं, लिखे गये बोर्ड पर काली पोत दी गयी, लेकिन मणींद्र को चाहने वाले लोगों की कमी नहीं है. झामुमो व समाज के युवाओं की एकजुटता ने बदमाशों की इच्छा पर पानी फिर दिया. अंतत: सरकार के स्पीकर व मंत्री दर्जा प्राप्त फागू बेसरा व विनोद पांडेय ने आकर मूर्ति अनावरण किया. विधायक मथुरा प्रसाद महतो भी साथ थे।

बिनोद बाबू ने छोड़ दी थी जीती हुई सीट

मणींद्रनाथ मंडल के कद का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सर्वमान्य नेता बिनोद बिहारी महतो ने अपनी जीती हुई टुंडी सीट 1985 साल में मणींद्रनाथ मंडल को टिकट दिया और खुद सिंदरी सीट से लड़े. लेकिन स्व मंडल मामूली अंतर से हार गये. लोग कहते हैं कि झामुमो के उस समय दो गुट होने के कारण यह सीट मणींद्र ने नहीं निकाल पायी. झामुमो (शिबू गुट) ने उस चुनाव में निरसा के सुरेंद्रनाथ तिवारी को टिकट दे दिया. आदिवासी बहुल टुंडी में तीर–धनुष चुनाव चिह्न सुरेंद्र नाथ के साथ होने के कारण आदिवासियों का मत उन्हें मिल गया, और स्व मंडल हार गये, यद्यपि कुड़मी समाज का वोट थोक भाव से मणींद्र को मिला था. उसके बाद 1990 में मणींद्र को धनबाद विधानसभा क्षेत्र से लड़ाया गया, जहां स्थानीय मानसिकता वाले उम्मीदवार को जीत पाना टेढ़ी खीर थी और वह हार गये. धनबाद से अभी तक झामुमो–मासस या आजसू जैसे अलग राज्य समर्थक दल का परचम नहीं लहर पाया.

◆◆◆◆◆

14 अप्रैल 2000 : तेज-तर्रार विधायक गुरुदास चटर्जी को माफियाओं ने मार डाला

पुरुलिया को बंगाल का झारखंड माना जाता है. बंगाल, मध्यप्रदेश, ओड़िशा व बिहार के पठारी क्षेत्र संथाल परगना व छोटानागुपर को मिला कर जब अलग राज्य की मांग की गयी थी तो उसमें पुरुलिया जिला भी शामिल था. अभी भी वहां की भौगोलिक-सामाजिक स्थिति धनबाद व बोकारो जिला से मिलती-जुलती है. रहन-सहन, खान-पान, सभ्यता-संस्कृति का मेल-जोल है. पुरुलिया जिला 1956 तक बिहार का हिस्सा रहा.

धनबाद व पुरुलिया मिला कर मानभूम जिला था. इसीलिए पश्चिम बंगाल का झारखंड कहा जाता है पुरुलिया को. उसी मानभूम जिला जिला के पाड़ा थाना क्षेत्र के चारपेटिया के एक जमींदार परिवार में 20 मार्च 1950 में जन्म हुआ था गुरुदास चटर्जी का. हालांकि स्वगीय गुरुदाश के रिश्तेदार सुसांतो मुखर्जी का कहना है गुरुदास का मूल आवास रांची के राहे प्रखंड के राहे गांव में था। उनके पूर्वज चारपेटिया में ननीहाल में जाकर बस गये थे. पिता का नाम था राधिकानाथ चटर्जी. उनके बड़े रामदास चटर्जी इसीएल मुगमा एरिया में नौकरी करते थे. ऐसे तो छात्र जीवन से ही गुरुदास चटर्जी का तेवर एक विद्रोही के रूप में था. मैट्रिक पास करने के बाद बड़े भाई के साथ निरसा आ गये. उस समय कोलियरियों का राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ था. निजी कंपनी के लायकडीह सेलेक्टेड खदान में बतौर जेनरल मजदूर वह काम कने लगे. बहुत दिन काम करने के बाद जैसे ही राष्ट्रीयकरण हुआ, इसीएल मुगमा एरिया ऑफिस में वह बतौर क्लर्क कार्यरत रहे. बाद में राजपुरा कोलियरी में स्थानांतरण क्लर्क के रूप में ही हुआ. इसी दौरान इंडियन पीपुल्स फ्रंट (आइपीएफ) जो बाद में जाकर भाकपा माले बना. तत्कालीन महासचिव विनोद मिश्र से उनकी निकटता बढ़ी. विनोद मिश्र जब

भूमिगत थे तो गुरुदास चटर्जी के आवास में आकर रहते थे. विनोद मिश्र से ही उन्हें वामपंथ की शिक्षा मिली. एक जुझारू व्यक्तित्व के रूप में अपनी पहचान बनाना शुरू किया. उस दौरान एके राय के पक्का सहयोगी रहे कृपा शंकर चटर्जी निरसा के मासस से विधायक हुआ करते थे. एके राय के नेतृत्व वाली सीटू से संबद्ध बिहार कोलियरी कामगार यूनियन (बीसीकेयू) एक लड़ाकू यूनियन के रूप में मजदूरों के बीच पहचान बना चुकी थी. इसीएल में प्रबंधन परस्त यूनियनों के खिलाफ मजदूरों ने बीसीकेयू को अपना हितैषी मान लिया था.

मजदूरों के बीच सूदखोरों का आतंक था. सूदखोर-प्रबंधन व यूनियन नेता का गठबंधन हुआ करता था. उससे मुक्ति के लिए बीसीकेयू ने कई संघर्ष किया तो इसीएल के ग्रामीण क्षेत्र के मजदूर बीसीकेयू से जुड़ते गये. उन्हें हक भी यूनियन दिलाती रही. गुरुदास चटर्जी को भी लगा कि कोयला क्षेत्र के श्रमिकों के उत्थान के लिए बीसीकेयू में शामिल हो जाना चाहिए. बीसीकेयू से जुड़े नेता की पहचान गांव में भी होती थी, क्योंकि अधिकांश मजदूर गांव के ही थे. यह अलग बात है कि अन्य मजदूर भी इस संगठन से जुड़े. एके राय-बिनोद बिहारी महतो, एसके बक्शी जैसे दिग्गज इस संगठन के नेता थे, इसलिए पहचान बनाने में कोई परेशानी नहीं होती थी. गुरुदास चटर्जी एके राय की ईमानदारी और व्यक्तित्व से काफी प्रभावित थे. इसलिए बीसीकेयू के रास्ते में मासस की राजनीति करने लगे. जुझारु

तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू यादव के साथ एक सभा में गुरुदास चटर्जी

व्यक्तित्व के कारण लोगों में बहुत जल्द लोकप्रिय भी होने लगे. इधर, 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद उपजी सहानुभूति लहर में एके राय वर्ष 1984 का लोकसभा चुनाव हार गये. कांग्रेस का बोलबाला बढ़ने लगा. उसके बाद 1985 में बिहार विधानसभा का चुनाव आया. निरसा क्षेत्र में एके राय के बाद सबसे दिग्गज नेता हुआ करते थे केएस चटर्जी, लेकिन उन्होंने 85 के चुनाव के समय पार्टी बदल ली. बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र व तत्कालीन केंद्रीय मंत्री प्रणव मुखर्जी केएस चटर्जी की निकटता बढ़ी. वह कांग्रेस में चले गये. फल यह हुआ कि 85 में केएस चटर्जी कांग्रेस से निरसा से विधायक चुने गये. वाम दलों के संयुक्त उम्मीदवार एसके बक्शी को हार का सामना करना पड़ा.

हड़ियाजाम कोलियरी में मैनेजर द्वारा गलत मुकदमा किया जाना टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ

केएस चटर्जी न केवल चुनाव में जीत हासिल की, बल्कि मासस व बीसीकेयू के तमाम कार्यकर्ताओं को भी साथ ले गये. मासस के समक्ष संकट की स्थिति आ गयी. उसी समय निरसा में डॉक्टर-मास्टर (डॉ रहमतुल्ला व आगम राम) की जोड़ी की खूब ख्याति थी. एके राय सोच में पड़ गये कि कैसे निरसा को संवारा जाए. उस समय इसीएल मुगमा एरिया दो भागों में बंटा था. निरसा एरिया व कापासारा एरिया. दोनों ही एरिया में अध्यक्ष आगम राम बने, जबकि निरसा एरिया में सचिव डॉ रहमतुल्ला व कापासारा एरिया में गुरुदास चटर्जी सचिव बनाये गये. उसके बाद गुरुदास मजदूर आंदोलन में जम गये. रोज निरसा अवस्थित पार्टी कार्यालय आते और रणनीति बनाते. अपने एरिया को छोड़ कर पूरे इसीएल व बीसीसीएल एरिया 12 सीवी एरिया के मजदूरों को संगठित करने में अहम भूमिका निभाने लगे. हड़ियाजाम कोलियरी में मैनेजर हुआ करते थे पीआर शर्मा. काफी रुतबा था उनका. खुद पिस्टल रखते.

झारखंड अलग राज्य के समर्थकों से घृणा करते. मजदूरों पर भी जुल्म ढाते. सूदखोरों को संरक्षण देते और मजदूरों की गाढ़ी कमाई अपनी जेब में भरते. इसका विरोध करने की हिम्मत केवल उस समय बीसीकेयू के पास ही थी. बीसीकेयू ने मैनेजर के खिलाफ एक वृहत सभा हड़ियाजाम

कोलियरी में रखी. सामंती स्वभाव के मैनेजर ने पिस्टल से गोली चला दी, जो गोली जाकर मासस कार्यकर्ता सुकेश मुखर्जी को लग गयी. उसके बाद उत्तेजित भीड़ ने मैनेजर के साथ मारपीट कर दी. फिर भगदड़ मच गयी. मैनेजर ने फिर गोलियां चलायी. उतना ही नहीं, मैनेजर ने चुन-चुन कर मासस व बीसीकेयू नेताओं पर मुकदमा दर्ज कर दिया. सत्ता का संरक्षण मैनेजर को था. डॉक्टर, मास्टर, सुकेश के अलावा गुरुदास चटर्जी को भी अभियुक्त बना दिया गया. पुलिस सभी को खोजने लगी. गैरजमानतीय धाराओं में मैनेजर पर जानलेवा हमला, सरकारी कार्य में बाधा जैसी धाराएं लगायी गयी. यह घटना गुरुदास के जीवन का टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ. झूठा मुकदमा के खिलाफ मासस ने निरसा में एक विराट सभा की. उसमें गांव के लोगों की भी भागीदारी रही. बताया जाता है कि उस समय गांवों में प्रबंधनपरस्त नेता के खिलाफ जो आक्रोश था, उसे गुरुदास ने समेटा और अपनी हैसियत को दिखायी. उसी सभा में वह बतौर लीडर बन कर उभरे. लोग निरसा में केएस चटर्जी के विकल्प के रूप में देखने लगे.

उसी दौरान 1989 में लोकसभा का चुनाव हुआ. उसी वर्ष राजनीति में राम' का आगमन हुआ. अयोध्या में मंदिर निर्माण के लिए भाजपा ने पूरे देश में रामशिला पूजन अभियान चलाया. धनबाद भी अछूता नहीं रहा. लेकिन धनबाद में भाजपा की नहीं चली. उस साल एके राय फिर सांसद बने. उसके कुछ ही दिन बाद 1990 में फिर बिहार विधानसभा का चुनाव आया. बिनोद बाबू सिंदरी से विधायक हुआ करते थे, जिन्होंने 90 में टुंडी से फिर चुनाव लड़े. आनंद महतो को उनकी अपनी सीट सिंदरी से छोड़ दी गयी. बिनोद बाबू के जीवित रहते तक मासस व झामुमो को लोग एक ही समझते थे. हालांकि शिबू सोरेन से मतांतर पहले ही हो चुका था. लेकिन कोयला क्षेत्र में बिनोद बाबू उनसे अधिक लोकप्रिय थे. इसलिए मासस मजबूत भी थी. बात आयी निरसा से मासस के टिकट से उम्मीदवार चयन की. एके राय के बाद दूसरे दर्जे के कई नेता वहां एक जैसे थे.

आगम राम, डॉ रहमतुल्ला, दिलीप मंडल, तारापद धीवर आदि कई थे जो गुरुदास के समकक्ष थे. पार्टी के समक्ष परेशानी खड़ी हो गयी कि आखिर टिकट किसे दिया जाए. लगभग सभी ने दावा पेश किया. लेकिन सर्वसम्मति से गुरुदास चटर्जी को मासस ने टिकट दिया. मासस के इस

फैसले से उपरोक्त नेताओं का लगाव मासस से कम होता गया. उक्त चुनाव.में केएस चटर्जी जैसे दिग्गज को हराना और निरसा में पार्टी को पुनर्स्थापित करना कोई खेल का काम नहीं था. चारों ओर से गुरुदास घिर गये. लेकिन पार्टी की गुटबाजी और केएस जैसे विरोधी के चक्रव्यूह को तोड़ कर जनता को अपने संघर्ष के बल पर गुरुदास चटर्जी ने उक्त चुनाव जीत लिया. इसके साथ ही मासस ने राहत की सांस ली.

निरसा में खोयी प्रतिष्ठा तो पायी ही, आंदोलनों को बढ़ाने वाला एक संघर्षशील साथी भी पार्टी को मिला. इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़ कर कभी नहीं देखा. गरीबों के एक हितैषी नेता के रूप में उभर कर सामने आये. एके राय के बाद सबसे तेज तर्रार नेता के रूप में अपनी छाप बनायी. उसी समय बिहार में लालू यादव के नेतृत्व में राष्ट्रीय मोर्चा-वाम मोर्चा की सरकार बनी. झामुमो समेत मासस ने सामाजिक न्याय के सवाल पर लालू यादव को समर्थन किया. लालू से उनकी निकटता काफी बढ़ी. दक्षिण बिहार (अब झारखंड) लालू यादव से सबसे नजदीकी नेता के रूप में लोग जानने लगे. लालू यादव ने उन्हें बिहार सरकार में मंत्री बनने का ऑफर दिया. लेकिन एके राय और आनंद महतो जैसे सैद्धांतिक नेताओं के संसर्ग के कारण उन्होंने भी मंत्री बनने से इनकार कर दिया. वह कहते थे कि मंत्री बन जाने से उनका सर्वहारा वर्ग या उत्पादक वर्ग के लोगों से संपर्क हट जायेगा. गरीबों से जो सीधा लगाव अभी है, वह नहीं रह पायेगा, इसकी हानि संगठन को होगी, भले ही उनका व्यक्तिगत विकास हो जायेगा.

दरअसल जमींदार परिवार में जन्म लेने के बाद भी उनका लगाव जमींदारी के खिलाफ हुए संघर्ष में शामिल लोगों के साथ रहा. यहां तक कि उन्हें जो जमीन अपने बंटवारे की मिली थी, उसे उस गांव के गरीबों में बांट दिया था. कहते थे जो खुद खेती नहीं करते, उन्हें जमीन रखने का हक नहीं है. उसके बाद वह कोयलांचल में छा गये. हर समय सुर्खियों में रहने लगे. जनगोलबंदी की राजनीति करने के कारण निरसा से इतर उन्होंने अपनी पहचान बनायी. बोकारो, धनबाद, चंदनकियारी, गिरिडीह, बाघमारा, सिंदरी सभी जगह एक क्रांतिकारी नेता के रूप में जाने जाने लगे. इसके कारण गांव के शोषित, पीड़ित व शहरी क्षेत्र के श्रमिकों के बीच वह काफी लोकप्रिय होने लगे. जीटी रोड के किनारे चिरकुंडा से लेकर राजगंज तक जितनी भी औद्योगिक इकाइयां रही, सभी मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी, पीएफ, इएसआइ

का लाभ दिलाने के संघर्ष में खुद को समाहित कर लिया. इसके कारण शहर के पूंजीपतियों व गांव के जमींदारों के अलावा प्रतिक्रियावादी ताकतों की आंखों की वह किरकिरी भी बनने लगे. उस समय जारी पुलिस जुल्म के खिलाफ संघर्ष कर लोगों को न्याय दिलाया. इस वजह से प्रशासन-प्रबंधन व माफिया गठजोड़ के वह निशाने पर आ गये. कई तरह का षडयंत्र रच कर चुनाव में उन्हें पराजित करने का प्रयास किया. लेकिन, समाजवादी विचारों के धनी गुरुदास को पूंजीवाद कभी अपने जाल में नहीं फंसा सका. 1995 में फिर बिहार विधानसभा का चुनाव आया.

पार्टी ने टिकट भी दिया. लग रहा था कि इस बार शायद नहीं वह जीत पायेंगे, लेकिन जनता के बीच इस तरह से वह जुड़े थे कि किसी की नहीं चली और पूरे जिला में सबसे आसान जीत उन्होंने हासिल की. अब वह कोयलांचल में एक स्थापित नेता बन चुके थे. कद बड़ा हो चुका था. लेकिन खुद को कभी ऊंचा नहीं समझा. अपने विधानसभा क्षेत्र में पंचायती तक में वह पहुंच जाते. पति-पत्नी विवाद तक की सुलह वह सशरीर उपस्थित होकर करते. आज की तरह विधायक मद में उस तरह राशि भी नहीं थी कि कार्यकर्ताओं को देकर संगठन को जीवित रखते. इसके बाद भी उनके दरवाजे से कभी कोई खाली हाथ नहीं लौटा. इसीएल की राजपुरा कोलियरी के क्वार्टर में ही रहे.

समाजमुखी राजनीति करने के कारण कभी व्यक्तिमुखी नहीं हुए. न घर बनाया और न जमीन खरीदी. न सुरक्षा गार्ड रखा और न ही दिखावा के लिए मंडली साथ लेकर चलते. खुद अपनी बुलेट चला कर घटनास्थल हो या सभास्थल पहुंच जाते और लोगों की वाहवाही लूट कर मैदान मार लेते. उस समय मोबाइल का भी जमाना नहीं था. निरसा कोयलांचल की काली धरती में खुद को बेदाग रखा, यही उनके लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी. लेकिन वर्ग संघर्ष पर विश्वास रखने वाले गुरुदास चटर्जी के संघर्ष के कदम यहीं रुके नहीं. कोयला माफिया के खिलाफ आग उगलने लगे. निरसा में कोयला माफिया-नेता व प्रशासन के नापाक गठबंधन को यह नागवार गुजरने लगा. लेकिन जनता की ताकत के भरोसे व अपने अवनरत संघर्ष के बल पर वह उनके इरादों पर पानी फिरते रहे. फिर वर्ष 2000 के चुनाव में भी निरसा की जनता ने उनके नाम ताजपोशी की.

आदिवासी युवक को पंप का मालिक बनाया

मार्क्सवाद के वर्ग संघर्ष को वह सरजमीन पर उतारने पर विश्वास रखते थे. पिंड्राहाट पंचायत के कानाडीह गांव का अन्नलाल किस्कू. एक बेरोजगार युवक. सीधे-साधे आदिवासियों झारखंड क्षेत्र में चालाक वर्ग द्वारा अपने हित के लिए बेवकूफ बनाना उस समय कोई नयी बात थी नहीं. कोयला तस्करी में कुख्यात निरसा का एक परिवार ने अन्नलाल किस्कू को उसी भावना से इस्तेमाल किया. केंद्र सरकार से पेट्रोल पंप का लाइसेंस अन्नलाल के नाम बनवाया गया. निरसा शासनबेड़िया जीटी रोड (निरसा चट्टी) में पंप खोला गया. लोग यह नहीं जानते थे कि यह पंप आदिवासी युवक का है. वह बतौर कर्मचारी वहां कार्यरत था, जबकि कोयला तस्कर का परिवार पंप चला रहा था. अन्नलाल जब समझ पाया कि उनका हक मारा जा रहा है तो जिला व राज्यस्तर के सभी नेताओं से उन्होंने आग्रह किया कि उसे लाभांश दिलाया जाए. लाभ में उसका भी भागीदारी हो. लेकिन जिस परिवार ने उसे कर्मचारी बना कर रखा था, उस परिवार के खिलाफ किसी राजनेता ने आगे आने की हिम्मत नहीं जुटायी. पीड़ित पक्ष भटकता रहा. थक-हार कर वह अपने स्थानीय विधायक गुरुदास चटर्जी के पास गये और अपनी बात रखी. हिम्मतवाले गुरुदास ने बिना कोई लाभ-हानि का परवाह किये इस पर पहल की और अन्नलाल को पंप का मालिकाना हक दिलाया. उसके बाद मालिक परिवार से गुरुदास की अदावत बढ़ गयी. वह यहीं नहीं रुके. कोयला चोरी की अकूत कमाई के कारण निरसा में हो रहे अन्याय-अत्याचार के खिलाफ कई आंदोलन किये. कोयला माफियाओं का वह प्रत्यक्ष दुश्मन के रूप में सामने आ गये.

अलग राज्य के हिमायती, बेसहारों का सहारा

बेसहारों का सहारा के रूप में लोग उन्हें जानने लगे. सुबह छह बजे से उनके दरवाजे पर लोगों की भीड़ लगती थी, लगता था कि यह सरकारी दफ्तार है. वह नि:संकोच व बिना आलस किये लोगों की बात सुनते और अधिकारियों से संपर्क कर पीड़ितों को हक दिलवाते. यह उनकी दिनचर्या में शामिल हो गया था. हालत इस कदर हो गयी थी कि निरसा विधानसभा क्षेत्र में किसी भी थाना में बिना गुरुदास से परामर्श किये पुलिस अधिकारी प्राथमिकी तक दर्ज नहीं कराते. यदि करा भी देते तो मुकदमे को कोर्ट तक नहीं भेजते. हर मामले में

उनकी दखलअंदाजी होती. भले ही पुलिस की नजर में यह परेशानी भरा काम था, लेकिन जनता की नजर में वह मसीहा के रूप में उभर चुके थे. वह स्वयं थाना, प्रखंड कार्यालय हो या समाहरणालय पीड़ित को लेकर आते और सामने बैठ कर अधिकारी के समक्ष रूबरू कराते. संभवत: 1994 की बात है बरवाअड्डा थाना क्षेत्र और पीरटांड़ थाना क्षेत्र के सुदूर गांव के निर्दोष लोगों को प्रशासन नक्सली होने का आरोप लगा कर धर-पकड़ कर रहे थे. दोनों ही थाना क्षेत्र उनके विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आते हैं. लेकिन बिना सीमा का ख्याल किये जैसे ही उन्हें सूचना मिली. लोगों की पीड़ा जानने वह उन क्षेत्रों में बिना कोई सुरक्षा के पहुंच गये, यद्यपि प्रशासन उन्हें जाने से रोकता रहा. लेकिन उन्होंने गांवों में जाकर बैठक की. फिर प्रशासन से कहा कि अपना पिंड छुड़ाने के लिए प्रशासन निर्दोष गरीबों को पकड़ना बंद करे. बयान दिया कि एक भी ग्रामीण को यदि परेशान किया गया तो राज्य सरकार को दिया गया वह समर्थन वापस ले लेंगे. पहले मुझे गिरफ्तार किया जाए, मैं नक्सली हूं, क्या है नक्सल. सताये हुए गरीब पुलिस के भय से नक्सली बन रहे हैं. इस तरह एक गर्म मुद्दे को उन्होंने शांत कर दिया और लोगों ने राहत की सांस ली.

अलग राज्य के रहे कट्टर समर्थक

अलग झारखंड राज्य का आंदोलन उस समय सभी क्षेत्रीय दल अपने-अपने स्तर से लड़ कर रहे थे. वाम दलों का एक कन्वेंशन हजारीबाग में किया गया. उसमें अलग झारखंड राज्य के संघर्ष को मुकाम तक पहुंचाने के लिए वाम जनवादी संघर्ष समिति का गठन किया गया. समिति का चेयरमैन गुरुदास चटर्जी को बनाया गया जबकि महासचिव बगोदर के भाकपा माले के विधायक महेंद्र सिंह को बनाया गया. फिर समिति ने अलग राज्य के लिए कई आंदोलन किये. वह किस कदर अलग राज्य के हिमायती थे वह इससे स्पष्ट हो जाता है कि जब दिशोम गुरु शिबू सोरेन बाबूलाल मरांडी के हाथों दुमका से चुनाव हार गये तो पूरे छोटानागपुर में तहलका मच गया. यह केवल एक हार नहीं थी, बल्कि आदिवासी समाज में झामुमो के अभेद्य दुर्ग में एक दूसरे आदिवासी नेता के उभरने का भय झामुमो को सताने लगा था. गुरुजी राज्यसभा के लिए झामुमो के उम्मीदवार बने. भाकपा से गया सिंह उम्मीदवार थे. लेकिन गुरुदास चटर्जी व सिंदरी से मासस विधायक आनंद महतो ने वाम दल भाकपा के उम्मीदवार को समर्थन न देकर झामुमो के शिबू सोरेन के पक्ष

में मतदान किया और शिबू सोरेन को राज्यसभा भेजा. उसके बाद भाकपा नेताओं की मासस से मनमुटाव हुआ. उस पर गुरुदास चटर्जी व आनंद महतो का स्पष्ट मत था कि भाकपा अलग राज्य का समर्थन नहीं करती है, इसलिए हम उन्हें समर्थन नहीं दे सकते.

गुरुदास के आंदोलन के भय से बीसीसीएल ने दी नि:शुल्क बिजली

बीसीसीएल के पश्चिमी झरिया क्षेत्र मुनीडीह का विस्थापित गांव है धोबनी, धनडाबर आदि. राष्ट्रीयकरण के समय उन गांवों में बीसीसीएल बिजली मुहैया कराता था. लेकिन बाद के प्रबंधन ने बंद बिजली आपूर्ति बंद कर दी. इधर, राज्य सरकार ने भी बीसीसीएल का इलाका कह कर बिजली देने की पहल नहीं की. शहर का गांव रहने के बाद भी वहां के लोग अंधेरे में रहने लगे. आज बिजली जितनी आसान से गांवों में चली जाती है या ट्रांसफॉर्मर बन जाता है, बिहार के समय उस तरह की बात नहीं थी. उस समय तो बिजली गांवों में पहुंचाना सुर्खियों में रहने का विषय था. धनबाद विधानसभा क्षेत्र में पड़ते हैं उक्त सारे गांव.

गांव वाले चारों ओर अधिकारियों का चक्कर लगाते-लगाते थक चुके थे. फिर लोग वहां युवा नेता के रूप में उभरे उस समय मार्क्सवादी युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष हरि प्रसाद पप्पू के नेतृत्व में लोग निरसा जाकर गुरुदास चटर्जी से मिले. चुनाव का वर्ष था (2000). समय था अपने इलाके में समय देने का. लेकिन वह धोबनी गये और धरना पर बैठ गये. सात दिनों तक धरना पर बैठे. जीएम समेत सभी अधिकारियों की बिजली काट दी गयी. कहा कि जिसकी जमीन गयी है, वह अंधेरा में और अधिकारी का भवन चकाचक ऐसा नहीं चलेगा. बीसीसीसीएल को लगा कि चुनाव का नामांकन है, वह निरसा चले जायेंगे, आंदोलन खत्म हो जायेगा. लेकिन गुरुदास चटर्जी ने घोषणा कर दी कि वह मुनीडीह से ही निरसा का चुनाव लड़ेंगे, यहां से हिलेंगे नहीं.

बीसीसीएल को झुकना पड़ा, गांव वालों को नि:शुल्क बिजली दी गयी. ट्रांसफफॉर्मर लगा कर विद्युत आपूर्ति की गयी तब गुरुदास चटर्जी आंदोलनस्थल से उठे. लेकिन कुछ माह बाद ट्रांसफॉर्मर जल गया, तब तक उनकी हत्या हो गयी. अभी बीसीसीएल की बिजली वहां नहीं जल रही है, यद्यपि उस गांव की जमीन पर कोयला की खदानें हैं, पूरे देश को ऊर्जा वहां

उत्पादित कोयला से दी जा रही है. आज भी उन गांवों के लोग उन्हें याद करते हैं. उस आंदोलन में बीसीकेयू के उपाध्यक्ष रहे मथुरा प्रसाद महतो (अभी विधायक टुंडी) ने भी अहम भूमिका निभायी थी.

सार्वजनिक संस्थानों में घोटाले के खिलाफ इस्तीफा सौंपा

1991 के बाद देश में नयी आर्थिक-औद्योगिक नीति के लागू होने के बाद सार्वजनिक संस्थानों को बीमार घोषित करने का दौर चल रहा था. सभी औद्योगिक इकाइयों को रुग्न साबित किया जा रहा था. उन्हें चलाना घाटा बताया जा रहा था. कोयलांचल में संचालित एफसीआइएल सिंदरी और बीसीसीएल भी इसी की चपेट में थी. बीसीसीएल को बीआइएफआर घोषित किया जा चुका था, जबकि सिंदरी एफसीआइ को भी उसी श्रेणी में रखा जाने लगा था. विधानसभा में बहस के दौरान गुरुदास चटर्जी ने कहा कि जब कोयला धरती के नीचे से मिलता है, तो वह कैसे घाटे में जायेगा. अधिकारियों के कारण ऐसा हो रहा है. हर जगह घोटाला हो रहा है. सिंदरी एफसीआइ के घाटे में चले जाने की उन्होंने जांच कराने की मांग राज्य सरकार से की. इतना ही नहीं तपाकी गुरुदास ने सभी सार्वजनिक संस्थानों में हुए घोटाले को घाटे का कारण बताया और जांच की मांग पर विधानसभा से इस्तीफा का पत्र सौंप दिया. लेकिन उनका इस्तीफा स्वीकार नहीं किया गया. कमेटी बनायी गयी, जांच भी की, लेकिन कुछ हुआ नहीं.

धनबाद एसपी की अवैध संपत्ति के खिलाफ सदन में उठाया सवाल

आज जब नेता पुलिस अधिकारी के खिलाफ बोलना नहीं चाहते. जी हुजूरी कर अपना काम निकालते, उस समय गुरुदास चटर्जी ने धनबाद के तत्कालीन एसपी अशोक कुमार गुप्ता के खिलाफ बिहार विधानसभा में सवाल उठाया. कहा कि सरकार बताये कि आखिर किस कमाई से पटना में आलीशान मकान एसपी का है. मकान का फोटो सदन में पेश किया गया. उनकी मांग का समर्थन बगोदर के विधायक महेंद्र सिंह ने किया. दोनों विधायकों की आवाज से सदन गूंजने लगी. बताया कि धनबाद में कोयला चोरी में दी गयी छूट का परिणाम है यह अवैध संपत्ति. झारखंड इलाके की संपत्ति की लूट कर बिहार में संपत्ति बनाने का खेल बंद होना चाहिए. अंतत: कुछ दिन बाद एसपी अशोक गुप्ता का ट्रांसफर धनबाद से हो गया.

देवली जीटी रोड पर मार दी गयी गोली

उस समय कोलियरियों में आउटसोर्सिंग कंपनियों के आगमन का दौर था. आउटसोर्सिंग कंपनी के आगमन को वामदलों के नेता शुरू से ही निजीकरण की पहली सीढ़ी मान रहे थे. उसके खिलाफ जगह-जगह आंदोलन भी शुरू हो चुका था. सीटू ने भारत बंद का आह्वान निजीकरण के खिलाफ किया था. उसी बंद को सफल बनाने यूनियन ऑफिस जगजीवन नगर सरायढेला में यूनियन नेताओं की बैठक हो रही थी. तारीख थी 14 अप्रैल 2000. गुरुदास चटर्जी अपने एक कार्यकर्ता चिनू घोष के साथ अपनी बुलेट मोरटसाइकिल में यूनियन कार्यालय में भाग लेने पहुंचे. बैठक में तय किया गया कि बंद का जोरदार समर्थन किया जायेगा. कोल इंडिया की मजदूर विरोधी नीतियों को चलने नहीं दिया जायेगा. मीटिंग समाप्त होने से पहले ही वह चिनू घोष के साथ बुलेट से निरसा लौटने लगे. जीटी रोड देवली के पास पहुंचे ही थे कि घात लगाये कोयला माफिया ने लगातार तीन बार जीतने वाले लोकप्रिय विधायक पर गोली चला दी. वह वहीं पर ढेर हो गये. हत्या का आरोप उसी परिवार पर लगा, जिस परिवार को गुरुदास ने आदिवासी युवक को पंप का मालिकाना हक दिला कर माफिया को बेदखल किया था. दरअसल उक्त परिवार की निरसा में काफी पैठ थी. लोग एक पूंजीपति व उद्योगपति के रूप में जानते थे, लेकिन गुरुदास चटर्जी ने जब कोयला चोरों व माफिया के खिलाफ जोरदार आंदोलन शुरू किया तो उक्त परिवार को बेनकाब कर दिया था. प्रशासन व जनता की नजर में माफियाओं की साख गिर चुकी थी. इससे गुरुदास की साख जरूर बढ़ी थी लेकिन माफिया इसे पचा नहीं पा रहे थे. उक्त मुकदमे में एक आरोपी को आजीवन कारावास की सजा मिली. कोयलांचल में यह पहला मामला था जब किसी बड़े हत्याकांड के आरोपी को पीड़ित पक्ष सजा के अंजाम तक पहुंचाया. बहुत दिनों तक कारावास की सजा काटने के बाद आरोपी को उस समय राज्य सरकार ने जेल से मुक्त कर दिया, जब राज्य में रघुवर दास की सरकार थी. इस मामले में भी कई तरह की बातें आयी. दरअसल आम जनता सरकार के

इस फैसले से खुश नहीं थी. लेकिन कथित रूप से नियमों का हवाला देकर सरकार ने जनभावना के खिलाफ आरोपी को जेल से मुक्त कर दिया. इसकी अपील सरकार से गुरुदास चटर्जी के विधायक पुत्र अरूप चटर्जी ने की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई.

जीवित गुरुदास से मृत गुरुदास अधिक ताकतवर

गुरुदास चटर्जी जैसे लोकप्रिय विधायक की हत्या के बाद लगा निरसा से मासस एक बार फिर उखड़ जायेगी. लेकिन जीवित गुरुदास से मृत गुरुदास अधिक ताकतवर साबित हुए. उनके एमबीए की पढ़ाई कोलकाता में कर रहे कानाई (अरूप चटर्जी) को मासस ने टिकट दिया. लोगों ने गुरदास की शहादत का मान वोट के रूप में दिया. गुरुदास अंतिम चुनाव मामूली अंतर से जीते थे, लेकिन उनकी हत्या के बाद उनके बेटे अरूप ने काफी अंतर से चुनाव में जीत हासिल की. निरसा के मतदाताओं ने अरूप को नहीं बल्कि गुरुदास के 'बेटे' को भारी मतों से जीत दिलायी. आज भी अरूप चटर्जी वहां जीतते-हारते रहे हैं, लेकिन जो मत उन्हें मिलता है, उसमें काफी संख्या में वैसे वोट भी शामिल रहते हैं, जो बतौर गुरुदास पुत्र के रूप में उन्हें मिलते हैं. निरसा के गांव-गंज में आज भी गुरुदास की गूंज विद्यमान है. हर साल निरसा के अलावा देवली (गोविंदपुर) में शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि सभा की जाती है. हजारों की भीड़ अभी भी अपने प्रिय नेता को क्रांतिकारी सलाम पेश करने आते हैं.

अपने पिता के शव के साथ अरूप चटर्जी

◆◆◆◆◆

खंड : तीन

परमेश्वर मांझी : 1971 : अपनी जान देकर पुलिस से पत्नी की इज्जत बचायी

पूरे कोयलांचल में अन्याय के खिलाफ संघर्षप्रिय लोग एकजुट होने लगे थे. एके राय और बिनोद बाबू के लोकप्रिय होने से पीड़ित लोगों को उनका सहारा मिल गया था. कुछ भी होता तो वे उनकी शरण में जाकर बात रखते. 1971 में गोविंदपुर प्रखंड के खड़काबाद में इसी तरह की एक घटना घटी, जिसमें एक आदिवासी युवक को पुलिस ने गोली मार कर हत्या कर दी. दोपहर को जब परमेश्वर मांझी घर में नहीं था तो होमगार्ड के चार जवान उसकी युवा पत्नी को देख कर उनके घर में घुस गये और दुष्कर्म का प्रयास किया. महिला ने बचाव का पूरा प्रयास किया, लेकिन इसी बीच संयोग से परमेश्वर काम नहीं मिलने के कारण लौट आया. घर की हालत देख कर चौंक गया. पत्नी को बचाने के लिए वह चारों जवानों से भिड़ गया. इसी बीच शोर-गुल होने लगा तो लोग जुटने लगे, लेकिन इसी बीच एक जवान ने परमेश्वर पर गोली दाग दी, जिससे उसकी मौत हो गयी. बिनोद बाबू कचहरी में थे. सूचना मिलने के बाद पोस्टमार्टम और दाह संस्कार की व्यवस्था करायी. इस घटना ने बिनोद बाबू को झकझोर दिया. वह लोगों को एकजुट करने लगे.

◆◆◆◆◆

2 फरवरी 1972 : दुर्गाडीह हत्याकांड

महाजनों ने रामेश्वर मुर्मू व धरवाई हांसदा को गोलियों से उड़ा दिया

शहीद स्थल, दुर्गाडीह, टुंडी

बिनोद बाबू और शिबू सोरेन का मिलन हो चुका था. कॉमरेड एके राय सिंदरी से विधायक दूसरी बार चुन लिये गये थे. दोनों ही दिग्गज कॉमरेड राय को नेता मानते थे. आदिवासियों में शिबू सोरेन की चमत्कारिक छवि बन चुकी थी. वह महाजनों द्वारा औने-पौने दाम में ली गयी जमीन पर लगी फसल को आदिवासियों द्वारा कटवाना शुरू कर चुके थे. इस धनकटनी आंदोलन के कारण समाज के शोषक वर्ग का न केवल गुरुजी दुश्मन बन चुके थे, बल्कि गांव-गांव में आदिवासी और शोषक गैरआदिवासियों में दूरियां भी बढ़ चुकी थी.

महाजन आदिवासियों के खून के प्यासे बन चुके थे. दुर्गाडीह में दो फरवरी 1972 को इसी तरह की घटना में महाजनों ने दो आदिवासियों को गोली मार कर हत्या कर दी, उनमें एक 10 साल का बच्चा भी था. दरअसल दुर्गाडीह में आदिवासियों के बड़े भू-भाग में महाजनों ने सब्जी की खेती की थी. वे जमीन छोड़ना नहीं चाहते थे. इसी बीच इलाके के आदिवासियों की योजना थी कि एकजुट होकर भू-भाग में लगी फसल को तोड़ लिया जायेगा. तारीख तय की गयी दो फरवरी. गुरुजी भी आने वाले

थे. लोग चारों ओर से जुट रहे थे. बरवाटांड़ पंचायत के रामनगर गांव का धरवाई हांसदा नामक युवक भी उसमें शामिल हुआ था. डुगडुगी की आवाज सुन कर दुर्गाडीह के निकट के दोमुंडा का 10 साल का बालक रामेश्वर मुर्मू भी सभास्थल पहुंचा था.

गुरुजी पहुंचे नहीं थे, लेकिन महाजन आदिवासियों की तैयारियों को देखते हुए अपने घर के वेंटिलेटर से बंदूक से गोलियां चला दी, जिससे भीड़ तितर-बितर हो गयी. बचाव में तीर चलाये गये, लेकिन घर के अंदर सभी के रहने के कारण महाजन बच गये. इधर उनकी गोली से धरवाई हांसदा व बालक रामेश्वर मुर्मू की मौत हो गयी. काफी हंगामा हुआ. तीनों दिग्गजों का जुटान टुंडी में हुआ था. जिला प्रशासन ने काफी बुद्धिमानी से उस कांड को संभाला था, और आदिवासियों को भड़कने से रोका गया था. दोनों की याद में दुर्गाडीह में शहीद स्तंभ बनाया गया है. हर साल दो फरवी को झामुमो शहीद दिवस मनाता है. हाल के दिनों में विधायक मथुरा प्रसाद महतो की अगुआई में शहीद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है और शोषण के विरुद्ध झामुमो के संघर्ष को याद किया जाता है.

◆◆◆◆◆

23 मार्च 1972 : पलमा फायरिंग : शिबू सोरेन के चार सहयोगियों की पुलिस ने हत्या कर दी

गिरिडीह और धनबाद जिला के लोगों के लिए पलमा जाना-पहचाना नाम है. यह दोनों ही जिला पीरटांड़ गिरिडीह व टुंडी धनबाद में फैला है. आंदोलन के दिनों शिबू सोरेन ने पलमा में भी आश्रम बनाया था. यहां रह कर इलाके के आदिवासियों व पीड़ित जनों को जागरूक कर रहे थे. महाजन व सूदखोरों के खिलाफ लोगों को एकजुट कर रहे थे. इसी बीच 23 मार्च 1972 को अमूल्य सेन, रतिलाल मुर्मू, सागर सोरेन और बली मियां को पुलिस ने इसलिए मार डाला कि ये सारे लोग गुरुजी के आंदोलन के साथी थे. गांव में उन दिनों बैठक-दर-बैठक होती थी. उसी में तय होता था कि आंदोलन की रूपरेखा क्या होगी. सूदखोर-जमींदारों के खिलाफ अगला कदम क्या होगा. लेकिन पुलिस बैठक नहीं होने दे रही थी. इसको लेकर आंदोलनकारियो व पुलिस के बीच तनातनी का माहौल बना रहता था. 23 मार्च को भी गुप्त बैठक होने वाली थी. गुरुजी वहां नहीं थे, लेकिन तीन-चार सौ लोग जुटे थे. सूचना पर 10-12 की संख्या में पुलिसकर्मियों ने आकर फायरिंग शुरू कर दी. विरोध में तीर चलाये गये, लेकिन फायरिंग के आगे उनकी एक न चली. पुलिस ने खदेड़-खदेड़ कर लोगों पर गोलियां चलायी. उनमें चार लोगों की जान चली गयी. पुलिस के जाने के बाद सभी के शवों को पलमा गांव लाया गया. काफी भीड़ जुटी. पलमा में चारों की याद में शहीद वेदी का निर्माण किया गया है. वहां मेला भी लगता है और खेलकूद प्रतियोगिता होती है.

◆◆◆◆◆

राजपुरा कोलियरी कांड 1974 : कोयला माफियाओं ने गुलाम मांझी को मार डाला

दौर एके राय, बिनोद बाबू और शिबू सोरेन का था. पूरे कोयलांचल में गांवों के न्याय प्रिय लोगों की एक धारा लाल-हरा झंडा के साथ थी तो दूसरी धारा गांव के पैसे वालों और रंगदार-माफिया गठजोड़ की थी, जो पूरी तरह सत्ता-शासन की मददगार थी. उसी धारा के प्रतक्रियावादी लोगों ने निरसा (अभी एग्यारकुंड) प्रखंड के मोहुलबोना गांव निवासी आदिवासी युवक गुलाम मांझी को 1974 को मार डाला. वह लाल झंडा के नेतृत्व में गठित बिहार कोलियरी कामगार यूनियन के सदस्य थे. उसी समय इसीएल राजपुरा में कोयला खदान खोल रही थी, स्वाभाविक रूप से नौकरी के लिए वहां रोज लोग लगे रहते थे. लेकिन विस्थापन के नियम के अनुसार वहां नौकरी में उसी को प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी, जिनकी जमीन खदान के लिए गयी थी. लेकिन ऐसा नहीं हो रहा था. प्रबंधन दलालों और उसके साथ कथित रूप से मित्रता निभाने वाले नेताओं के कहने पर मजदूरों की नौकरियां बांट रहा था और वास्तविक हकदार अपने हक से वंचित हो जा रहे थे. इस तरह मनमाना रवैया को देख संघर्षशील गुलाम मांझी का विद्रोही तेवर सामने आया और लोगों को एकजुट कर इसीएल के खिलाफ लड़ाई लड़ने की ठानी.

उनके इस कार्य में साथ सबका मिल रहा था, लेकिन गुलाम का व्यक्तित्व जुझारू था, इसलिए वह इस लड़ाई का नेतृत्व कर रहे थे. यह अलग बात है कि गुलाम को जमीन के बदले इसीएल ने बतौर गार्ड नौकरी दे दी थी, लेकिन नौकरी पाकर वह चुप बैठने वाले कहां थे, वह सभी विस्थापितों के लिए अनवरत संघर्ष करते रहे. लेकिन प्रबंधनपरस्त यूनियन और नेता यह नहीं चाहते थे कि सभी गरीब रैयतों को हक मिले, ताकि उनकी अपनी सेटिंग-गेटिंग कहीं गड़बड़ा न जाए और जनता के सामने बेनकाब न हो जाए. इसको लेकर उन्होंने उस समय बीसीकेयू में सक्रिय तत्कालीन विधायक केएस चटर्जी, आगम राम, डॉ रहमतुल्ला आदि से राय-मशविरा की और बात एके राय तक पहुंची. कार्यक्रम बना. फिर

लाल–हरा झंडा लेकर गांव के लोगों को के साथ गुलाम मांझी ने राजपुरा कोलियरी को घेर लिया. कहा गया कि जब तक प्रबंधन सरजमीन पर आकर यह लिखित रूप से नहीं देता है कि सभी रैयतों को नौकरी दी जायेगी, तब तक आंदोलन चलता रहेगा. उनके इस तरह के आंदोलन को देख पूरा प्रबंधन हिल गया.

कोलियरी का कामकाज ठप हो गया. लेकिन कोयला माफिया और प्रबंधन के गुंडों को लगा कि यदि गुलाम मांझी जीवित रहेगा तो बार–बार उन्हें परेशान करेगा, इसलिए बराबर के लिए उसे रास्ता से हटाया जाए. आंदोलन के दौरान ही कोयला काटने वाले गैंता से विरोधी पक्ष के एक व्यक्ति ने गुलाम के सिर पर वार कर दिया, उससे उनकी मौत वहीं पर हो गयी. इसकी सूचना चारों ओर फैली. एके राय उस समय सिंदरी के विधायक हुआ करते थे. वह पहुंचे, बिनोद बाबू और शिबू सोरेन भी पहुंचे. पूरे कोयलांचल से लोग निरसा में जुटे और उत्पादन के साथ जीटी रोड को भी जाम कर दिया गया.

बाद में यह फैसला भी हुआ कि गुलाम मांझी जिन लोगों को नौकरी देना चाहते थे, उन सभी को नौकरी मिलेगी. गुलाम की जगह उनके एकमात्र पुत्र नैना मांझी को नौकरी मिली. इस तरह गुलाम मांझी की शहादत ने बदमाशों के इरादों पर तो पानी फिरा ही, रैयतों को उनका हक भी मिला. इतना ही नहीं, इस घटना से निरसा इलाके के लोग लाल और हरा झंडा के नेतृत्व मे एकजुट होने लगे, जो अलग झारखंड राज्य के निर्माण में बतौर ऊर्जा काम आया. इधर, कुछ दिन बाद उनके पुत्र नैना मांझी की भी पानी में डूबने से मौत हो गयी, जिसके कारण उनकी पुत्रवधू मंगली मंझियाइन को नौकरी मिली, जो इसीएल की लखीमाता कोलियरी में कार्यरत हैं.

◆◆◆◆◆

23 मई 1975 : मुनीडीह हत्याकांड : महाजनों ने क्रूर तरीके से बीरबल, बिरजू व हरिपद महतो को मार डाला

बीरबल

बिरजू महतो

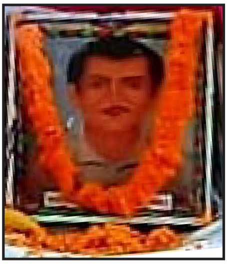

हरिपद महतो

झामुमो की स्थापाना के बाद कोयलांचल में बिनोद बाबू के नेतृत्व में शिवाजी समाज और झामुमो दोनों का समानांतर संगठन विस्तार का दौर चल रहा था. वहीं दूसरी ओर कोयला खदान वाले इलाके में स्थापित रंगदार-माफिया के खिलाफ लाल झंडे के नेतृत्व में गांव के वैसे लोग एकजुट हो रहे थे, जिनकी जमीन पर कोयला निकाला जा रहा था. एके राय का नारा संघर्ष और निर्माण की परिकल्पना भी साथ-साथ चल रही थी. बिनोद बाबू का नारा पढ़ो और लड़ो से लोग काफी प्रभावित थे. मुनीडीह का इलाका कोयला खदानों से भरा था, जिसमें आसपास गांवों के संगठित दलाल और तत्कालीन सत्ता संरक्षित बदमाशों का बोलबाला हुआ करता था. उसी बीच जो पीड़ित लोग लाल और हरा झंडा से जुड़ रहे थे, वे बदमाशों की आंखों की किरकिरी बने हुए थे.

बदमाशों को यह भय सता रहा था कि गरीब यदि गोलबंद हो जायेंगे तो उनकी रोजी-रोटी ही नहीं, बल्कि साम्राज्य भी खतरे में पड़ जायेगा. उस दौरान सिजुआ के शक्तिनाथ महतो शिवाजी समाज में सक्रिय होकर अपनी कुड़मी जाति को संगठित कर रहे थे और समानांतर रूप से झामुमो का भी गठन कर रहे थे. उसी सिलसिले में 23 मई 1975 को मुनीडीह के कारीटांड़ विद्यालय में शक्ति महतो ने वहां एक बैठक बुलायी थी. काफी लोग जुटे थे. शक्ति की पहचान एक कार्यकर्ता से बढ़ कर एक नेता के रूप में होने

लगी थी. मुनीडीह इलाके में वहीं के दीपनारायण सिंह का काफी बोलबाला था. वह ठेकेदार था. उसके आगे मेहनत कर खाने वाले लोगों की आवाज तक नहीं निकलती थी.

कांग्रेस से जुड़ा था, इसलिए वह उस इलाके में जो चाहता था, वही होता था. मुनीडीह कोलियरी में प्रबंधन के साथ-साथ पुलिस के साथ उसकी दोस्ती थी. प्रबंधन-प्रशासन भी चाहता था कि हक मांगने वाले या उनके कामों को बाधित करने वाले लोग यहां सक्रिय न हो. पैसा व जमीन बहुत अधिक रहने के कारण गांव में भी उसकी ही चलती थी. सूदखोरी के अर्जित पैसे से उसकी चमक के सामने गरीब के पसीने फीके पड़ रहे थे. उधर, कारीटांड़ की बैठक में लोगों को शिक्षित करने के लिए वहां एक उच्च विद्यालय संचालन की भी चर्चा हुई थी. इस बात से प्रतिक्रांतिकारी ताकत तिलमिला गयी थी. उन्हें खलने लगा था कि बंधुआ मजदूर भी अब पढ़ने लगेंगे तो उनका राज खतरे में पड़ जायेगा. बैठक में लोगों ने इस बिंदु पर गंभीर चर्चा की कि कैसे वैसे जमींदारों की दबंगई से लोगों को मुक्ति दिलायी जाए, उनके सामने सिर उठा कर लोग कैसे जीएं. इसको लेकर कहा गया कि कोलियरी में बीसीकेयू का संगठन और राजनीतिक रूप से झामुमो की लोकल इकाई का गठन कर संघर्ष को आगे बढ़ाया जायेगा. महाजनों से सामना करने की भी रणनीति बनायी गयी. लेकिन, इस बैठक में हुए फैसलों की सूचना पाकर असामाजिक तत्वों ने हिंसा का रास्ता अपनाने की सोची. समाज को संगठित कर उनके खिलाफ गोलबंद करने वालों को ही रास्ता से हटाने का ही मन बना लिया. शक्ति महतो की हत्या करने की योजना बनायी. गुंडों का दल मीटिंग खत्म होने के बाद चारों तरफ मुख्य रास्ते में छिप कर रह गया, लेकिन शक्ति महतो बलियापुर के रामधनी महतो के साथ मोटरसाइकिल से निकल चुके थे. शक्ति महतो हाथ नहीं लगा तो मुनीडीह इलाके में लोगों को संगठित कर रहे मुनीडीह बस्ती के बिरजू महतो, आमडीह के बीरबल महतो व हरिपद महतो को लोगों ने जंगल के रास्ते में रोक लिया. तीनों को बात समझ में आ गयी. तीनों ने छोड़ देने की काफी विनती की. लेकिन बदमाशों को उन पर दया नहीं आयी. बीरबल व हरिपद को जंगल में ही गला रेत कर हत्या कर दी. बिरजू महतो को पकड़ कर बरड़ुभी स्थित मां काली का मंदिर लाया गया. उसे पूछा गया कि बोलो

और खिलाफ में बोलोगे, लेकिन बिरजू भी काफी ताकतवर था. हिम्मत के साथ उनलोगों का सामना किया. कहा हम समाज का काम कर रहे हैं तो आपको क्या दिक्कत है. अब आपकी नहीं चलने वाली है. उनकी हिम्मत भरी बोली बदमाशों को अंदर से हिला रही थी, इसलिए निर्मम तरीके से उनकी पहले आंख निकाल ली, फिर बकरा काटने की वेदी पर बिरजू के सिर को उसी तरह घुसा दिया जैसे लोग पाठा को बलि देने से पहले घुसाते हैं. फिर बिरजू को बकरे की तरह सिर को धड़ से अलग कर दिया. फिर शव को दामोदर नदी में फेंक दिया. सुबह लोगों को सूचना मिली तो काफी हंगामा हुआ. जातीय संघर्ष का रूप लेने लगा, बलियापुर-चंदकियारी, सिजुआ, भेलाटांड़, गोधर से लोग जुटने लगे. लोगों ने उसके घर पर चढ़ाई कर दी, लेकिन मौके की नजाकत को देखते हुए बदमास भाग गया. कांग्रेस से जुड़े लोग और पुलिस का सपोर्ट दीपनारायण सिंह को मिला. जिसके कारण वह बच कर निकल गया. बाद में लोगों ने उस पर केस किया. उसे जेल भी भेजा गया. बाद में उसकी मौत हो गयी. भले ही यहां तीन लोगों ने शहादत दी, लेकिन उनकी शहादत से लोगों को हिम्मत मिली और वहां से सामंती ताकतों का राज लगभग खत्म हो गया. मौत के समय बीरबल अविवाहित था, जबकि हरिपद की एक लड़की फुदिया उस समय छोटी थी, जिसकी शादी चास जरकापत्थर के निकट पोखरना बस्ती में हुई. उस समय बिरजू महतो को ढाई साल का लड़का हराधन महतो था, जिसकी बीसीसीएल में नौकरी हुई, अभी वह कार्यरत हैं.

◆◆◆◆◆

28 नवंबर 1977 : क्रांतिदूत शक्तिनाथ महतो ने शहादत देकर सिजुआ को किया आजाद

शक्तिनाथ महतो यानी क्रांति के अग्रदूत. कोयलांचल में एक बहुत बड़ा नाम. दक्षिणी छोटनागुर में एके राय, बिनोद बाबू, शिबू सोरेन के बाद दूसरी पीढ़ी के बाद सबसे जनाधार वाले नेता. वाम जनवादी ताकतों को संगठित कर संघर्ष को मंजिल तक पहुंचाने वाला शख्स. लाल और हरा झंडा को साथ लेकर गरीबों को संगठित करने वाला बिनोद बाबू के बाद कोयलांचल में सबसे बड़ा चेहरा. गैरआदिवासियों को झामुमो से जोड़ने वाले एक संघर्षशील साथी और एके राय के नेतृत्व में गठित बिहार कोलियरी कामगार यूनियन का अगुआ कॉमरेड. ऐसी शख्सियत की हत्या कर माफियाओं ने भले ही उनके परिजनों से उन्हें छीन लिया, लेकिन मौत के बाद वह अधिक ताकतवर बन कर उभरे. माफियाओं के कब्जे वाली जगह सिजुआ आजाद हो गया. बराबर के लिए यहां से गुंडा राज खत्म हो गया.

मां-बहन और गांव के लोग स्वच्छंद होकर घूमने-फिरने लगे. निधन के बाद शक्ति ग्राम विकास संघ का गठन हुआ. आज उनके नाम पर आधा दर्जन से अधिक शैक्षणिक संस्थाएं न केवल चल रही हैं, अपितु कोयलांचल में एक पहचान बनायी हुई हैं. कोयलांचल का सबसे बड़ा मेला शक्ति मेला उनके शहादत दिवस के दिन से नौ दिनों तक चलता है. हजारों लोग जुट कर उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण करते हैं. उनके बाद उस इलाके में उनके अनुयायी रहे मथुरा प्रसाद महतो आज झारखंड का एक बड़ा नाम हैं. शैक्षणिक-सामाजिक क्षेत्र में मथुरा महतो भी काफी सक्रिय रहे हैं. फिलहाल टुंडी से विधायक हैं और सत्तारूढ़ दल के सचेतक. शक्ति बाबू की तरह वह भी वैचारिक रूप से आज भी कम्युनिस्ट हैं. लाल और हरा झंडा का सबसे नजदीकी बड़े नेता में मथुरा बाबू का नाम आता है. बतौर उदारण इसे देखा

जा सकता है कि शक्ति ग्राम विकास संघ के बैनर तले वह पलमा व तोपचांची के मदैयडीह में बिनोद बिहारी महतो के नाम पर जहां कॉलेज का संचालन कर रहे हैं, वहीं टुंडी में शिबू सोरेन के नाम पर डिग्री व इंटर कॉलेज की स्थापना की है.

एके राय के जीवित रहते मथुरा प्रसाद महतो ने चंदनकियारी के बाटबौआ जैसे पिछड़े इलाके में कॉमरेड एके राय इंटर महाविद्यालय की स्थापना की. इतना ही नहीं, शक्ति ग्राम विकास संघ द्वारा स्थापित कई शैक्षणिक संस्थाएं आज पूरे राज्य में नाम कमा रही हैं. उनमें एक है शहीद शक्तिनाथ महतो इंटर कॉलेज, सिजुआ धनबाद. हर साल यहां का परिणाम अव्वल रहता है. शक्ति बाबू के नाम पर हाट भी लगता है. एक अस्पताल भी संचालित है. संघ के संस्थापक सचिव मथुरा बाबू रहे, जबकि अध्यक्ष शहीद के अनुज हरि प्रसाद महतो.

शक्तिनाथ की मौत के बाद हरि प्रसाद महतो पूरी तरह से झामुमो से जुड़े रहे. पार्टी की केंद्रीय समिति में रहे. गोमिया विधानसभा से पार्टी के टिकट से चुनाव भी लड़े. निधन के समय लगभग दो साल के रहे शक्ति महतो के पुत्र मनोज महतो अभी भी झामुमो से जुड़े हुए हैं, जबकि शक्ति बाबू की बेटी अंजना देवी के पति शिव प्रसाद महतो भी झामुमो जिला कमेटी में शामिल हैं. इन्हीं दो छोटे-छोटे बच्चों और असंख्य समर्थकों को छोड़ कर वह 28 नवंबर 1977 को दुश्मनों के हाथों मारे गये थे.

जन्म व शिक्षा

शक्तिनाथ महतो का जन्म दो अगस्त 1948 को जोगता थाना अंतर्गत तेतुलमुड़ी गांव में हुआ था. शिबू महतो इनके दादाजी थे. पिता गणेश महतो किसान थे, जबकि मां सधुवा देवी गृहिणी. वह आठ भाई-बहनों में सबसे बड़े थे. उसके बाद हरि प्रसाद महतो, कमल महतो, सुरेश महतो हुए, जबकि बहनों में गांधारी, कुंती, आदोरी व शांति देवी हैं. जोगता प्राथमिक विद्यालय में उन्होंने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की, फिर गांधी स्मारक उच्च विद्यालय सिजुआ से माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की. उस समय आइटीआइ पास का बड़ा क्रेज था. औद्योगिक इलाका होने के कारण आइटीआइ प्रशिक्षित छात्रों की नौकरी बीसीसीएल या निजी

उद्योगों में हो जाया करती थी. परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहने के कारण नौकरी के उद्देश्य से उन्होंने धनबाद आइटीआइ से फीटर ट्रेड में प्रशिक्षण प्राप्त किया. उसके बाद कुमारधुबी स्थित एक कारखाने में अप्रैंटिस की. उसके बाद बीसीसीएल की मुनीडीह परियोजना में नौकरी लग गयी. उनका स्वभाव शुरू से विद्रोही का रहा. अन्याय बर्दाश्त करने की क्षमता उनमें नहीं थी. जब आइटीआइ में पढ़ रहे थे उसी समय बदमाश छात्रों के खिलाफ उन्होंने संस्थान मे अध्ययनरत साथियों को एकजुट किया था. नेतृत्व गुण उनमें छात्र जीवन से ही था. फिर जब चाकरी करने लगे तो प्रबंधन की नीतियों से मजदूरों के हो रहे शोषण को देख कर वह अंदर ही अंदर आंदोलित हो जाते थे.

शिवाजी समाज से की सामाजिक जीवन की शुरुआत

एक वरिष्ठ अधिवक्ता के अलावा कुड़मी समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ लोगों को जागरूक करने के रूप में बिनोद बिहारी महतो का नाम चर्चे में आ गया था. बिनोद बाबू शिवाजी समाज के बैनर तले शराबखोरी, दहेज प्रथा, बाल-विवाह, बहु-विवाह, अशिक्षा आदि कुरीतियों के खिलाफ जंग लड़ रहे थे. गांव-गांव में कुड़मी समाज के लोगों को जागरूक कर रहे थे. इसी बीच 21 फरवी 1971 को बिनोद बाबू ने बैठक टाटा सिजुआ में रखी थी. उसी दौरान शिवाजी समाज की जोगता थाना कमेटी का गठन किया गया, जिनमें शक्तिनाथ महतो के बात-व्यवहार से बिनोद बाबू आकृष्ट हुए और उन्हें उस कमेटी का मंत्री (सचिव) चुन लिया गया. गरीबों की पीड़ा से बराबर उद्वेलित होने वाले शक्तिनाथ ने शिवाजी समाज के संगठन का विस्तार अपने इलाके में जोरदार ढंग से किया.

नौजवानों को जहां कुरीतियों के खिलाफ आगे आने के लिए गांव-गांव में आह्वान करने लगे, वहीं रात्रि पाठशाला खोल कर महिलाओं व निरक्षर बुजुर्गों को शिक्षित करने के अभियान में जुड़े रहे. जोगता-मुनीडीह इलाके के हर गांव में रात्रि पाठशाला का केंद्र खोला. वह रात को खुद भी पढ़ाते और पढ़-लिखे अन्य नौजवानों को नि:शुल्क शिक्षा देने के लिए प्रेरित करते. सिजुआ, भेलाटांड़, कपुरिया, परसिया, चिरुडीह, धोबनी, मुनीडीह, कारीटांड़, बलिहारी, भागाबांध, कनकनी, लोयाबाद, बांसजोड़ा, गड़ेरिया, भूली क्षेत्र के भूली, धारजोरी, बौआ, नगरी, बैजकारटांड़, गुंडुबा,

तिलाटांड़, तेतुलमुड़ी, राजगंज, धावाचिता, बागदाहा, पहाड़पुर में उन्होंने न केवल रात्रि पाठशाला खोली, बल्कि इन गांवों के नौजवानों को दहेज के बिना विवाह करने के लिए प्रेरित किया. नारी प्रताड़ना करने पर दंड का प्रावधान किया. बात-बात में पत्नी को छोड़ कर दूसरा विवाह करने जैसे घृणित कार्य के दुष्परिणामों से लोगों को जागरूक किया. इस तरह कतरास-राजगंज-भूली इलाके में उन्होंने आम लोगों के बीच एक प्रखर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में पहचान बना ली. उनके परिवर्तनकारी विचारों और नेतृत्व क्षमता से प्रभावित होकर वह बिनोद बाबू और तत्कालीन सिंदरी के विधायक प्रखर मार्क्सवादी चिंतक एके राय के काफी प्रिय होने लगे.

झारखंड मुक्ति मोर्चा की स्थापना के साथ राजनीति में प्रवेश

सत्तर का दशक कोयलांचल में जनजागरण व क्रांति का रहा, आगे जाकर झारखंड के लिए मुक्ति आंदोलन के रूप में बदला. सिंदरी एफसीआइ की इकाई पीएंडडी से नौकरी छोड़ कर सिंदरी से माकपा के टिकट पर विधायक बने एके राय गरीबों के हितैषी, मजदूरों के सच्चा साथी और एक ईमानदार नेता के रूप में पहचान बना चुके थे. बिनोद बाबू भी माकपा से जुड़े हुए थे. एके राय और बिनोद बाबू में वैचारिक साम्यता के कारण बंधुत्व बढ़ चुका था. बिनोद बाबू द्वारा शिबू सोरेन को धनबाद बुला लेने के बाद यहां तिकड़ी जम गयी. चार फरवरी 1973 को धनबाद के गोल्फ ग्राउंड में एके राय, बिनोद बाबू व शिबू सोरेन ने मिला कर झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया.

शक्तिनाथ महतो मासस व झामुमो दोनों के गठन के समय साथ थे और वह संस्थापक सदस्य रहे. यहीं से उनकी राजनीति शुरू हुई. बिनोद बाबू के खास समर्थक के रूप में लोगों में पहचान बना ली. इसलिए गांव-गांव में जहां झामुमो का गठन किया, वहीं कोलियरियों में बीसीकेयू को बढ़ाया. लोगों को झारखंड अलग राज्य के महत्व के बारे में बताया. कैसे सत्ता पोषित बहिरागत माफिया शक्ति यहां की खनिज संपदा को लूट कर यहां के लोगों को शोषण कर रही है, इन चीजों को शक्ति महतो बड़े तार्किक ढंग से लोगों को बताते थे. धीरे-धीरे धनबाद (बोकारो समेत), गिरिडीह,

हजारीबाग तक इनका कार्य क्षेत्र बढ़ गया. तीनों बड़े नेताओं के बाद निरसा के केएस चटर्जी, सिंदरी के आनंद महतो, डुमरी के शिवा महतो, मांडू के टेकलाल महतो की श्रेणी में इनका नाम आने लगा.

बीसीकेयू की अगुआई में संघर्ष कर मजदूर नेता के रूप में बनायी पहचान

उन दिनों ग्रामीण इलाकों में गरीबों का शोषण जहां सूदखोर, जमींदार व साहूकार करते थे, वहीं कोलियरी इलाके में भी विस्थापित हुए लोगों और कार्यरत मजदूरों का शोषण कंपनी के लठैत, अधिकारी व प्रबंधनपरस्त यूनियनें करती थीं. जिनकी जमीन गयी, उन्हें हक न मिल कर रंगदार-गुंडों द्वारा बताये गये लोगों को नौकरी मिल जाती थी. इन्हीं परिस्थितियों में एके राय ने बिहार कोलियरी कामगार यूनियन (बीसीकेयू) का गठन किया था, जिसे माकपा की मजदूर यूनियन सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन (सीटू) से संबद्ध कराया.

बीसीकेयू के गठन के बाद मजदूर धौड़ों में खुशियां लौटी थी. कोयला काटने के बाद भी जिन श्रमिकों को उसकी पारिश्रमिक नहीं मिलता था, सूदखोर छीन लेते थे, लठैतों के सामने जिनकी आवाज दब जाती थी, वैसे लोगों में हिम्मत जगी थी. गुंडों की मुखालफत करने का साहस शोषित मजदूर जुटाने लगे थे, जिसके कारण न केवल उनके पैसे से अपना संसार चलाने वालों के ललाट में पसीने आ रहे थे, बल्कि उस समय कार्यरत यूनियनों को भी चुनौती मिलने लगी थी. बतौर एक कोयला कर्मी, कैसे-कैसे शोषण होता है, शक्ति महतो वाकिफ हो चुके थे. उसके बाद कॉमरेड राय ने उन्हें मुनीडीह एरिया बीसीकेयू का सचिव बना दिया.

यहीं से उनके जीवन में टर्निंग प्वाइंट आया और वह एक जुझारू कॉमरेड मजदूर नेता के रूप में प्रतिष्ठित होने लगे. उसके बाद एक से बढ़ कर एक साहसिक फैसले खुद लेने लगे, जिसे देख कर मजदूर भी इनके कायल हो गये. ठेकेदारी प्रथा पर पाबंदी लगाने के लिए मजदूरों को एकजुट कर संघर्ष किया. ठेका मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी लड़कर दिलायी. मजदूरों को उनके साथ हो रहे शोषण के बारे में जानकारी दी.

रात में महिलाओं से कोयला लोडिंग कराना बंद कराया

मुनीडीह के अलावा बलिहारी कोलियरी के मजदूरों के लिए यूनियन का काम शक्तिनाथ देखने लगे. कोलियरियों में ट्रक लोडिंग तीन शिफ्टों में होती थी. इसमें गांव की महिलाएं भी लोडिंग करती थीं. प्रबंधन के पहलवान महिलाओं को जबरदस्ती खदानों में ले जाते थे. उनके साथ व्यभिचार तक होता था. प्रबंधन काम लेता था और उसके पोषित गुंडे ऐश-मौज करते थे. यह बात शक्तिनाथ ने बिनोद बाबू और एके राय के समक्ष रखी. दोनों दिग्गजों ने इसके लिए महिलाओं को संगठित करने को कहा. फिर क्या था धुन के पक्के शक्ति ने महिलाओं को एकजुट कर एक रात काम पर जाने से रोक दिया. इससे प्रबंधन तिलमिला गया. वार्ता की तो पहली शर्त रखी गयी कि महिलाएं तीन नहीं, बल्कि दो शिफ्ट में काम करेंगी. रात को महिलाओं से काम कराना अनुचित ही नहीं, अन्याय है. प्रबंधन को यह फैसला मानने के लिए मजबूर होना पड़ा. लगे हाथ शक्तिनाथ महतो ने महिलाओं को खदान के अंदर जाकर कोयला काटने पर भी रोक लगाने की मांग की. कहा कि महिलाएं सिर्फ सरफेस पर काम करेंगी. इसे प्रबंधन ने सहजता से स्वीकार नहीं किया, लेकिन कॉमरेड राय ने इस मुद्दे को लेकर उच्च प्रबंधन से वार्ता की, जिसमें शक्तिनाथ महतो, बिनोद बाबू, एसके बक्शी भी थे. बताया जाता है कि बीसीकेयू के कारण ही पूरे बीसीसीएल को फैसला लेना पड़ा कि अंडरग्राउंड खदान में महिलाएं कोयला काटने नहीं जायेंगी

यूनियन नेता के रूप में कई साहसिक व ऐतिहासिक कार्य किये

कार्यकुशलता को देख यूनियन ने केसीआर फैक्ट्री तिलाटांड़ का भी भार शक्तिनाथ को सौंपा. यह एक गुजराती कंपनी थी, जो फायर क्ले का निर्माण करती थी. मालिक की ठसक के आगे किसी की नहीं चलती थी. मजदूरों की बात करने वाले किसी नेता की प्रबंधन नहीं सुनता था. इसी बीच एक दिन शक्तिनाथ महतो प्रबंधन से मिलने गया. काफी चर्चित होने के बाद भी प्रबंधन ने मिला तो नहीं, ऊपर से कह कर भेजा कि कौन शक्ति, मैं किसी शक्ति-वक्ति को नहीं जानता. गेटकीपर द्वारा यह जवाब सुनकर जिद्दी शक्ति के दिल में चोट लगी. उसी दिन से ठान लिया कि केसीआर फैक्ट्री में यूनियन बनानी है. एक दिन केसीआर फैक्ट्री के मालिक व प्रबंधक गेट से

बाहर निकल कर बाहर जा रहे थे तो शक्तिनाथ महतो ने रोक कर पहले दोनों को उतारा, फिर अकेले दम भर पिटाई की. पेड़ से बांध दिया. फिर कहा, हम ही शक्ति हैं, पहचाना. लाल झंडे का सिपाही हूं. अपने लिए नहीं, मजदूर के लिए बात करना चाहता हूं. फिर एके दिन बाद खुद मालिक शक्तिनाथ के घर तेतुलमुड़ी पहुंच गये और बताया कि क्या बात करनी है, यहीं कर लीजिए, लेकिन मजदूर हितैषी शक्ति ने कहा कि यहां कोई बात नहीं होगी, आप फैक्ट्री जाइये, बीसीकेयू से जुड़े मजदूर आपसे वार्ता करेंगे.

धनबाद के इतिहास में उस समय पहली बार केसीआर में कार्यरत सभी मजदूरों को स्थायी किया गया. कर्मचारी स्वास्थ्य बीमा का लाभ दिया गया. पीएफ साढ़े 12 प्रतिशत काटना शुरू किया. 12 घंटे की जगह आठ घंटे ड्यूटी दी जाने लगी. यहां से गैरकोलियरी क्षेत्र में लाल झंडा के स्थापित होने का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह जीटी रोड गोविंदपुर से लेकर निरसा-चिरकुंडा इलाके की छोटी-छोटी औद्योगिक इकाइयों में भी मजदूर लाल झंडे के नेतृत्व में संगठित होने लगे.

मजदूर यूनियन क्या होती है, गांव के लोग भी जानने लगे. गांव के लोग गांव में किसान होते थे और जब फैक्ट्री में आये तो मजदूर हुए. इस तरह किसान और मजदूरों का एक समन्वय बनना शुरू हुआ, जिसने मासस-झामुमो की संसदीय राजनीति को मजबूती प्रदान की. एक दूसरे के आंदोलन में भी किसान-मजदूर साथ देने लगे. ये सारी चीजें तो होने लगी, लेकिन बुर्जुआ ताकतों का दुश्मन भी शक्तिनाथ बनने लगे. परंपरागत शक्तियों को शक्ति की शक्ति से भय सताने लगा. फलस्वरूप इसके खिलाफ गुंडों को उकसा कर हमला करने की दुस्साहसिक फैसले सूदखोर व प्रबंधन के गुंडे लेने लगे.

शक्तिनाथ के गांव पर गुंडों ने किया हमला : भाई को लगी गोली

तेतुलमुड़ी गांव दरअसल कोलियरियों के बीच अवस्थित है. बात 2 फरवरी 1975 की है. झामुमो के गठन और खदान इलाकों में बीसीकेयू से गांव के मजदूरों के जुड़ने के बाद गरीब और अमीरों के बीच छोटा-छोटा संघर्ष होना शुरू हो गया था, जिसे चालाकी से सत्ता वर्ग बाहरी-भीतरी की भावना प्रचारित करने लगा, ताकि झारखंड क्षेत्र के बाहर से मजदूर जो

बिहार या यूपी के थे, वे लाल झंडा का साथ छोड़ दे और उनकी रंगदारी–दादागीरी चलती रहे. तेतुलमुड़ी मांझी बंगला में बहिरागत गुड़ों से कैसे सामना किया जाए, इसलिए ग्रामीणों व कोलियरी मजदूरों की सभा रखी गयी थी. मुख्य रूप से एके राय आने वाले थे. शक्तिनाथ महतो, रामू सोरेन, रामेश्वर सिंह सभी मौजूद थे. सभी एके राय के आने का इंतजार कर रहे थे. इसी बीच पता चला कि कॉमरेड राय को उपायुक्त धनबाद ने किसी काम से रोक लिया है. फिर लोगों ने मीटिंग समाप्त कर दी. इसके कुछ ही देर बाद अचानक कोयलांचल में पांच माफिया देव में एक देव जो कतरास इलाके सक्रिय थे, के सैकड़ों समर्थकों ने तेतुलमुड़ी गांव पर हमला कर दिया.

बम–गोली से गांव दहल उठा. जो जिधर सका, भागने लगा. महिला–बच्चे सभी के बीच अफरातफरी व दहशत का माहौल कायम हो गया. दरअसल वे शक्तिनाथ महतो की हत्या मीटिंग के बीच में ही करना चाहते थे. मीटिंग खत्म हुई तो गांव पर ही हमला कर दिया. इस गांव में लोगों की संख्या कम है. शक्तिनाथ राय साहब से भेंट करने गांव से कुछ ही दूर गये थे, लेकिन बमबारी की आवाज सुन कर वह शेर की तरह लौट आये और सीधे तेतुलमुड़ी कोलियरी के बगल स्थित क्वार्टरों में रहने वाले आदिवासियों के पास जाकर स्थिति से अवगत कराया. उन्होंने लोगों से

जाकर कहा कि माटी खतरे में है. मां-बहन की इज्जत खतरे में है. सब मिल कर साथ दो, हमारे जीवित रहने तक मां-बहनों की इज्जत लूटने नहीं देंगे. फिर रेलवे लाइन के पास मोर्चा संभाला. गांव वाले तीर-धनुष से लैस थे, और रेल लाइन के पत्थर का इस्तेमाल कर रहे थे, जबकि दुश्मन गोली-बम से. लेकिन इधर हौसला था.

बचने की जिद थी, उधर अन्याय था, हमला करने की सोच थी. दोनों ओर से खदेड़ा-खदेड़ी का दौर चला. इधर, पुलिस जोगता थाना की छत पर खड़ा होकर तमाशबीन बनी रही. इसी बीच शक्ति महतो के संझले भाई कमल महतो और एक आदिवासी युवक को गोली लगी. फिर भी शक्तिनाथ घबराये नहीं, दोनों को घर भेज दिया. कहा जाकर ट्रीटमेंट कराओ और उन्होंने मोर्चा संभाल रखा. बताया जाता है कि लगभग डेढ़ घंटे तक मोर्चाबंदी होती रही. शक्तिनाथ महतो के अदम्य साहस के कारण माफियाओं को पीछे हटना पड़ा. यह धमकी देकर गुंडे पीछे हट गये कि ठीक बा आज तो जीत गेल्हस, तोहरा के दिखा देब. माहौल शांत होने के बाद पुलिस आयी. केस भी किया गया. लेकिन पुलिस का मौन समर्थन गुंडों की ओर रहा.

आपातकाल में गये जेल : मीसा भी लगाया गया

देश मे आपात काल लग चुका था. सरकार की नीतियों की आलोचना करने वाले हर शख्स को पुलिस गिरफ्तार कर रही थी. इसी बीच मई 1975 को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया. इतना ही नहीं साधारण केस में जेल भेज कर स्थानीय कांग्रेसियों की पहल पर उन्हें मीसा लगा दिया गया. उन्हें कहा गया कि आप देश में जारी 20-सूत्री का समर्थन कर निकल सकते हैं, लिखित दें. लेकिन एके राय के पक्के शिष्य शक्तिनाथ ने सिद्धांत के साथ कोई समझौता नहीं किया. इसके बाद उन्हें भागलपुर और मुजफ्फरपुर जेल में रखा गया. लेकिन जेल में रह कर भी वह दिमागी रूप से चुपचाप नहीं रहे. जेल से सिजुआ के साथियों को पत्र लिखते और उनके छूटे हुए कार्यो को बंद नहीं होने देने की अपील करते. उस समय सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उभरे सिजुआ के मथुरा प्रसाद महतो (पूर्व मंत्री व अभी विधायक टुंडी) को भी पत्र लिखा. मथुरा प्रसाद को लिखे एक पत्र का सार अंश इस प्रकार है.

भागलपुर कैंप जेल

18.06.76

सभी बड़ों को प्रणाम तथा छोटों को आशीर्वाद

साथियों, तुमलोगों से आज मैं बहुत दूर हूं. लेकिन यह सोच कर तुमलोग कभी नहीं घबराना कि दादा हमसे बहुत दूर है. मेरा लक्ष्य क्या है, तुमलोगों को पता है. मैं जानता हूं कि आपात काल में तुमलोगों को काम करने में दिक्कत हो रही होगी. लेकिन यह क्षणिक है, जीत हमारी होगी. हर गांव में जो रात्रि पाठशाला चल रही है, उसे बंद होने मत देना. गांव में जो छोटे-मोटे झगड़े होते हैं, उसको लेकर थाना-पुलिस होने मत देना. मिल बैठ कर समझौता करा देना. गांव की जो मर्यादा है, उसे कायम रखना. अभी तो बहुत छोटा आंदोलन हुआ है, अभी बहुत छोटा आंदोलन हुआ है, अलग झारखंड राज्य के लिए बहुत बड़ा आंदोलन हमलोगों को करना है. हमारी धरती में बेशुमार धन छिपे हुए हैं, उसकी लूट हम ही लोगों को बचानी होगी.

मैं जानता हूं, इन सब कामों में बहुत तकलीफ होगी. बहुत मेहनत की जरूरत है, मगर हमलोगों ने रास्ता ही कंटीला चुना है तो फूल की उम्मीद कैसे कर सकते हैं. बगैर मेहनत का फल नहीं मिलता, यह सदा याद रखना. तुम झारखंड के पुत्र हो. जंगलों में तुम्हारी पैदाइश है. मेरे बेल के लिए ज्यादा दौड़-धूप मत करना. आपात काल तक छूटना मुश्किल है. हमें देखने के लिए जो लोग यहां आ रहे हैं, यह कम करो. आने-जाने में समय और पैसा बहुत खर्च हो रहा है. यह खर्च मेरे बताये हुए कामों में करोगे तो मुझे अधिक खुशी होगी. एक बार फिर कहूंगा कि तुमलोग हमसे ज्यादा भाग्यशाली हो, कि कुछ करने का समय मिला है, इसे मत चुको. समय बार-बार नहीं मिलता और न ही समय किसी का इंतजार करता है.

तुम्हारा दादा

शक्तिनाथ महतो

और वह मनहूस दिन आ गया

तारीख थी 28 नवंबर 1977. दरअसल टाटा सिजुआ छह नंबर में टाटा कंपनी का एशिया का सबसे बड़ा हार्डकोक भट्ठा था, वहां बाहरी

मजदूरों से काम लिया जाता था, स्थानीय मजदूरों की उपेक्षा की जाती थी. उस समय टाटा कंपनी के खिलाफ आवाज उठाना कोई आसान बात नहीं थी. टाटा में केवल एक ही यूनियन की मान्यता थी (आज भी है) कांग्रेस की इंटक की. उसी से संबद्ध यूनियन ही टाटा के मजदूरों के सवाल पर बात कर सकती थी, लेकिन शक्तिनाथ बीसीकेयू (सीटू) के नेता थे. सिजुआ शिव मंदिर के पास मैदान में इसको लेकर बड़ी सभा का आयोजन किया गया. तीनों दिग्गजों का जुटान होना था.

बिनोद बाबू और शिबू सोरेन पहुंच चुके थे. चारों ओर से भीड़ जुट रही थी. कॉमरेड राय के आने का इंतजार किया जा रहा था. इसी बीच शक्तिनाथ गुरुजी से यह कह कर वहां से निकले कि केसीआर फैक्ट्री में अभी हमलोगों की यूनियन बनी है, वहां के लोगों को जुलूस में लाने जा रहे हैं. वह निकल गये. केसीआर के मजदूरों को एक ट्रक में बैठा कर खुद मोटरसाइकिल से आने लगे. सिजुआ छह नंबर के पास घात लगाये बैठे गुंडों ने उन पर बमों से हमला कर दिया, फिर गोलियां चलायी गयी. क्रांति के अग्रदूत वहीं शहीद हो गये. यह सूचना फैलते ही कोहराम मच गया. उग्र भीड़ ने हत्यारा पक्ष के तीन लोगों को काट डाला.

पूरा झारखंड बंद रहा. एके राय ने आकर उसके बाद लोगों की सभा की. जहां शक्तिनाथ का खून गिरा, कॉमरेड राय ने उस सिजुआ का नाम आजाद सिजुआ रखा. शक्ति की शहादत के बाद वहां गुंडों का शासन खत्म हो गया. शक्ति महतो की शहादत ने झामुमो व मासस दोनों को मजबूत किया. फिर अगले साल से 28 नवंबर को लाल और हरा झंडा फहरा कर श्रद्धांजलि देने की जो शुरुआत तीनों दिग्गजों (कॉमरेड राय, बिनोद बाबू व गुरुजी) ने की थी, उसका पालन अभी भी किया जाता है.

◆◆◆◆◆

11 जून 1979 : गोधर हत्याकांड : विस्थापितों का हक मांगने पर बीसीसीएल ने करायी रसिक हांसदा की हत्या

एके राय के धनबाद से एमपी बन जाने के बाद वैसे गरीब व मेहनतकश लोगों की हिम्मत बढ़ी थी, जो सामाजिक सरोकार रखते थे या फिर बहिरागत उपनिवेशवाद के प्रत्यक्ष रूप से शिकार थे, या फिर जिनमें झारखंडी भावना का समावेश था. वैसे लोगों के लिए एके राय एक सामान्य सांसद के रूप में ही थे, जिन्हें दुनिया, समाज या गांव-घर या किसी से कोई लेना-देना नहीं था, या फिर जो संघर्ष से पीछे हटता था. अन्याय के खिलाफ कुछ बोलने का साहस जुटाने वाले शख्स में से एक थे रसिक हांसदा.

पूर्वी टुंडी के केंदुआटांड़ के मूल रूप से रहने वाले थे. कंपनी के समय यहां के वैसे लोग जिनका पेट खेती से भर जाता था, वह कोयला काटने का काम करना नहीं चाहता था. लेकिन आदिवासी युवक भारी संख्या मलकट्टा के रूप में कोयला काटते थे. उसी समय रसिक हांसदा झरिया भगतडीह की लाहबेड़ा आदिवासी बस्ती में आकर रहने लगे और कंपनी की खदान में कोयला काटने लगे. वह कुरमीडीह गोधर में भाड़े के मकान में रहने लगे. उसी दौरान एक बार आंधी आने से उसके फूस का घर उड़ गया, जिसके कारण वह कई दिनों तक कंपनी के कार्य में नहीं जा सके. घर की मरम्मत कराने लगे थे. फिर कंपनी ने लापरवाही के आरोप में उसे काम पर नहीं रखा. फिर वह धनबाद कोर्ट के पास रिक्शा चलाने लगे. उसी दौरान एक अधिवक्ता को उन्होंने अपनी बात बतायी तो नौकरी के लिए कंपनी पर केस किया गया, जिसमें उनकी जीत हुई.

कंपनी ने फिर उन्हे बहाल किया. उसके बाद कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण हो गया तो वह बीसीसीएल के कुसुंडा एरिया अंतर्गत गोधर

कोलियरी में बतौर माइनर लोडर काम शुरू किया. विभागीय परीक्षा देकर वह माइनिंग सरदार बन गये. केस जीतने के कारण वह गोधर इलाके में चर्चित हो चुके थे. लोग नेताजी कहने लगे. वह आरसीएमस से जुड़ चुके थे. उधर, शिबू सोरेन आदिवासियों को जागरूक कर रहे थे. उसी दौरान गुरुजी ने उन्हें सोनोत संथाल समजा का धनबाद जिला का अध्यक्ष बना दिया. उस समय कोलियरी क्षेत्र में दो ही यूनियनें कार्यरत थीं, एक इंटक से जुड़ा राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ(आरसीएमएम) और सीटू से जुड़ी बिहार कोलियरी कामगार यूनियन.

आरसीएमएस के साथ रसिक हांसदा जुड़ जरूर गये थे, लेकिन वह यूनियन उनके स्वभाव के विपरीत थी. उन्होंने देखा कि किसान-मजदूरों व विस्थापितों की आवाज उठाने में उसके नेता सक्रिय नहीं हैं तो वह बीसीकेयू से जुड़ गये और इस तरह से एके राय और बिनोद बिहारी महतो से भी उनका संपर्क हुआ. बीसीकेयू में एक चर्चित आदिवासी चेहरा के रूप में सामने आये. उन्हें कुसुंडा एरिया का अध्यक्ष बनाया गया. उसके बाद वह मजदूरों व आसपास के ग्रामीणों की समस्याओं के खिलाफ संघर्ष करते रहे. कंपनी की आंखों का कांटा वह उस समय बन गये, जब चानक के पानी से बीसीसीएल के भट्ठे में आग बुझाने के लिए इस्तेमाल होने के बाद अवशिष्ट पानी को कुरमीडीह के खेतों में बहाया जाने लगा. इससे किसानों की फसल नष्ट होने लगी. उन्होंने बिनोद बिहारी महतो के साथ मिल कर योजना बनायी और एकजुट होकर पानी को रोक दिया. इससे कंपनी को काफी क्षति हुई. बीसीसीएल का कर्मचारी होकर उसी के खिलाफ मुखालफत कोई आसान बात थी नहीं, लेकिन गांवों में वह लोकप्रिय होने लगे थे, इसलिए कंपनी को उनसे भय भी था. उसी दौरान गोधर में बीसीसीएल कंपनी नयी खदान चालू करने की तैयारी कर रही थी.

गांव के लोग जिस सरकारी जमीन का इस्तेमाल करते थे, उस जमीन को बीसीसीएल अपना बता कर खदान चालू करने के प्रयास में थी, लेकिन इससे गांव वालों को भारी दिक्कत हो रही थी. उसका सर्वस्व छीना जा रहा था. रसिक हांसदा ने प्रबंधन को पत्र दिया कि यह जमीन गोधर के कुरमीडीह गांव के लोगों की है, नहीं दी जायेगी. लेकिन कंपनी जिद पर थी. उसके पास अपनी ताकत के अलावा प्रबंधनपरस्त यूनियन भी थी, जिसे केवल

अपनी चिंता रहती थी. वैसी यूनियनों के नेता कंपनी के दलाल के रूप में काम करते थे और उसके लिए बाहरी लठैत गुंडा का भी जोगाड़ करते थे. पुलिस भी बिकी हुई थी. इधर, रसिक हांसदा ने कहा कि बीसीसीएल जिस जमीन को जबरन लेना चाह रही है, उस पर दरअसल गांव वालों का अधिकार होना चाहिए. इसलिए मीटिंग कर उन्होंने जमीन दखल करो आंदोलन चलाने का फैसला किया. तारीख तय हुई 11 जून 1979. वहां की सभी खदानों व भट्ठा को बंद करा दिया गया.

छोटकी बौआ, बड़की बौआ, कुरमीडीह, गोधर रवानी बस्ती, भूली, धारजोरी समेत आसपास के हजारों लोग उसमें शामिल हुए. एरिया ऑफिस का जबरदस्त घेराव किया गया. जमीन पर हल चलवा दिया. उधर प्रशानिक व्यवस्था भी काफी तगड़ी थी. सीआइएसएफ के अलावा जिला के कई थानों की पुलिस वहां मौजूद हो गयी थी. दोपहर का समय होने लगा तो कुछ लोग भोजन करने अपने घरों की ओर चले गये. उसी दौरान प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी (मजिस्ट्रेट) से वहां मौजूद लोगों की नोकझोंक हो गयी. किसी ने मजिस्ट्रेट पर पत्थर चला दिया. उसके बाद मजिस्ट्रेट ने लाठीचार्ज करवा दिया.

सीआइएसएफ और पुलिस के जवानों ने नेता के रूप में मौजूद साहसी रसिक हांसदा की बंदूक के कूंदे से पिटाई की. उनके मुंह से खून आ गया. उनकी मौत वहीं पर हो गयी. लेकिन पुलिस उन्हें, हरि प्रसाद पप्पू, गुनाराम महतो, नेपाल रवानी, शंभु महतो आदि को केंदुआडीह थाना हाजत में बंद कर दिया. हाजत में ही पुलिस को मौत का पता चला. उधर, केंदुआडीह थाना में नेपाल रवानी गिर गया. घटना की जानकारी होने के बाद वहां से लोगों ने एके राय के टेंपल रोड पुराना बाजार कार्यालय और बिनोद बाबू के हीरापुर कार्यालय में जाकर सूचना दी कि रसिक हांसदा की हत्या कर दी गयी है. एके राय ने एसपी से बात कि लाश कहां है. पुलिस और कंपनी वाले छिपाना चाहते थे.

आक्रोश में हजारों लोग जुटे. लोगों ने सीआइएसएफ के बैरक में आग लगा दी. जवाब में फायरिंग की गयी. फिर जब काफी लोग जुटने लगे तो बताया गया कि पोस्टमार्टम हाउस में शव रखा हुआ है. रात दो बजे एके राय पोस्टमार्मट हाउस पहुंच गये. शव को ही गायब कर देने की योजना पर

एके राय ने पानी फिर दिया. नहीं तो उस समय यह कोई नयी बात नहीं थी. 12 जून को एके राय और बिनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन गोधर पहुंचे, युवा नेता के रूप में मथुरा महतो भी उस समय थे. पूरे बीसीसीएल का चक्का जाम कर दिया गया.

जुलूस निकला जो गोधर से उपायुक्त कार्यालय तक सट गया था. बीसीसीएल को इस आंदोलन से काफी क्षति पहुंची. फिर 13 जून को उत्तरी छोटानागपुर कमिश्नर धनबाद उपायुक्त कार्यालय पहुंचे. तत्कालीन सांसद एके राय और दिग्गज नेता बिनोद बाबू के अलावा सीएमडी बीसीसीएल भी उसमें शामिल हुए. उसमें तय हुआ कि 24 एकड़ वैसी सरकारी जमीन, जिस पर आम लोगों का कब्जा है, उसके अधिग्रहण पर भी नौकरी दी जायेगी. उसके अलावा अन्य निजी भूमि पर मुआवाज व नौकरी देने का तत्काल प्रावधान किया गया. इतिहास में पहली बार गैरआबाद जमीन के अधिग्रहण पर अवैध कब्जा वाले को नौकरी गोधर में रसिक हांसदा की शहादत की वजह से मिली.

एक भाई व एक बहन में सबसे बड़े थे

रसिका हांसदा का जन्म 14 अगस्त 1939 को मंगला मांझी के घर में हुआ था. वह एक भाई व एक बहन में सबसे बड़े थे. उनकी हत्या के बाद पत्नी रोबनी देवी को नौकरी मिली. उन्हें अनफिट कर उनके बड़े बेटे अभिराम हांसदा को नौकरी दी गयी. मंझला बेटा महादेव हांसदा झामुमो की राजनीति में सक्रिय हैं. बाकी दो बेटे मोहन और प्रेमलाल इधर-उधर काम कर परिवार चलाते हैं. उनकी पत्नी का निधन दिसंबर 2021 को हो गया. जिस जगह हत्या की गयी थी, उस जगह उनकी मूर्ति लगायी गयी है. लाल और हरा झंडा के नेतृत्व में हर साल 11 जून को उनकी याद में श्रद्धांजलि सभा की जाती है. उसमें झामुमो और मासस से जुड़े नेता आते हैं और माटी के सच्चे सपूत को याद करते हैं.

◆◆◆◆◆

18 जनवरी 1982 : सियालजोड़ी कांड : जमींदारों ने एक साथ तीन समाजसेवियों को काट डाला

धनबाद जिला का चंदनकियारी प्रखंड (अभी बोकारो जिला) में जमींदारी प्रथा और सामंतवादी सोच के खिलाफ एक से बढ़ कर एक संघर्ष हुए. बंधुआ मजदूर और खेतिहर किसान बिनोद बाबू और एके राय के नेतृत्व में एकजुट हुए. चंदनकियारी इलाके में इनके नेता हारू रजवार हुआ करते थे, जो बाद में कई बार विधायक भी बने. इसी प्रखंड के सियालोजरी गांव मूल रूप से संघर्ष और शहादत के कारण ही जाना जाता है. वर्ष 1982 में महाजनों के जुलोंसितम के खिलाफ हुए आंदोलन के दौरान एक रक्त-रंजित घटना इस गांव के लिए संघर्ष और शहादत की अमर-गाथा बन चुकी है. समूचे क्षेत्र में उस घटना को लोग आज भी शोषण के खिलाफ संघर्ष के प्रतीक के तौर पर देखते हैं. 17 जनवरी, 1982 की लगभग आधी रात की इस घटना में गांव के श्रीप्रसाद महतो, तिलकधारी महतो और जयलाल महतो शहीद हो गये थे. धोखे से तीनों की हत्या तब कर दी गयी थी. इनमें तिलकधारी और श्रीप्रसाद सगे भाई थे. उन दिनों यहां महाजनी प्रथा जोरों पर थी. सूदखोरों के चंगुल में भोले-भाले ग्रामीण फंसे हुए थे. भूख और गरीबी से ग्रसित ग्रामीण कर्ज लेने के बाद चंगुल में हमेशा के लिए फंस जाते थे. मूल-धन से कई गुणा ब्याज चुकाने के बावजूद न मूलधन घटता और न ब्याज. बताया जाता

शहीद बेदी

है कि संघर्ष और विद्रोह की शुरुआत पहली बार शिव मंदिर को बनगयिा के महाजनों से मुक्त कराने को लेकर हुई. फिर महाजनों के चंगुल में फंसी करीब 60-65 एकड़ जमीन की वापसी का संघर्ष मासस के किसान संगठन किसान संग्राम समिति से शुरू हुआ. सिंदरी के विधायक आनंद महतो समिति के केंद्रीय अध्यक्ष हुआ करते थे. श्रीप्रसाद, तिलकधारी और जयलाल महतो ने वहां आंदोलन का नेतृत्व संभाला था. उन्होंने हर हाल में गांव वालों को सूदखोरों के चंगुल से बचाने व जमीन मुक्त कराने की ठान ली थी. ग्रामीणों को गोलबंद करना शुरू किया था. इससे सूदखोर बौखला गये थे. तीनों को सबक सिखाने के लिए मौके की तलाश में रहने लगे. तिलकधारी और श्रीप्रसाद स्वभाववश किसी की मदद के लिए कूद पड़ते थे. इसी का फायदा बदमाशों ने उठाया था. लोग बताते हैं कि सियालजोरी के बगल में इजरी नदी के उस पार बनगड़िया गांव के कुछ महाजनों ने साजिश के तहत सियालजोरी स्थित पुआल के एक मकान (कुमाढाकू) में रात को आग लगा दी. इसी मकान में ग्रामीण रात को पहरेदारी और मीटिंग करते थे. खबर फैलते ही लोग आग बुझाने में दौड़ पड़े. इनमें तिलकधारी, श्रीप्रसाद और जयलाल भी थे. महाजनों के लिए हमला करने का बेहतर मौका था. आग बुझाने के दौरान ही रात के अंधेरे में ग्रामीणों पर हमला कर दिया गया. निशाने पर रहे श्रीप्रसाद और तिलकधारी पर फरसा से वार कर दोनों का सिर अलग कर दिया. खेत के मेड़ पर गिरे जयलाल को भी काट डाला.

घटना के बाद आया भूचाल, आरोपी गए जेल

घटना के बाद तो गांव में भूचाल आ गया. पुलिस और प्रशासनिक महकमे के बड़े-बड़े अधिकारियों से लेकर बिनोद बिहारी महतो, कामरेड एके राय, आनंद महतो सरीखे नेताओं का जमावड़ा लगने लगा. ग्रामीणों में जबरदस्त आक्रोश था. दबाव के परिणामतः दूसरे ही दिन आठ लोग गिरफ्तार हुए. कई लोगों ने सरेंडर किया. आठ लोगों को 20 साल की सजा हुई. 2005 में सजा काटकर निकले. बाद में चंदनकियारी के प्रमुख दुर्गाचरण महथा के विशेष प्रयासों से दोनों समुदायों में सुलहनामा हुआ. कुछ लोगों पर से मुकदमे वापस लिये गये और गांव में मैत्री का माहौल

बना. इस घटना की चर्चा सियालजोरी समेत समूचे इलाके में आज भी उतनी ही होती है. इस घटना के कुछ दिनों बाद बनगड़िया के ऋषि चौधरी की भी कुछ लोगों ने हत्या कर दी थी. उसमें सियालजोरी के सीताराम महतो, हरिपद महतो, गहनु महतो, दुबराज महतो जेल गये थे.

तीनों की स्मृति में खुला है 'श्रीतिज' स्कूल, हर साल लगता है शहीद मेला

1982 की घटना के बाद उत्पन्न तनाव के माहौल को देखते हुए ही बनगड़िया में पुलिस आउटपोस्ट खोला गया था. दूसरी ओर, ग्रामीणों ने तीनों की स्मृति में 1986 में 'श्रीतिज' स्मारक उच्च विद्यालय की स्थापना की. उसमें पहली से 10वीं तक पाई होती है. गांव में शहीद स्मारक भी बना हुआ है. हर वर्ष 18 जनवरी को तीनों की याद में शहीद मेला लगता है.

◆◆◆◆◆

बरमसिया गोलीकांड : 25 अप्रैल 1991 : युवा सामाजिक कार्यकर्ता शंकर महतो की अपराधियों ने कर दी हत्या

18 सितंबर 1969 को धनबाद बरमसिया के रेलवे कर्मचारी चुन्नीलाल महतो के घर जन्मे शंकर महतो पीके राय कॉलेज धनबाद से इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई शुरू करने के बाद समाजसेवा में जुट गये. अलग झारखंड राज्य की लड़ाई शीर्ष पर था. अलग राज्य के समर्थकों को शहरी क्षेत्र के लोग फूटी आंख से भी देखना नहीं चाहते थे. बरमसिया हीरापुर के निकट है. शंकर खेल आदि का आयोजन खूब करते थे. इलाके में एक युवा कार्यकर्ता के रूप में पहचान हो चुकी थी. झामुमो व मासस के वह समर्थक कार्यकर्ता भी बन चुके थे. इसी बीच सरकारी मद से पीसीसी सड़क निर्माण के लिए गांव के युवक मिट्टी की कटाई कर रहे थे तो कुछ बदमाशों ने मिट्टी कटाई बंद करवा दी. शंकर की अगुआई में उक्त सड़क श्रम दान कर कच्ची बनायी गयी थी. इसलिए सूचना मिलने के बाद शंकर ने जाकर काम रोकने का कारण पूछा तो विवाद हो गया. इस दौरान बदमाशों ने गोली मार कर शंकर की हत्या कर दी. यह घटना 25 अप्रैल 1991 को घटी. शव यात्रा में हजारों की भीड़ उमड़ी. शंकर तो इस दुनिया से चला गया, लेकिन वहां के लोग आज भी शंकर को याद करते हैं. एफसीआइ गोदाम के पीछे वाले मोहल्ला का नाम शंकर नगर रखा गया है. उसकी याद में खेल आदि का आयोजन होता है. हर साल 25 अप्रैल को शहादत दिवस का आयोजन किया जाता है.

11 जून 1991 बलियापुर कांड

पुलिस ने विधायक आनंद महतो पर चलायी गोली, विभूति महतो की गयी जान

कोयलांचल में बलियापुर को क्रांति की धरती कहा जाता है, वहां के लोगों का इतिहास अन्याय के खिलाफ संघर्ष का रहा है. इसके लिए लोगों को जान की कीमत चुकानी पड़ी है, जेलयात्रा भी करनी पड़ी है. उदाहरण के लिए 11 जून 1991 की घटना को लिया जा सकता है. मामला सरकारी राशन में अनियमित वितरण के विरोध का था. बड़ादाहा के युवक विभूति महतो को विरोध के कारण पुलिस की गोली का शिकार होना पड़ा था. एके राय के नेतृत्व में कोयलांचल में मासस की पहचान न केवल अलग झारखंड राज्य की समर्थक बल्कि शोषण के खिलाफ आवाज उठाने वाली पार्टी के रूप में थी.

विभूति सिंदरी के मासस के तत्कालीन विधायक आनंद महतो के कार्यकर्ता थे, जिस कारण अन्याय-शोषण के खिलाफ उठाना ऐसे कार्यकर्ता के लिए नयी बात नहीं थी. दरअसल उस समय ग्रामीण हाटों में बिहार सरकार की ओर से सस्ती दर पर सामान बेचने के लिए मोबाइल राशन दुकान लगती थी, जिसका नाम ही था अपनी दुकान. एक बड़ी बस में सामान लाकर लोगों के बीच प्रशासन की मौजूदगी में सामान का वितरण किया जाता था. 11 जून 1991 को भी बलियापुर में हटिया थी. अपनी दुकान भी लगी थी. राशन का वितरण किया जा रहा था. सीधे-सादे लोग पंक्ति में खड़े होकर सामान ले रहे थे. विभूति महतो भी उनमें से एक था. लेकिन पंक्ति में बलियापुर के पुलिसकर्मी खड़ा होकर राशन लेने लगे थे.

एक बार नहीं, बार-बार यही काम दोहराया जा रहा था. इसका विरोध विभूति ने किया, कहा कि राशन तो आम जनता के लिए है, आपलोग क्यों गरीबों का हक मार रहे हैं. उसके बाद वह अकेले हंगामा करने लगा तो पुलिस को लगा कि मामला बिगड़ जायेगा तो विभूति महतो के साथ हाथापाई कर दी. उसके बाद इसकी सूचना जब बलियापुर के अन्य लोगों को हुई तो विधायक आनंद महतो के नेतृत्व में लोग जुटे और जबरदस्त विरोध करने लगे. भले ही यह संघर्ष सीधे तौर पर झारखंड अलग राज्य का संघर्ष नहीं था, लेकिन अलग राज्य विरोधी मानसिकता वाले अधिकारी-पुलिस अलग राज्य समर्थक दलों व उनके समर्थकों को घृणा करते थे. यहां के लोगों को बहुत अधिक महत्व नहीं देते थे. उसी मानसिकता के शिकार पुलिस ने भीड़ पर गोली चला दी.

आनंद महतो विधायक को निशाना कर गोली चलायी गयी, लेकिन विभूति महतो अपने नेता को बचाने के लिए खुद सामने आ गये और गोली उनके सीने पर लग गयी. आमझर गांव के धनु प्रमाणिक के अलावा कई अन्य लोग भी घायल हो गये थे. आनंद महतो संयोग से बच गये, लेकिन विभूति की जान चली गयी. फिर क्या था, काफी बवाल हुआ. पुलिस पर लोगों ने हमला कर दिया. इस बीच आनंद महतो को हिरासत में लेकर बंदूक के कूंदे से उनकी पिटाई की गयी. वह जख्मी हो गये. सूचना पाकर एके राय पहुंचे और मोर्चा संभाला. पूरे बिहार में इस घटना की चर्चा हुई. अगले दिन धनबाद बंद रहा. बिहार विधानसभा में भी मामला उठा. सरकार ने कथित रूप से जांच कमेटी बनायी. आनंद महतो समेत मासस के दर्जनों कार्यकर्ताओं पर पुलिस पर हमला, सरकारी कार्य में बाध डालने, हथियार छीनने जैसी गैरजमानतीय धाराओं में मुकदमा किया गया. आज भी पुलिस जुल्म के खिलाफ उक्त घटना को याद किया जाता है और 11 जून को बलियापुर में अवस्थित विभूति महतो की प्रतिमास्थल पर मासस की ओर से श्रद्धांजलि सभा आयोजित की जाती है. दो दिवसीय मेला भी लगता है.

◆◆◆◆◆

7 जुलाई 1991 : प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए गयी जीवलाल महतो की जान

तोपचांची प्रखंड के करमाटांड़ गांव में सात जुलाई 1991 को 36 वर्षीय जीवलाल महतो की हत्या किसी गैरझारखंडी ने नहीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने ही इसलिए कर दी कि जीवलाल का संबंध झामुमो, बिनोद बाबू और शिबू सोरेन से हो चुका था. जमींदारी प्रथा, सूदखोरी, जंगल की कटाई व पत्थर के अवैध खनन के खिलाफ वह बराबर मुखर थे. सामाजिक गतिविधियों में सक्रियता के कारण इलाके में जीवलाल लोकप्रिय हो रहा था. सूदखोरों व वन माफियाओं को लगने लगा था कि जीवालाल के रहते उनके अवैध धंधे चल नहीं सकते. इसलिए सात जुलाई को जब वह अपने घर की ओर जा रहे थे तो उसकी हत्या टांगी मार कर कर दी गयी. उसके बाद लोगों में इस तरह आक्रोश बढ़ा कि एक आरोपी को भी लोगों ने बाद में मार डाला. अभी हर साल झामुमो जीवलाल का शहादत दिवस मनाता है.

◆◆◆◆◆

खानूडीह हत्याकांड : 26 जून 1993 : शनिचर महतो ने बालू माफियाओं के खिलाफ लड़ते हुए दी जान

बाघमारा कोयलांचल में बालू माफिया के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाले नेता शनिचर महतो की हत्या माफियाओं ने 26 जून 1993 को कर दी थी. शरीर पर सबल आर-पार कर उनके शव को खानूडीह के जंगल में एक पेड़ पर टांग दिया था. काफी खोजबीन के बाद परिजनों को उनका शव हत्या के तीन दिन बाद मिला था. हत्या के विरोध में लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा था. शनिचर महतो खानूडीह पंचायत के उजरियाडीह बस्ती का निवासी था. उनका जन्म 5 अप्रैल 1959 को गरीब परिवार में हुआ था. बरोरा क्षेत्र की मुराइडीह कोलियरी में वह फिटर पद पर कार्यरत थे. नौकरी करने के दौरान शनिचर महतो श्रमिक नेता के रूप में उभरे. मजदूरों के शोषण के विरुद्ध आवाज बुलंद की. उभरते श्रमिक नेता के रूप में पहचान बढ़ने से शनिचर महतो गांव का विकास करने में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने लगे.

युवाओं को रोजगार दिलाने के लिए बालू माफियाओं के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया. उसके बाद जमुनिया नदी से अवैध रूप से बालू उठाव बंद हो गया. इसी बीच बालू माफियाओं ने एक षड्यंत्र के तहत शनिचर महतो को ड्यूटी से घर लौटने के दौरान भीमकनाली मांझी टोला के पास हत्या कर दी. अनुकंपा के आधार पर शनिचर महतो की पत्नी रतनी देवी को ब्लॉक दो क्षेत्र में नौकरी मिली. शहीद शनिचर महतो के चार पुत्री एवं एक पुत्र है. सभी शादीशुदा हैं. दस साल पूर्व मां के बदले शहीद के पुत्र खेमलाल महतो को बीसीसीएल में नियोजन मिला है. खानूडीह पंचायत में शहीद शनिचर महतो स्मारक समिति का गठन किया गया. समिति के नेतृत्व में पहली बार खानूडीह बसंती चौक पर शनिचर महतो का शहादत दिवस मनाया गया. पूर्व मंत्री जलेश्वर महतो के मद से बसंती चौक पर शहीद शनिचर महतो स्मारक क्लब का निर्माण किया है. वहां पर प्रतिमा का अनावरण किया गया है.

◆◆◆◆◆

एक गुमनाम शहीद : कृष्णा प्रसाद महतो

तारीख थी 14 अक्तूबर और साल था 1993. शीला देवी की गोद में था एक ढाई साल का लड़का और कोख में पल रहा था छह माह का शिशु, आंगन में पड़ा था पति का शव. परिजन रो-धो रहे थे. जवान उम्र में विधवा होने का दर्द शीला को सता रहा था. घर में कमाने वाला कोई नहीं. एक जन्मांध देवर और बूढ़ी सास ही सहारा. परिजनों के क्रंदन से इलाका दहल रहा था.

एक क्रांतिकारी का तोपचांची इलाके से चले जाने का गम सभी को था. जो लोग नहीं जानते हैं, उन्हें लग रहा था कि यह साधारण मौत है, अस्पताल में हुई है, लेकिन सच यह था कि झारखंड आंदोलन के दौरान पुलिस प्रताड़ना के शिकार बने कृष्णा प्रसाद महतो को परिजन व चिकित्सक नहीं बचा पाये. बिनोद बिहारी महतो के अतिप्रिय युवक मानटांड़ निवासी कृष्णा प्रसाद ने झारखंड अलग राज्य के आंदोलन में न केवल खुद को समाहित कर लिया था, बल्कि घर-संसार का ख्याल किये बगैर अपने इलाके में आंदोलन का नेतृत्व भी किया.

अपनी पत्नी के साथ कृष्णा प्रसाद महतो व गोद में जयराम महतो

1958 को जन्मे नौजवान कृष्णा ने पार्टी द्वारा घोषित आर्थिक नाकेबंदी के दौरान गोमो

जंक्शन व जीटी रोड तोपचांची में कार्यक्रम को सफल किया. इसी दौरान उन्हें पुलिस के लाठीचार्ज का सामना करना पड़ा था. उनके माथे पर चोट लगी थी. खुद के प्रति लापरवाह रहने वाले जिद्दी व लड़ाकू स्वाभाव के कृष्णा ने उस समय उचित इलाज नहीं कराया. वह एक निर्भीक, साहसी युवक के रूप में अपनी पहचान बना चुके थे.

झारखंड मुक्ति मोर्चा के बैनर तले हुए आंदोलनों में कई बार जेल भी गये. जब पुलिस की लाठियां चली थी तो उसका भी नेतृत्व उन्होंने सहजता व निर्भीकता के साथ किया. उनकी मां झूपड़ी देवी जो आज जीवित हैं; याद करते हुए कहती हैं कि एक रात कृष्णा प्रसाद महतो खून से लथपथ माथे पर पट्टी करते हुए घर आया. माता-पिता तथा घर वालों ने समझाया कि आज के बाद से तुम्हें आंदोलन में भाग नहीं लेना है. पर वह कहां मानने वाले थे.

अलग झारखंड राज्य करने का जुनून सर से पांव तक हिलोर मार रहा था. उनका जख्म भरा भी नहीं था और वह पुनः आंदोलन को गति देने के लिए सड़क जाम के कार्यक्रम में निकल पड़े. वहां पुनः पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किया गया. उस लाठीचार्ज में कृष्णा प्रसाद महतो को ठीक उसी जगह चोट लगी, जहां आर्थिक नाकाबंदी के दौरान लगी थी. जख्म और गहरा और दोगुना हो गया. उन्हें धनबाद व गिरिडीह जिला के कई अस्पतालों में भर्ती कराया गया; जहां उनका इलाज चला. परंतु अंततः वह जिंदगी की जंग हार गये.

आंखों में अधूरा सपना अलग झारखंड राज्य का लिये संसार को अलविदा कह गये. बताया जाता है कि चोट ही उनकी मौत का कारण बनी. स्व कृष्णा प्रसाद को राज्य सरकार ने झारखंड आंदोलनकारी घोषित किया है. पेंशन उनकी पत्नी पाती है. उनकी शहादत के तीन महीने बाद शीला ने दूसरे बेटे को जन्म दिया.

भाषा-खतियान को लेकर चर्चित हुए जयराम के पिता थे कृष्णा प्रसाद महतो

जिस समय स्व भगतु महतो के ज्येष्ठ पुत्र कृष्णा प्रसाद महतो का निधन हुआ, उनका बड़ा पुत्र जयराम महतो ढाई साल का बच्चा था.

झारखंडियों के प्रति प्रेम, अन्याय के खिलाफ संघर्ष और सत्ता के खिलाफ मुखालफत करने का जज्बा जयराम को विरासत में मिला है.

आज पूरे झारखंड में झारखंडी भाषा व खतियान को लेकर चर्चित हुआ यह युवक वही जयराम है, जो अपने पिता का शव जब आंगन में पड़ा था तो भूख से बिलबिला कर मां को बार-बार कह रहा था माय हामरा पावरोटी किनाय दे, भूख लागोल्हो (मां मुझे पावरोटी खरीदवा दो, भूख लगी है). फिलहाल जयराम झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति के संस्थापक अध्यक्ष हैं, जबकि इसके छोटे भाई श्रीराम महतो युवा बेरोजगार है. जयराम ने पारिवारिक स्थिति को देखते हुए छोटे भाई को शादी करवा दी है. ननिहाल मुनीडीह के आमाडीह में है.

पिता के निधन के बाद परिवार की परवरिश ननिहाल से हुई. नाना निसपती महतो का भी निधन हो चुका है. निसपती को भी पुत्र नहीं है. शीला और चंपा दो बेटियां ही हैं. चंपा की भी शादी तोपचांची के ही सिंहडीह में हुई है. घर में जयराम के जन्मांध चाचा सेवाराम महतो हैं, दादी अभी जीवित हैं.

◆◆◆◆◆

26 मई 1994 : गुरुजी के पोखरिया आश्रम के रखवाले श्यामलाल मुर्मू की हत्या

आंदोलन के दिनों दिशोम गुरु शिबू सोरेन टुंडी के पोखरिया में आश्रम बना कर संगठन को मजबूती देने में लगे थे तो उस समय श्यामलाल मुर्मू उनके साथ साये की तरह रहे. फिर जब 1977 में गुरुजी टुंडी विधानसभा का चुनाव हार गये तो संताल परगना को अपना कार्यक्षेत्र बनाया. उस दौरान श्यामलाल मुर्मू को आश्रम की जिम्मेवारी सौंप दी. टुंडी का सटा इलाका है दुमका लोकसभा क्षेत्र. इसलिए गुरुजी का आना-जाना बराबर यहां रहा. आश्रम में ही रह कर श्यामलाल सामाजिक गतिविधियों में जुड़े रहे. झामुमो के संगठन व गुरुजी के विचारों को आदिवासियों में देते रहे. इसी बीच 26 मई 1994 को पश्चिमी टुंडी के मछियारा गांव से वह पंचायती कर लौट रहे थे तो नक्सलियों ने उनकी हत्या कर दी. इस घटना के बाद वैचारिक रूप से वर्ग संघर्ष को समर्थन करने वाले लोगों ने भी नक्सलियों की खूब आलोचना की. पोखरिया में श्यामलाल की याद में शहीद वेदी बनायी गयी है, जहां लोग पहुंच कर उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं. उनका पूरा परिवार अभी भी आश्रम में ही रहता है. हाल के दिनों में हेमंत सरकार ने पोखरिया आश्रम का जीर्णोद्धार करने का फैसला किया है.

◆◆◆◆◆

10 जून 1997 : बलिहारी में मजदूर-किसानों के नेता राजेश आनंद महतो की हत्या

बिनोद बाबू के निधन के बाद कोयलांचल में उनके अनुयायियों में सबसे बड़े नेता के रूप में उभर कर आये मथुरा प्रसाद महतो. (पूर्व मंत्री व विधायक टुंडी). उनके साथ कंधा से कंधा मिला कर रहने वाले थे पुटकी के छोटे से गांव बलिहारी के रहने वाले राजेश आनंद महतो. राजेश मासस व झामुमो दोनों के संघर्षों के साथी रहे. एके राय के नेतृत्व वाली बीसीकेयू की बलिहारी शाखा के सचिव भी रहे. मजदूर आंदोलनों में अहम भूमिका निभायी.

पुटकी इलाके में माफिया विरोधी आंदोलनों व बीसीसीएल में शोषण के खिलाफ हुए संघर्ष में अहम भूमिका निभाने लगे तो इलाके में लोकप्रिय भी हुए. लेकिन जमीन विवाद में 10 जून 1997 को उनकी हत्या गोली मार कर रात को अपराधियों ने कर दी. उनके निधन से कोयलांचल ने शराब, सूदखोरी व गरीबों के अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाले एक समर्पित कार्यकर्ता खो दिया.

हत्याकांड में खुद मथुरा प्रसाद महतो ने गवाही दी. उसके बाद सभी आरोपियों की सजा हुई. वह अपने पीछे पत्नी काजोली देवी व तीन पुत्र व एक पुत्री छोड़ गये थे. सभी बच्चों की शादी हो चुकी है. हर साल पुटकी में 10 जून को शहादत दिवस मनाया जाता है, जिसमें लाल और हरा झंडा के लोग शामिल होकर श्रद्धांजलि देते हैं.

◆◆◆◆◆

नारायण चंद्र मंडल

पिता : स्व. नगेंद्र नाथ मंडल (कृषक)

माता : स्व. भवानी देवी (गृहिणी)

ग्राम : कुलबेड़ा

पोस्ट : कल्याणपर, पिन 826004

थाना : बरवाअड्डा, धनबाद

मोबाइल : 9931127315, 8709784749

e-mail : jharkhandandolankari92@gmail.com

छात्र जीवन से ही अलग राज्य के संघर्ष में रहे. बिनोद बाबू के कहने पर आइटीआइ धनबाद में स्थानीय छात्रों को संगठित किया. उसी दौरान एके राय के संपर्क में आये. 90 के दशक में सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों में खुद को समाहित किया. अलग राज्य के आंदोलनों और बरवाअड्डा में बिनोद बिहारी महतो की मां के नाम पर निर्मित मंदाकिनी उच्च विद्यालय, बड़ाजमुआ के निकट शराब फैक्ट्री खोले जाने के विरोध में हुए आंदोलनों में कई बार गिरफ्तार हुए. पुलिस प्रताड़ना का शिकार बने. एके राय के कहने पर 1995 में पत्रकारिता शुरू की. बरवाअड्डा से बतौर संवाददाता धनबाद रश्मि के लिए समाचार संकलन किया. फिर 'चमकता आईना' का कार्यालय बरवाअड्डा में (1999) बना तो वहां रिपोर्टिंग शुरू की. बाद में बतौर उपसंपादक काम किया. इस दौरान कोयलांचल में पत्रकारिता के गुरुजी कहे जाने वाले ब्रह्मदेव सिंह शर्मा के संपर्क में आये. चमकता आईना बंद हो जाने के बाद 'बिहार ऑब्जर्बर' धनबाद में बतौर उपसंपादक 2003 तक कार्य किया. उसके बाद से 'प्रभात खबर' में बतौर वरीय उपसंपादक कार्यरत. राज्य सरकार द्वारा झारखंड आंदोलनकारी के रूप में सम्मानित.

ISBN 81-958957-6-X

9788195895762

₹ 300/-